

ऊपर, मोई अचिन्त्यो नमस्तो पञ्ज्यो जायक ॥
 स० ॥ ८६ ॥ अजना कतं सुण सुन्दरी, मांहेरो
 बाप छे चतुर सुजाणक । माता विचक्षण अति
 घणी, माई छे मांहेरा वणा बुद्धिवानक ॥ पिण
 पाप छे मांहेर अति घणा, तं मन मांहे मूल न आणै
 रोसक । आपा पुरव पुण्य कीधा नही, ए सहु
 आपणे करमा रो दोषक ॥ स० ॥ ८७ ॥ हिवे
 गिरवर गुफा स्तामो जोवतां, तिहां दीठो छे मुनिवर
 ध्यान वर धीरक । निर्दोष आचार पालता, तप
 जप स्वप करी शोपव्यो शरीरक ॥ अवधि ज्ञाने
 करी आगला, अजना जाय भेट्या तसु चरणक ।
 अति दुःख मांहे आनन्द हुवो भव भव होज्यो
 स्वामी तुम तणो शरणक ॥ स० ॥ ८८ ॥ हिवे
 हाथ जोडी अजना कहे, पूर्व किस्सुं कियो कर्म
 चण्डालक । किण करमां स्वामी मांहेरे इण भव
 मे आयो अणहुन्नो आलक ॥ सासरा सूं काढी
 मो भणी, पीहर राखी नही घर मांहेक । आप
 कृपा करो मो ऊपर सगलाई सम्बन्ध देवो नी

सुणायक ॥ म० ॥ ८६ ॥ द्विवे माधु कहे बाई
 सांभलो, पाछेले भव रो कहे विग्ननक । आं
 जोक हुन्ती लिखजावती, आवक धर्म पालती रु
 खंतक ॥ मिदग्ध पुत्र थो तेहने, ते चोरी पड़ोमग
 ने संपियो तेहक । तेरे बडी बांगी जोक टलवली,
 दु.ख वणो धरती मन सांयक ॥ म० ॥ ८७ ॥
 बांगी जोक रे नियम हुन्तो, जो माधु हुवे निग
 नगर मन्तारक । तो बादियां पहली तेहने. अब
 पाणी रो हुन्तो परिहारक ॥ विलाप कीथो निग
 अति वणो, जब ते पुत्र पाछो दियो तानक ।
 अन्तराय पडी ठरशण तणी निगमं वंध गई बां
 कनीं रो गमक ॥ म० ॥ ८८ ॥ काल कितोएक
 बीतां पछे साधव्यां आई निग नगर मन्तारक ।
 ते बाणी सांभल तेहनी, वेगम मं लीथो मजम
 नारक ॥ तपन्या करी अणशण कियो, आलोया
 विना पटलो फेरक । कीथा हो कर्म न छुटिये,
 तेरे बडी रो हुवा वर्ष तेरक ॥ म० ॥ ८९ ॥
 मिदग्ध पुत्र ते तप करी. तुक्त कुखे आय लियो

चिन्तवे चित्त मभ्भारक । कहे केसरी लुटो काया
हरे, पिण मांहरो धर्म न लेवे लिगारक ॥ म० ॥
६६ ॥ द्विवे वमन्तमान्ना इम उच्चरे, कहे अन्नना
महा सती छै निग्धारक । मोटे रे गच्छ हेल
करे, कोई देव देवी आवो इणवारक ॥ कोठे
सज्जन हुवे अन्नना तणो, तो पिण वेग मं आवज्यो
धायक । उपमर्ग उपनो अति वणो, वमन्तमान्ना
बोले छै एहवी वायक ॥ म० ॥ ६७ ॥ निण
वन मांहि व्यन्तर यक्ष रहें ते वारे जोजन तणो
गवचालक । ते यक्ष कहे यक्षणी भणी, आपणे
जरणे आवी दोय वालक ॥ निण मं रक्षा कां
आपां एहनी, इम चिन्तव शार्दलो रूप कियो
तेहक । निण शार्दला मिह ने पराभवी, साटी
दियो दूर वन ने छेहक ॥ म० ॥ ६८ ॥ साहाज
देई अन्नना नली, देवता बोले छै एहवी वायक ।
मतियां माहि तं निरमली, थांग गुण पूरा मोहं
कथा नही जायक ॥ द्विवे कलंक उतरसी तांहगे
कुणले आवसी पवन कुमारक । बले मामो वारे

इला जावनी, न निशिन री ॥ १९ ॥ वन मकरक
 ॥ स० ॥ १९ ॥ पणो वन सुणो देवता वणो,
 वन माटे दोन गहे अमोरक । वन कल कूल
 निहा व वरे जिन धर्म वणो नगो लोदे रे लोहक ॥
 सुत वन पाहे छै निरमला अतोनिश करे छै जिन
 वणो जायक । वरदा करे अने आकरी अशना
 काटे छै सानिया पायक ॥ स० ॥ १०० ॥ नैव
 मास पूर अष्टमी, पुष नक्षत्र आयो ओकारक ।
 रान रा पाडला पोहरमा, अशना जननिपो हणुमन्त
 कुमारक ॥ अशुनी टालो निण अवसरे दासी
 ने कहे अशना आमक । महोदव करतो कुण
 एहना, कटक मे गयो छै आपणो स्वामक ॥ स० ॥
 १०१ ॥ चांदणो रान एनम वणो अशना कर
 धर बैडी छै नन्दक । चटल चपल सुहामणो,
 दीडां पामे घणो हरष आणदक । हरषे बोलावे
 रे मायडी, कुंवर वणो अजै छै लघु बेसक । तारा
 ने ताके रे बालुडो, जाणे के नंद ने लेष अपेटक
 ॥ स० ॥ १०२ ॥ हिबे मामो अशना वणो,

सुरसेन राजा तेहनो नामक । देशान्तर जाय
 पाछो बल्यो. आकाशो विमान थांभ्यो निग
 ठामक ॥ वन मांहे दीठी दोय बालिका, अचर
 पामी ने मोकली नारक । जय मामी अञ्जना ने
 ओलम्बी, नैना में छुटी छै जल तणी धारक ॥ स०
 ॥ १०३ ॥ गले लागी बिहु बणी आरझी, एले
 मामो आयो तत्कालक । अञ्जना ओलम्बने मिल्यो,
 अञ्जना रोवे छै आंसूड़ा रालक ॥ डील सं
 अलगी हुवे नहीं, बालक जिम धरी रही गीठक ।
 जय ग्वाला में बैसाडी धीरपे, चाई हिवे पूसं
 तुम तणी आजक ॥ स० ॥ १०४ ॥ हिवे अञ्जना
 कहे मामा भणी, माये आयो मांहे अणहुनो
 आलक । निग सं काढी सामरा थी मो भणी,
 पीठर में किणटि न कीधी संभालक ॥ बले आग
 देवाड़ी राय बरो बरे, निग कारण हं आई स
 मकारक । मामाजी पाप पोते बणा. कण्ठा न
 कीधी मांढरी किणटि लिगारक ॥ स० ॥ १०५ ॥
 हिवे बैस विमाण में सचत्वा, अञ्जना ने गोद में

हनुमन्त कुमारक । ठीठो तिण मोल्यां रो भुमवो,
 रुद्री ने चञ्चल दीधी छे फालक ॥ तोडी मोल्यां
 लड मूई पट्यो, अञ्जना मुरझा पामी तिण वारक ।
 तय मामो लेई पुत्र भणी, आण मेल्यो अंजना
 हिये पासक ॥ स० ॥ १०६ ॥ बांह झाली पैठी
 करी, मामो बोले तिहां बोल रमालक । कहे
 देश परदेश मे हू कियो पिण एहवो कटे ही न
 देख्यो बालक ॥ एहवा बचन कहै अंजना भणी,
 आयो छै हनुवाटण मभारक ॥ करे महोच्छव
 अति घणो, नाम दियो हनुमन्त कुमारक ॥ स०
 ॥ १०७ ॥ अञ्जना हनुमन्त इहां रहे, पवनजी
 पहुचा छै लंकापुरी जायक । तिहां रावण राजा
 सूं मुजरो कियो जब रावण बोले छै एहवी वायक ।
 पवनजी आद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो
 मेलाणक । वरुण राजा ने हटाय ने, वर्तावज्यो
 तिहां मांहरी आणक ॥ स० ॥ १०८ ॥ हिवे
 मेघपुरी दल संचख्यो, साहसा वरसे तिहां वाणना
 मेहक । पिण पवनजी पग नहीं चातरे, सन्ने

मांहि मनुष्य मुवा वणा तेहरु ॥ वर्ष दिवस
 विग्रहो रथो, पछे मांहो मांहे मेल कियो ताहरु ।
 आण वरतावी रावण तणी, पवनजी हरष पाग्यो
 मन मांहरु ॥ स० ॥ १०६ ॥ द्विवे कटक आगो
 रे लङ्का भणी, राजा रावण ने कियो जुहारु ।
 जब रावण बस्त्र बागा आपिया, बले आप्या तै
 शोभता वणा शिणगारु ॥ केई एरु दिन
 राखियां पछे, रावण सीम दीधी तिण वारु ।
 पवनजी आठ राजा भणी, ते आया छै निज नगर
 मभारु ॥ स० ॥ ११० ॥ पवनजी कुशले घर
 आविया, मात पिता तणे लाग्या छै पायु । जेठे
 माता भोजन करे, तेठले अन्नना ने घर जायु ॥
 मुनां रे महल मालिया देविया, कुरले छै तिहां
 अति वणा कागु । परब बीनी ते पात काना
 मुणी जब पवन रे लागी छै अति वणी आगु ॥
 स० ॥ १११ ॥ द्विवे पवनजी तिहां थी निरुज्या,
 माता पिता आई लारे तिण वारु ॥ बांढ काली
 पवन ने उम रुहे द्विवे नो जिमो च्यारु ही आठ-

रात । हूँ पवन ने छाया मगतावन, पवनजी
 साँसो न जोड़े रे नामक । गाँवोवाय माना
 दने, गया नै राजा मणिरा ने नामक ॥ स० ॥
 ११० । हिवे माना रोवे हूँ लंकने काम विमासी
 नही कीरो रे पटक । हल भणी जन नहीं
 मोकलया अझना ने नही गली रे गेटक ॥ काची
 रे तुल्लि नारी नणी, केतुमती गणी बिल्लवे एमक ।
 भिग न हूँ जीवन भणी नै पापणी कीधो अनि
 सुणो कामक । स० ॥ ११३ ॥ हिवे पवनजी
 करे मन्त्री भणी, हूँ सासु सुहरा सुं किन कहं
 प्रणामक । माँहरी माना नेहने पराभवी, निण
 सुं सासुरा ने गई माँहरी नामक । हिवे जंचो
 हूँ किन बोल्सुं, हिल निल ने धान कहंला
 केमक । बले अझना राणी सो उपरे, किण बिध
 धरेली हरष ने प्रेमक ॥ स० ॥ ११४ ॥ मन्त्री
 करे सुणो कुमरजी, आपां तो गया था कटक
 मभारक । लारे सुं काडी अझना भणी, आपरो
 दोष नहीं है लिगारक ॥ इम करे पवन कुमर

भणी, चाकर मेलियो नगर मभारक । कहे पवनजी
 आप पधारिया. जय अञ्जना ने पीहर हुई चिन्ता
 अपारक ॥ स० ॥ ११५ ॥ महिन्द कहे हं महा
 पापियो, में दुष्ट अकारज कीथो रे जाणक ।
 हाजरिया लोक मांढरे घणा. पिण डाल्यो नहीं
 कोई चतुर सुजाणक ॥ सीख नी बात कोने नहीं
 कही, मनमां मांढरे उपनी बहु रीसक । नरक
 नियाणो में बांधियो हिवे दुष्ट कर्मा थी केम
 हूटीसक ॥ स० ॥ ११६ ॥ हिवे पवनजी आप
 पधारिया, मांभल मासु पड़ी शिर भालक । पेट
 कटे दोनं हाथ सं, उदर आधान किहां गई
 बालक ॥ मन मांढे दुःख वेदे घणो, जाणै कोई
 जोर सं लागै है बाणक । अञ्जना नो दुःख वेदं
 घणो, निम २ बोले है रोवनी बाणक ॥ स० ॥
 ११७ ॥ साथे सेन्या लेई चतुरङ्गिणी, सुसगे
 जंचाई रे माहमो जी जायक । बांह पमारी दोनं
 मित्या, दोनां रे दुःख घणो मन मांयक ॥ जब
 पवनजी कहे राजा भणी, तुम पुत्रीने कादी हम

नगी मायन ॥ ११५ ॥ नगी मन मायन ॥ ११६ ॥
 पाने राजा न वेगयो नगी जायक ॥ स० ॥ ११७ ॥
 विवे पवनजी निज घर आगने मरुनिया मरुन
 इगने बगयो तानक । वनि चोरा नन्दन घर-
 निया गलण वन पनिया प्रधानक ॥ पर
 भोजन मरुप आगने पनिया भोजन विविध
 पकवानक । पिण पवनजी कवो भरे नगी,
 अङ्गना डपर लाग रखो अन्नर ध्यानक ॥ स० ॥
 ११८ ॥ पिण पवनजी मन माहि चिन्तवे, जो
 पुत्र जायो हुवे तो बधाई जी थायक । वसन्त-
 माला पिण दिसे नही, एम विचार करे मन मांहक ।
 अंजना री मा तिण अवसरे, चिन्ता मन मे करे जी
 अपारक ॥ कहे हं तो पापणी मोटकी, मै अंजना
 ने न राखी घर मभारक ॥ स० ॥ १२० ॥ हिबे
 सालानी सुता रे नाहनडी, तिण ने पवनजी लीधी
 छै खोला मभारक । कहो धांरी भुवाजी स्यूं
 करे, ते रुदन करी ने घोली तिणवारक ॥ माता
 पिता ने बंधव सहु, सगलाई कीधो छै कर्म चण्डा-

लक । आंगन न राखी रे अथ बड़ी कलंक मुणी
 ने काढी ननकालक ॥ स० ॥ २०१ ॥ एहवा
 वचन मुणी बालिका नणा. पवनजी दूर फेंक दिये
 छै थालक । महेन्द्रगय आय पाये पड़्यो. तब
 मन्त्री कहे नं. मूर्खे गिंवारक ॥ कलक गी मुन
 कीयी नहीं, गिंजर विचारियां काढी रे बालक ।
 अकल भ्रष्ट हुई नाहगी. कटुक वचन कथा निग
 वारक ॥ स० १०२ ॥ द्विवे प्रहसन मन्त्री के
 पवनने, बाले छै सुख थी एहवी वायक । उगे
 स्वामी किम बैसी गद्या, अंजना नी ग्वर कगं
 वेग जायक ॥ मई छै के अथवा जीवनी, मुख
 दुःख भोगवे छै किण ठामक । एहवा वचन मुनी
 मन्त्री नणा, अंजना ने दोनं जोवा छै नामक ॥
 स० ॥ १०३ ॥ द्विवे महेन्द्र राजा पिण मांये
 ह्वो, बटे प्रह्लाद गय आयो छेई साथक । बं
 माना पिण आर्ट छै गेवनी. मांसल पुत्र पर
 मांजरी बानक ॥ अन्हें ग्वर करग्यां अंजना
 नणा. थे तो जावो निज नगर मभारक । नग

गले ताज तोरी मणि पहने नही मानी राग
 लिगारक ॥ स० ॥ १२२ ॥ तब अनेक विमान
 चलाविया, बटे भग्ना परस फेला समतारक ।
 राम राम जोड़े अजना मणी, सुगम में मोटे हैं
 पवन कुमारक ॥ जो सती लाने तो हूँ जीवम,
 नही तो अगले करदेंसं कालक । देज परदेज
 फिरता धका, अजना सुनी हैं निज मोसालक ॥
 ॥ स० ॥ १२५ ॥ जब पवनजी चाल्या हैं आगले,
 पीछे आवे हैं मगलो जी साधक । जब बसन्त
 माला पवनजो ने ओलख्या, कहें अजना ने आव्यो
 हैं तुम नणो नाथक ॥ जब अंजना आय पाये
 पड़ी खोला मे बैसाणो हनुमन्त कुमारक ॥ स०
 ॥ १२६ ॥ बसन्तमाला आय पाये पड़ी, हीयासूं
 भीड़ी पवन कुमारक । कहो बाई दुःख तुम किम
 सहा, किम सही मांहरी माय नी मारक ॥ किम
 करो वनफल घीणिया, किम करी रही वन मभा-
 रक । किम करी काल गमावियो, किम करी
 पाव्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १२७ ॥ स्वामीजी

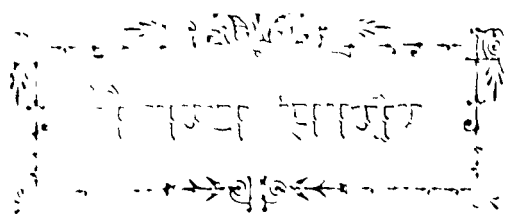
आप कटक में पधारिया, सामरे पीहर म्हांने
 दियोजी छेहक । निणसुं करी म्हें वनमें गई बन
 फल भागि ने काहिया डिहक ॥ तिहां मोटा
 मुनिवर भेटिया, बले देवता कीधी छै हम नगी
 मारक । गन दिवस धर्म पालनां मामो छे
 आयो दण नगर मभारक ॥ स० ॥ १०८ ॥ त्रिवे
 वसन्तमाला अने अंजना, पवन ने बोले छै मधुरी
 वाणक । आप किम कटक में मंचल्या किम मद्या
 राजा वरुण ना वाणक ॥ जब पवन कुमार इमदी
 कहें में वरुण राजा सुं युद्ध कियो तेथक । जब
 याव लागा ने साजा हुवा जीत फने कर आयो
 दूँ गथक ॥ स० ॥ स० ॥ १०९ ॥ त्रिवे अंजना
 मती निण अवसरे, मामु सुमरा ने लागी जी
 पायक । जब सुमरो आंग्यां आंसु भरे, मैं कलंक
 देह ने कीधी जी अन्यायक ॥ अंजना पाय नली
 कहें घापजी केस करो छो चिलापक । टोप नहीं
 छै तुम नगी, पोने छै मांहरें बोहला पापक ।
 स० ॥ ११० ॥ बले माता पिता सुं जाय निर्द

माई भोजायां सं अति घणों नेटक । माना पिता
 ते रोवे घणा, अजना मात पिता ने कते छै नेटक ॥
 धे चिन्ता करो मिण कारणे, पांते न मांरे
 पोला पापक । निण कारणे मै दुःख भोग्या,
 मूल न करज्यो कोई सन्तापक ॥ स० ॥ १३१ ॥
 तिवे एणुपाटन धी चालिया, अजना ने मामे आपी
 घणी आधक । साधे आयो पहुंचायवा, चतुरङ्गणी
 सेन्या लेई साधक ॥ साधे तो परजा अति घणी,
 रतनपुरी आया मोटे मण्डाणक । उछरंग मन
 मांहे अति घणो घर घर वरल्या छै कोइ कल्या-
 णक ॥ स० ॥ १३२ ॥ तिवे सीख देई मामा
 भणी, अजना सती पवन कुमारक । सुख भोगवे
 संसार ना, मांहे मांति लग रही प्रीत अपारक ॥
 काल कितोक गयां पछे, राजा राणी खारो जाण्यो
 संसारक । राज देई पवनजी भणी, मोटे मण्डान
 लीधो संयम भारक ॥ स० ॥ १३३ ॥ पवन
 नरिन्द राज भोगवे, अजना राणी सूं हेत विशे-
 षक । हनुमन्त कुमार विद्या भणे, वानरी आदि

विद्या भण्यो अनेकक ॥ चतुर विचक्षण अनि
 वणो. देश प्रदेश में हुबो जी विद्यानक । वसन्त-
 माला रो मान बधारियो. मगलाई प्रह करे तेहने
 वानक ॥ स० ॥ १३४ ॥ द्विवे वरुण राजा निण
 अवसरे, आपणा पुत्रां ने जाणी मजोरक । वर
 पगक्रम देखी आपणो मन मांदि धरे अनि अभि-
 मानक ॥ निण लड़ा मणी दन मोकल्यो, जे
 तांदरे युद्ध करवा तणो भावक । तो बीजा
 मुभट डल मोकली. तुम्हे एकर म् जोवा मुम्
 आयक ॥ स० ॥ १३५ ॥ रावण सेना मेनी
 वणी, एक नेहो मेल्या रत्नपुरी मांदि । जव
 पवनगाय जावा ने मज हुवा, जव हनुमन्त कुमार
 बोले एहवी वाचक ॥ कहे कटक मांदि ह जव
 मं. जव पवनजी अंजना कहे छे आमक । पुत्र
 नृ अजे बालक अछे, कटक मांदि नही तांदरो कान
 ॥ स० ॥ १३६ ॥ हनुमन्त हट करी चारियो.
 महिन्द्रपुरी जाव कियो मेल्याणक । तीन पग
 डल आकल्यो, पवन वांज्यो नाना ने जाव

शरसेन राजा आय जाँझ्या, वाम नारी न किया
 प्रणामक । तां माँहरी भावा न रागी नरी निण
 कारणे मे आय तिथो मगामक ॥ स० ॥ १३७ ॥
 तिवे हनुमन्त आयो लता मणी, मातमो आयो
 छे रावण रायक । हनुमन्त कुमार ने दग्न, रावण
 पामियो अनि ररप अनाय ॥ घोरो भाली ने
 हनुमन्त निरुल्यो बीजा पिण चाल्या अति घणा
 रायक । साँहो आयो कटक वरुण नो, थुड ह्यो
 घणो, माँहो माँयक ॥ स० ॥ १३८ ॥
 रावण की सेना देखी तगी, सों पुत्र वरुण ना
 चाल्या तिण वारक । थुड करवा लागा निण
 समे, लोहना बाण जाणे सृंक अझारक ॥ बले
 गोला ने बाण बहे प्रणा, काम आया बडा बड़ा
 जोधारक । जब रावण की सेना न्हासी गई,
 सेंठो उभो रयो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥
 १३९ ॥ घणा लोरु कहें हनुमन्त ने, तू मात
 पिता ने अलखावणो वालक । तिण सँ तोने
 मेलियो कटक मे, तू वरुण सँ थुड कियां करः

जायलो कालक ॥ बल नो हनुमन्त हम कहें,
 वरुण ने पुत्र मिल आवज्यो साथक । वानां कियो
 सुं खबर नहीं, बल तणी खबर पड़े रण में बावलां
 हाथक ॥ म० ॥ १४० ॥ वानरी विद्या माथी
 करी, वानर रूप कियो निण वारक । धारे जोजन
 में वृक्षादिक हुन्ता, ते लेई न्हाय्या वरुण नी फाँज
 मभारक ॥ घणो कतल कियो वरुण नी फाँज
 नां, बले लाम्बो पंड विकुर्व्यो निण वारक । मां
 पुत्र राजा वरुण तणा बांध लिया निण पंड
 मभारक ॥ म० ॥ १४१ ॥ वरुण राजा कं
 हनुमन्त ने, तं वानरी विद्या ने मेल दे दूरक ।
 पड़े जीन पामजे रण विषे, तो हं जाणं तां
 मोटको शुरक ॥ जय हनुमन्त विद्या मेली बांदरी,
 मूलगोरूप करी मेले छै बाणक । जय वरुण
 राजा हम चिन्तवे, ए बालक दिसे छै महा धर
 वानक ॥ म० ॥ १४२ ॥ द्विवे धधकी ने वरुण
 राजा उठियो, हनुमन्त कुमार सुं मांडी छै गडक ।
 दोनं जणा हाथ चलावे निहां, मुष्टि ना बाज ग



॥ मंगलाचरणा ॥

ढोहा ।

सिद्धश्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहन्त ।
इष्ट देव वन्दुं सदा, भय भंजन भगवंत ॥१॥
अरिहन्त सिद्ध समस्त सदा, आचारज उवभाय ।
साधु सकल के चरणकुं, वन्दु शीश नमाय ॥२॥
शासन नायक समारिये, भगवन्त वीर जिनन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥३॥
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भण्डार ।
श्री गुरु गौतम समारिये, बद्धित फल दातार ॥४॥
श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यं घन वरसत वेलितरु फूल फलन की वृद्ध ॥५॥

परितारक ॥ रावण राजा तिण प्रसन्न ॥
 ने ऊपर लीधो छे रावण ॥ जय हनुमन्त ॥
 राजा मणी, बांधीने नटाग दिगो रण भाषि ॥
 स० ॥ १४३ ॥ हनुमन्त कहें प्रथम भाष
 तांहरा, जो रावण राजा रे लागे तू पायक ॥ जय
 वरुण कहें वीतराग विन, अवर रा पाय वन्दू नरी
 जायक ॥ चारित्र लेणो छै माहरे, तव हनुमन्त
 धन्य तोडिया तामक ॥ वरुण लियो चारित्र
 वैराग सुं, तिणरा पुत्र ने राज दियो रावण राषक ॥
 स० ॥ १४४ ॥ रावण हनुमन्त ने प्रशंसियो,
 तू शूर धनो धांरी लघुजी वेशक ॥ ते मोटा
 राजा ने हटावियो, रीझ देई आयो लंक नरेशक ॥
 परणार्ई भाणेजी आपणी, सीख दीवी सनमान
 सत्कारक ॥ बले हनुमन्त मोटा राजा तणी,
 रूपवती कन्या परणियो एक हजारक ॥ स० ॥
 १४५ ॥ पवन नरिन्द राज भोगवे, मानेती राणी
 अञ्जना नारक ॥ बसन्तमाला सुं हेत अति धनो,
 बले मानेतो छै हनुमन्त कुमारक ॥ ते संसार

ना सुख भोगवे, हनुमन्त कुमार सहस्र नालां
 महिनक । रतन जडित महिलां मभे, मांहो मांहि
 लग रही अति प्रीतिक ॥ म० ॥ १४३ ॥ हिवे
 काल कितोक गयां पछै. अन्नना चिंतवे चित्त
 मभारक । परभाते राजा ने पृछने, लेणो मिर
 मोने संयम भारक ॥ इम चिंतवी आई राजा
 कने हाथ जोड़ी बोले जीश नमायक । आज्ञा
 वो स्वामीजी मो भणी चारित्र लई देऊं कर्म
 व्यपायक ॥ १४७ ॥ जय राय कहें अन्नना भणी.
 केईक दिन रहो घर मभारक । हिवे पुत्र बालक
 अछे पछे माये लेस्यां आवे संयम भारक ॥ तब
 अन्नना हाथ जोड़ी ने इम कहें, मोने काल से
 विश्वास नहीं छै लिगारक । निण कारण दीक्षा
 लेसुं महि, जय राजा पिण हुबो छै माये तैयारक
 ॥ म० ॥ १४८ ॥ हिवे हनुमन्त कुमारने तेइस
 पवनजी बोले छै पृहवी वायक । अमे चाग्रि
 लेस्या बैराग सं. हनुमन्त कुमार गोयो वणो नायक.
 पछे राज बैसाग्यो मोट मण्डाण सं, बसन्तनाथ

श्री गणेशाय नमः श्री चौमाली ॥

॥ दोहा ॥

जुवो मांस दारु थकी, करे बेरया सँ जोग ।
जीव हिंसा चोरी करे, परनारी नों भोग ॥१॥

॥ डाल राम की चाल ॥

व्यसन मानमो परनारी नो, प्रत्यक्ष जा
देवायो । गवण पदमोत्तर मणरय राजा, तीनों
गज गमायो ॥ गजवीयाने राज पियागे ।
पदेशी ॥ १ ॥ मणरय राजा कर मनसुयो कु
याटु ने मायो । आप सुओ ने गज गमार
दाय कटुय न आयो ॥ ग० ॥ २ ॥ रावण ग

पणिला हुवो पोटे पदमोत्तर गयो । नीजी क्या
मणरथ राजा नो, ते सुणज्यो नित्त लागो । रा०

॥ ३ ॥ जनुद्रोष न नरन क्षेत्र मे नगर सुडर-
शम भागो । पन न परण देवन सुन्दर नैन
सुतो राजा रो ॥ रा० ॥ ४ ॥ मणरथ राजा रे
परणो रागो, छदि नगो विस्तारो । हाथो घोडा
ने रथ पादक सेना, वगने चौथो आरो ॥ रा० ॥

५ ॥ स्वन्न ने परन्न केरो विरोध नहीं
निगवारो । मणरथ राजा रे जुगशाहु भाई,
नारो नादि नै प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पान इन्द्री
ना भोग भोगवता, नाटक पडे दिन रैणो । विविध
प्रकार नी कोडा करना विषय विरोध मडाणो ॥

॥ ७ ॥ मणरथ राजा राज भोगवता, चढियो
महल उदारो । निग अवतरे मणरथा दीठी,
जुगशाहु नो नारो । रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने
राजा अचरज पान्यो अहो अहो रूप तुमारो ।
इम राणो ने हू महल मे राखूँ सुत विलखूँ
सत्तारो ॥ रा० ॥ ९ ॥ मणरथ राजा कर मनसुने

है गानो । मैणरखा मन जणी जाणी, जेठ पिना
 री ठामो ॥ १७ ॥ इम जाणी ने गणी उराह
 लीधा वस्तु आभूषण मारो । नेह मनेह वस्तु
 मेली जाण्यो राजा लागो न्हारी लागो ॥ रा० ॥
 १८ ॥ मैणरखा ने रीसज आई, दीनो दासी ने
 झुझकारो । धणी नो न्हारो परदेश सिधायो,
 राजा पाडियो न्हारी लागो ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी
 नो मन मे दिलगीर हुई, राजा पासे आई ।
 मैणरखा नो महाराज कोष करी ने, दीनी वस्तु
 बगाई ॥ रा० ॥ २० ॥ मणरथ राजा रात समय
 ने, महल भाई रे आयो । उरवाजो नो जडियो
 दीठो, हेलो मारे है रायो ॥ रा० ॥ २१ ॥ मैण-
 रखा नो मन नादि जाण्यो, मणरथ राजा आयो ।
 बीजो नो कोई उपाय न दीसे ह सासु ने बुरे
 जणायो ॥ रा० ॥ २२ ॥ मैणरखा नो छाने
 जाय ने, दीनो सासु ने जणायो । अमलां मस्तनां
 माना जाण्यो, बेठो भोले आयो ॥ रा० ॥ २३ ॥
 ओ नो महल बेठा जुगबाहु रो, महल पेली

जुगवाहु ने बुलायो । करो सजाई आयुद्धशाला
 नी, हूं देश लेवण ने जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ
 जोड़ी ने जुगवाहु बोल्हो, ओ तो छै थोड़ो कामो ।
 राज विराजो राजसभा में, हूं जासूं भाई नामो
 ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणरथ राजा राजी हुवो हुकुम
 कियो छै भाई । देश किल्लो कायम करी आवो,
 ले जावो फौज सजाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ जुगवाहु
 तो उद्यो शताव सूं, हरष हुवो मन मांदि ।
 किल्लो कायम कर पाछो आजं जब मुजरो कल्ला
 भाई ॥ रा० ॥ १३ ॥ ले फौजां जुगवाहु चाल्यो,
 मजला मजला जायो । जुगवाहु तो मन में नही
 जाण्यो, मणरथ कियो उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥
 मणरथ राजा मणरथ्या कारणे, भारी वस्तु मगावे ।
 गहना जडाव रा पहरण मारूं, दासी रे हाथ
 पहंचावे ॥ रा० ॥ १५ ॥ दासी राजा र हुकुम
 छाने, वस्तु लेई देवे गणी ने जायो । मणरथ
 राजा चोज बनायो, निगरी खबर न कायो ॥ रा० ॥
 १६ ॥ मणरथ्या मन मांदि जाण्यो, धणी चाल्यो

सुनाई । जुगवाहु तो मन मे न जाण्यो, मारेलो
मन भाई ॥ रा० ॥ ३१ ॥ जुगवाहु ने आयो
जाणी ने, डर उपनो राजा रे । मणरथ राजा
करे विमामण उमराव छै टण रे सारे ॥ रा० ॥
३२ ॥ जुगवाहु ने राणी कहे छै, ढगो करेलो
वारो भाई । साथ समान छै टणरे सारे, तो ह
पहेली मारुं जाई ॥ रा० ॥ ३३ ॥ भाई मारण
राजा रात रो चाल्यो, चढ़ियो एक सखाई । दोढ़ी-
दार चाकर पालतां गयो धकाय ने माई ॥ रा० ॥
३४ ॥ मैणरह्या तो मनरी दाखवी, जितरे मनरथ
आयो । राणी कहे सावधान ह्रवो, मारे लो
वाने भायो ॥ रा० ॥ ३५ ॥ मैणरह्या तो न्यारी
हुई, राजा नेडो आयो । जुगवाहु तो न्यारो सूतो,
मणरथ घावज बायो ॥ रा० ॥ ३६ ॥ भाई मार
राजा पाछो बलियो, ह्रयो घोड़े असवारो । सरप
पूछड़ी खूर हेटे चींथी, खाधो छै तिण वारो ॥ रा०
॥ ३७ ॥ मणरथ राजा हेटे पडियो, मरने गयो
नरक तत्कालो । खबर नही कोई राज सभा मे,

पंच परमंष्टी देव को, भजनपुर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सची, होवे परम कल्याण ॥६॥
श्रीजिन युगपद कमल में, मुक्त मन भसर वसाय ।
कव उगे वो दिनकर, श्रीमुख दर्शन पाय ॥ ७ ॥

नवकार मंत्र १०८ गुण सहित ।

॥ एमो अरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवन्तने

ते अरिहन्त भगवन्त केहवा छै १२ वारे गुणे
करी सहित छै ते कहै छै—अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो
दर्शन २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव
ध्वनि ५ भामण्डल ६ फटिक मिहामण ७ आशोक
वृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९ देव दुन्दुभी १० चमरवीजै
११ छत्र धारे १२

॥ एमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवन्तने ।

ते सिद्ध भगवन्त केहवा छै आठ गुणे करी
सहित छै ते कहै छै—केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २

रागज्यो, जागजीव परितारो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ मोरा
 प्रीतमजी ये राग हेष दोई, बध करमा रा जाणो ।
 कलह अभयगत्यान पैशुन्य चाही, पर परिवाद
 पचसत्ताणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ मोरा प्रीतमजी
 रति अरति इम जाणो, माया मोसे नहीं भलो ।
 पाप अठारै त्रिविध योमराजं मिथ्या दरशण
 सलो ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मोरा प्रीतमजी मरण
 तणो भय न आणो धर्म साचो करि जाणो ।
 परभव में ते साधे चालसी, गांठे बांध्यो नाणो ॥
 रा० ॥ ४८ ॥ मोरा प्रीतमजी धे मोह धकी मन
 घालो मोह मे जीव मती घालो । करो आलो-
 यणा कारज सरे ज्युं, मन राखो कोई सालो ॥
 रा० ॥ ४९ ॥ मोरा प्रीतमजी दश दृष्टान्तै,
 मनुष्य जमारो दोहेलो । इण भव मे जो पुन्य
 करे तो, परभव सुख सोहेलो ॥ रा० ॥ ५० ॥
 मोरा प्रीतमजी ज्ञाने विचारो, सुपनारी माया
 जाणो । हाभ अणी जल बिन्दु जिम जाणो,
 मन मे समता आणो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ मोरा

प्रीतमजी थें टोप करमां रो जाणो, बीजा ने दोष
 न दीजे । ऋण बैर तो कोई न छोडे, बांझा ने
 भुगतीजे ॥ ग० ॥ ५० ॥ मोरा प्रीतमजी किण
 रा मान पिता, कुण कुटुम्ब कुण भाई । वर गी
 तो साद्विष नहीं स्त्री व्याध सरथ मगाई ॥ ग०
 ॥ ग० ॥ ५१ ॥ मोरा प्रीतमजी नहीं काय
 आपणी साची धर्म मगाई । शत्रु मित्र ने
 मरीया जाणो, अवसर जावे डाई ॥ ग० ॥ ५२ ॥
 मोरा प्रीतमजी थारें मरुदहणा शुद्ध छै, चौविहार
 अणजण दियो । मरणो महु ने एक दिहाई
 मंडो राखणो दीयो ॥ ग० ॥ ५३ ॥ जुगबार
 तो मयागे मर्या, साहाज दियो छै गणी ।
 कान्हे मासै कान्ठ करी ने, जाय उपनो विमानी ॥
 ग० ॥ ५४ ॥ मंगरच्या छाती काठी करन,
 काज धणी नो क्रियो । पग मित्र ने पार उतारि,
 धन जीवित जिण रो जियो ॥ ग० ॥ ५५ ॥ मोर
 बडो होय काम बिगाडे, मरण चिरिया नरक में
 पावे । मगा नहीं ने पग बैरी, मंस लेताई

री, गजबोरा समनार्थ । सुदि मातिनी उभी
 मैली न तोर नही रण माति ॥ रा० ॥ ५३ ॥
 बिषम उजाह ने आर पेटी नो सुन नही तिल
 रती । मेरगगा नो हु न करती बेटी, सङ्कट पयो
 नै नती ॥ रा० ॥ ५४ ॥ करे रानी ने करे विलाप,
 हु न भर जाने काटे मेरगगा नो हु न प्रभु
 जाणे, पैटी है नट माटे ॥ रा० ॥ ५५ ॥ सजोग
 रूपो रोहो हुनो विजोगे निग बाली । नाथ
 बिहारी हु नही करती आणी रण मे गली ॥ रा०
 ५६ ॥ देखो लगाई इग संसार में बिचड़तां
 नही बारी । इन जाणो ने सनसुन सेवो, लाहो
 लेख्यो लागे ॥ रा० ॥ ५७ ॥ निग अवसर मे
 देवता इन जाण्यो, हु न करे है राणी । वैज्जिय
 रूप कियो राथी रो रमन माही पाणी ॥ रा० ॥
 ५८ ॥ हु न विहाय विनम्बज कियो सुंड
 सु उजाले पाणी हु न मोही ने राथी दीछो,
 रमन देखे राणी ५९ ॥ जिम जिम रमन देखे
 राणी, अवरज रमन नारी । धमे अंकुरो

मंजोगे, आवे छै नर नारी ॥ रा० ॥ ८० ॥ देवता
 छै कोई पर उपकारी, गणी ने मंडू मं भाले ।
 जितरे नेडा आय निकलिया, लेके विमाण में मेले
 ॥ रा० ॥ ८१ ॥ विद्याधर तो गजी हुवो ह्य
 घणो डण नारी । तुरन्त विमाण में ले पायो
 बलियो, मुख बिलसा मंमारी ॥ रा० ॥ ८२ ॥
 मंणरह्या तो मन में जाण्यो, तुरत बल्यो छै पायो ।
 कुण जाणे कुण देश ले जावे, ओ तो नहीं
 दीसे छै आछो ॥ रा० ॥ ८३ ॥ विद्याधर
 ने मंणरह्या प्रछे, जाना किण दिश भाई । अवे
 तो थे पाछा बलिया, कांई दिल में आई ॥ रा० ॥
 ८४ ॥ भगवन्त ने तो दग्गण जानां, तो मरीची
 मिली नारी । हम जाणी ने पाछो बलियो मुख
 बिलसा मंमारी ॥ रा० ॥ ८५ ॥ मंणरह्या मीटे
 यचने ठामवे, भगवन्त दग्गण जानां । माग
 में थाने जंज मिली छे, नफो घणो दग्गण करना
 ॥ रा० ॥ ८६ ॥ तीर्थहर नां दग्गण करनां
 प्रसन्न होमी नारी काया । विद्याधर तो पायो

ग० ॥ ६४ ॥ परपदा देखने हमवा लागी, देव
 दीसे छै गहलो । स्त्री ने तो चन्दना कीयी, जिग
 रो प्रभु उत्तर देलो ॥ ग० ॥ ६५ ॥ जुगवाट
 ढणरो नामज हुनो, मणरथा ढणरी नारो । धर्म
 तणो ढण ने साहज दीनो हुयो सुर अवतारो ॥
 ग० ॥ ६६ ॥ मणरथा रे कारण ढण ने मणर
 भाई मान्यो । दे शरणा ने संस करयो ढण ने
 मणरथा नान्यो ॥ ग० ॥ ६७ ॥ मँनरथा तो
 मन में जाण्यो, धणी दीसे छै म्हारो । इन
 अवसर में समय आवे, पीछे विद्यावर नों नरी
 मारो ॥ ग० ॥ ६८ ॥ भरी परपदा में मँनरथा
 उठी, बोल्यो छै करजोड़ी । आज्ञा दो तो माली
 मंयम लेऊ, दालं भव नणी म्वांड़ी ॥ ग० ॥ ६९ ॥
 देव कहे याने आज्ञा म्हारी ल्यो ये समय मारी ।
 जुगवाट तो उखल हुयो, मनरथा ने नारी ॥ ग०
 ॥ ७० ॥ माने तो विद्यावर ल्यो, परब
 यान प्रकाशी । कहे विद्यावर कथो देवता गये
 विद्यावर नारी ॥ ग० ॥ ७१ ॥ मणरथा ने

आत्मिक स्वत्व ३ क्षायक ममकित ४ अटल अव-
गातगा ५ अमूर्तिभाव ६ अशुक्लघु भाव ७ अन्त-
राय रहित ८

॥ रामो अय्यरियारं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ षट्त्रिंश
गुणे करी भरित छै ते कहै छै—आरजदेश ना उपना
१ आरज कुल ना उपना २ जानिवंत ३ रूपवंत ४
धिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोचना दूसरा
पासे कहै नही ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८
कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्रि जीते १०
राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२
काल ना जाण होवे १३ तिक्षण बुद्धि होवे १४
घणा देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित
१६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८
सूत्र अर्थ दोना रा जाण होवे १९ कपट करी पूछै
तो छलावै नही २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा

राज बलवान ने मारवा राजा से मर्याद मारवा मारवा
 ग० ॥ १०० ॥ जेन राजा ने मारवा हुबो,
 मारवा हुबे मारवा मारवा तो निकल नाछो
 जिन से मारवा न करे ग० ॥ १०१ ॥ ममार
 ने तो कारण कियो राज जुगबलान ने दियो
 जिन ने दोष न डोले मारवा करन आग कियो ।
 ग० ॥ १०२ ॥ जुगबलान तो राज करे छै, बरने छै
 बौधो आगे मारवा मारवा ने थोडो आवे, पिन
 ने हुत बरने मारवा ग० ॥ १०३ ॥ मनो कुमार
 तो मोरो हुबो बिराज मारवा राजा ग० । मनो कुमार
 ने राज बैसाछो हुत बिराजे ममारो । ग० ॥
 १०४ ॥ जुगबलान तो देवता हुबो, ममारया सयन
 मारे । जुगबलान ने मनो भाई दोनु राज रडवाले
 ॥ ग० ॥ १०५ ॥ आठ करन छै मारवा जोरावर,
 जोवा ने कोडा मारे । ममार ने तो ममार कोना,
 करन खेल दिखाले । ग० ॥ १०६ ॥ दोनु
 राजा राज भोगबन्ता अटवो पडो ई लीनाडे ।
 भूनि आगो राखन साह, करे राजवरी ने ॥

ग० ॥ १२३ ॥ जुगबल्लभ तो मन में जाण्यो,
 आयलड़ दिसे कटारो । देखोने म्हारी धरती लेसी,
 राजविया अहङ्कारो ॥ ग० ॥ १२४ ॥ जुगबल्लभ
 तो फौजां ले चढ़ियो, कांकड़ सीमे जावे । नमी राजा
 मन में कोप करी ने, मन में मगज न मावे ॥ ग०
 ॥ १२५ ॥ नमीराय तो करी सजाई, थोले छे
 बांकी बाणी । मरम मोसो थोले माना रो, चढ़ियो
 छे डम जाणी ॥ ग० ॥ १२६ ॥ निण अवसर
 में मणरत्नाजी, मन में डमड़ी आणी । अह जान छे
 दोनूं म्हाग, नही हठे पुन्य प्राणी ॥ ग० ॥ १२७ ॥
 वणा जीव नी वातज होमी, मरसी वणा अजाणी ।
 घामृ वणे जो उपगार कीजे, मणरत्ना मन आणी
 ॥ ग० ॥ १२८ ॥ कर बंदना गुहणी ने पुणे,
 आप करो तो इ जाऊं । दोनूं राजा रे गड़ मंत्री
 छे, इ जाई ने समझाऊं ॥ ग० ॥ १२९ ॥ मांरो
 माहि तो फोई न हटसी अह जान छे म्हाग ।
 वणा जीव नी वातज होमी, परिणाम एक दया
 ग० ॥ १३० ॥ देखो पुन्याई राजवियां नी, गुहणी

नो बिग नो धरने धरन आन नो सेनो गानने
 पोछे पगोपचार रगोजे ॥ रा० ॥ ३० ॥ कर
 भवना ने मगरदा जानो ने मतिदा नो सायो ।
 जुगबलन नं नो सेन पिताय, पहिलो उण नं
 धानो ॥ रा० ॥ ३१ ॥ क'कर सोमा और
 ठिकाने कौजा पडो नै डोई । जुगबलन नो
 लशकर पणो, जानो मेणरदा सोई ॥ रा० ॥ ३२ ॥
 मेणरदा तनो नमन शरीरो आन नीने पर नारी ।
 राज कचेडो त नेडो आई निजर पडी राजा री ॥
 रा० ॥ ३३ ॥ जुगबलन नो उछो शानाव त,
 विनय कलो छै भारो तान आठ पग सामो
 जाई ने, मरासनिदा केन पधारी ॥ रा० ॥ ३४ ॥
 मेणरदा नो कहे राजा ने कारण पडियो नोन्यु भारी ।
 कौज बंशो नो ये भेलो कोनो, नै निग त कारण
 बिचारो ॥ रा० ॥ ३५ ॥ आपलड म्हागी धरती
 लेतो नोच चण्डाल घर जायो । साथ सामान
 रण भेलो कोनो, निग काग्य चडी आयो ॥ रा० ॥
 ३६ ॥ बेटा छो धे राजबिया ग बोलो बोले

विचारो । और थां ऊपर कौण चढ़ आमी, यो
 भाई छै थारो ॥ रा० ॥ १३८ ॥ यान सुणी ने
 राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे । मागी
 बचन कथ्यो माता ने, राजा ने नहीं मोवे ॥ रा० ॥
 ॥ १३९ ॥ जुगबल्लभ तो कहे माता ने, बेली से
 संयम भारो । मौत आपदा किण विध हुई, बात
 कहो बिस्तारो ॥ रा० ॥ १४० ॥ मणरथ राजा
 थांग पिता ने माख्यो, हं रात ने निकली आई ।
 जनम नमी रो वन में हूवो हं मेल आई वन में
 भाई ॥ रा० ॥ १४१ ॥ तीर नदी ने बैठी हुन्ती,
 विमाण विद्याधर नों आयो । देव उचाय ने
 मोने मांहे मेली हं गई समोसरण मांयो ॥ रा०
 ॥ १४२ ॥ पिता तो थारो देवता हूवो, दशरथ
 प्रभु के आयो । आज्ञा मांगी ने में तो संयम
 लीयो, भेट्या प्रभु रा पायो ॥ रा० ॥ १४३ ॥
 दोनं राजा रे म वैरज सुणियो, लड़मी मांयो
 भाई । वणा आठमी मरण पामसी, निण कारण
 इ भाई ॥ रा० ॥ १४४ ॥ जुगबल्लभ राजा बात

ઠુડું છે રાજી ॥ ગ૦ ॥ ૧૩૬ ॥ છત્તીમ દજાર
 આગળ્યાં માંહે, ગુરળી ચન્દનવાલા । તિન રે
 પાટે પદવી પાડે, શિવ્યળી રતના મી માલા ॥ ગ૦
 ॥ ૧૩૭ ॥ ચેડાની જે માને પુત્રી, ભગવત્ત આ
 યવાળી । ચેલળા મૃગાવતી તીજી પ્રભાવતી, વૌં
 શિવાદે રાળી ॥ ગ૦ ॥ ૧૩૮ ॥ પાંચવીં પડના
 વતી છટી મુલમા, જેષ્ટા માનમી જાળી । મમ્મ
 ૧૩૯ ॥ અન્નના મતી છે મહિન્દ રાજ
 ની વેટી, વિલ્લો મચ્છો વન માંદીં । મંરુટ ૧૪૦
 મતી શીલજ રાલ્લો, યજ્ઞ કીર્તન જગ માંદી ।
 ગ૦ ॥ ૧૪૦ ॥ મતી ટ્રાંપટી તો આગે ઠુડું, યજ્ઞ
 લીધો જગ માંદે । મોટા રાજા મે વિમેવ નિશામે
 મેંગરથા મી અવિકાર્દે ॥ ગ૦ ॥ ૧૪૧ ॥ મંચન
 યેને મુકુત ફીલ્લો, મનુલ્ય જનામે મન મોલ્લો ।
 તિન ગામન મે તિન મેંગરથા કીની, તિન ન
 ફોડે ફીલ્લો ॥ ગ૦ ॥ ૧૪૨ ॥ મેંગરથા તો ટીંકો
 ઘેડે નન મુદ્ધ મંચન પાલે । તિન મારગ મે નન

કીર્ણાગો મનદૂષણ સહ ટાલે ॥ રા૦ ॥ ૧૭૩ ॥
 મળરહ્યા તો ફુલ નારક યુદ્ધ તરંગ આપ રી રાખી ।
 વિન્નો સળો પિણ ગીલ ન માગો મગવન્ત
 તેરના સાચી ॥ રા૦ ॥ ૧૭૪ ॥ જુગમાટ
 ને મેળરહ્યા સતી, જુગવદ્દામ નમી માઈ ।
 ચારાં રો તો કારજ સીધો, મળરથ દુર્ગતિ
 માંહિ ॥ રા૦ ॥ ૧૭૫ ॥ વ્યસન સાતમો
 પરનારી નો, જીવ ઘાત થર દાણી । મળરથ રાજા
 નરક પહુન્તો, કુયશ વાધને પ્રાણી ॥ રા૦ ॥ ૧૭૬ ॥
 એક કુવ્યસન મળરથ સેવ્યો, ઘટુ ફલિયો સસારો ।
 સાતું કુવ્યસન જે સેવે પ્રાણી, તિણ ને દુઃખ
 અપારો ॥ રા૦ ॥ ૧૭૭ ॥ વિવગા રસ તે વિષ
 સમ જાણી ને, સતગુરુ સેવા કીજે । મળરથ
 રાજા ની ઘાત સુણી ને, પરનારી સગ ન કીજે ॥
 ॥ રા૦ ॥ ૧૭૮ ॥ દાન શીલ તથ સંયમ પાલો,
 દોષણ સગલા ટાલો । દયા ધર્મ રી સમતા આણી,
 શુદ્ધ આચાર તે પાલો ॥ રા૦ ॥ ૧૭૯ ॥ ધર્મ
 દયા મે કેવલી માલ્યો, તે રાચો કર જાણો । જે

जाणी लेवे भव प्राणी, ते पाने निग्वागो गः ।
 ॥ १८० ॥ जय नय नयन पानो रे भाई, विषय
 विकार गमाई । जीव जिके तो शिव लुन गवे,
 श्रीवीर पवन मन लाई ॥ १८१ ॥

अथ श्रीनिम्बकार नौ कुण्ड ।

लुन कारन भवियन मनगे निन नवकर ।
 जिन शानन आगन, चौदह कुण्डनो नार ॥ १ ॥
 ७ मंत्रनी नदिना कहिनां न लहुं पार । लुगन
 जिन चिन्ता बंछिन कल दानार ॥ २ ॥ लु
 दानव मानव मेवा करै कर जोड़ । लुवि नगन
 विचरै नारै भवियन कोड ॥ ३ ॥ लुगन
 विचरै अनिदय जान अनन्त । पद पहिले ननिरे
 अरि नरुन अगिन्न ॥ ४ ॥ जे पन्द्रह मेरे निद
 पदा नगवन्त पदनी गति पडोता अष्ट हन
 करि अन्त ॥ ५ ॥ कल अगल नवनी, पद्मानन्द
 निन्दक नर नन्दन, बीजे पद बलि पद ।

जाण होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा
जाण होवे २४ मीग्वने समर्थ २५ प्रायश्चित्तना
जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले
२८ परीपह जीते २९ समय परममय ना जाण ३०
गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण
होवे ३३ सोम चन्द्रमा जिसा ३४ शूरवीर होवे ३५
बहु गुणी होवे ३६ ।

पुनः

५ पांच इन्द्री जीते च्यार कपाय टाले, नव-
षाढ़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५
पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप
४ वीर्य ५, ५ पंच सुमति पाले इर्या १ भाषा २
ऐपणा ३ अयाण भंडमन नपेवणा ४ उचारपासवण
५, ३ तीन गुप्ति मन १ वचन २ काय गुप्ति ३ ।

इति पट्त्रीस गुण सम्पूर्ण ।

॥ राम्मो उक्त्तम् ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस

॥ ૬ ॥ ગન્ધમાર પુરુષાર સગર જાજિતર જોમ ।
 કરે સારણ વારણ ગુણ નત્રીસે ધોન ॥ ૭ ॥ ધ્રુત
 જાણ શિરોમણિ, સાગર જિમ ગરમીર । તીજે પદ
 નમિયે, આચારજ ગુણધીર ॥ ૮ ॥ ધ્રુતધર ગુણ
 આગર, સુત્ર મળાવે સાર । તપ વિધિ સંયોગે,
 ભાગે અર્થે વિચાર ॥ ૯ ॥ સુનિવર ગુણ ગુત્તા,
 કલિયે તે ઉવડભાગ । પદ ચૌથે નમિયે, અહો
 નિશિ તેહના પાગ ॥ ૧૦ ॥ પન્નાસવ ટાલે, પાલે
 પશ્ચાચાર ॥ તપસી ગુણધારી, વારે વિષય વિકાર ॥
 ॥ ૧૧ ॥ ત્રસ વાવર પીયર, લોક માહિ જે સાધ ।
 ત્રિવિધે તે પ્રણમું, પરમારથ જિણે લાધ ॥ ૧૨ ॥
 અરિ કરિ હરિ સાયણિ, હાયણિ ભૂત વૈતાલ । સવિ
 પાપ પળાસે, ઘાથે મંગલ માલ ॥ ૧૩ ॥ દુણ સમઘાં
 સંકટ દૂર ટલે તત્કાલ । ડમ જંવે જિન પ્રભ, સુરિ
 શિષ્ય રસાલ ॥ ૧૪ ॥ હતિ ॥

१. अथ पुण्यवर्माविक्रम आचार्य श्रीनालाडी राजगिरि महाराज

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगुरुः ॥

मित्र श्री परमानमा, अरिगंजन अग्निं ।
 दृष्ट देव वन्दुं मदा, भय भंजन भगवन्त ॥ १ ॥
 अग्निं मित्र सुमन्तं मदा, आचारज उवज्ज्मय ।
 मायु मकल के चरणकुं, वन्दुं शीघ्र नमाय ॥ २ ॥
 शानन नायक मनगिये, भगवन्त वीर जिज्ज्म ।
 अल्प विघ्न दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥ ३ ॥
 अंगदे अमृत वसे, लब्धि तणा भज्ज्म ।
 श्री गुरु गौतम मनगिये, वंछित फल दाना ॥ ४ ॥
 श्री गुरु देव प्रसाद में, होत मनोग्ध मित्र ।
 ज्ञान वरमन देलि नन, फल फलन की वृद्ध ॥ ५ ॥
 पंच परमेश्वर देव को, भजनपूर परिज्ज्म ।
 कर्म अग्नि ज्ञाने मन्त्री, होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥

भी तिन गमयत भगवन्, भगवन् भगवन् भगवन् ।
 इह जने जो भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ॥ १० ॥
 प्रणमी पद पद भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ।
 कथन कर अह जीवन, भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ॥ ११ ॥
 आत्म विषय तपाय पद भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ।
 तन नाराजी योनि में, अह तारो भगवन् ॥ १२ ॥
 देव गुरु भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ।
 अभिजाओना जे कला, भिच्छामि दुख हए मोय ॥ १३ ॥
 मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भगवन् भगवन् भगवन् भगवन् ।
 वैशराज गुरु शरण भी, आपभ ज्ञान वैराग ॥ १४ ॥
 जे मैं जीव विराभिगा, सेव्या पाप अठार ।
 प्रभु तुमारो साखसे, बारम्बार धिक्कार ॥ १५ ॥
 तुरा तुरा सबको कह, तुरा न दीसे कोय ॥
 जो पद सोध आवणो, तो मोस् तुरा न कोय ॥ १६ ॥
 कहेवा मे आवे नहीं, अवगुण भखो अनन्त ।
 लिखवामैं कथोकर लिखूं, जाणो श्रीभगवन् ॥ १७ ॥
 करुणा निधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद ।
 मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रन्थी भेद ॥ १८ ॥

राग द्वेष दो गीज से कर्म बंधकी व्याध ।
 ज्ञानात्म वेराग्य से, पावे मुक्ति समाध ॥ १७ ॥
 अवसर चीन्गो जान है, अपने वश कछु होत ।
 पुन्य हतां पुन्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥ १७ ॥
 कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इन भव मे सुखकार ।
 ज्ञान शुद्धि इनसे अधिक, भव दुःख मंजनहार ॥ १८ ॥
 राई मात्र घट बंध नहीं, देख्यां केवल ज्ञान ।
 यह निश्चय कर जानके तजिए परधम ध्यान ॥ १९ ॥
 दृजाकुं भी न चितिये, कर्मबंध बहु दोष ।
 श्रीजा चौथा ध्याय के करिये मन सन्तोष ॥ २० ॥
 गई वस्तु सोचे नहीं आगम बछा मांह ।
 वर्त्तमान वनें मटा, सो ज्ञानी जग मांह ॥ २१ ॥
 अहो समदृष्टी जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
 अंतर्गत न्यारा रहे ज्युं धाय सिलावे घाल ॥ २२ ॥
 सुख दुःख दोनूं बसत है, ज्ञानी के घट मांय ।
 गिरि सर दीखे मुकुर मे, भार बोजवो नांय ॥ २३ ॥
 जो जो पुद्गल फरसना, निश्चे फरसे सोय ।
 ममता समता भाव से, करम बंध क्षय होय ॥ २४ ॥

बाँव्या मोहरी भोगवे, कर्म गुमागुम भाव ।
 कल निजग होत है, यह समाधि चित चाव ॥२४॥
 बाँव्या चित भुगते नहीं, चित भुगव्यां न छोड़ाव ।
 आसक्ति करता भोगता, आसक्ति दूर कराव ॥२५॥
 पय कुरपय यह पय करी, गेग हानि वृद्धि पाव ।
 पुपुष्य पार क्रिया करी सुख दुख जगमें पाव ॥२६॥
 सुख दिया, सुख होत है दुख दियां दुख होय ।
 आसक्ति नहीं अवकाश, तो आपने हणें न कोय ॥२७॥
 जान गरीबी गुन वचन नग्न वचन निर्दोष ।
 दनहु मर्जी न छाड़ि, अद्रा नील संताप ॥२८॥
 मन मन छोड़ो ता नग लक्ष्मी चांगुणी होय ।
 सुख दुख गवा कर्मकी, दाली दले न कोय ॥२९॥
 पावन गन वन रत्न वन कवन ज्ञान सुखान ।
 नर नरि सताप वन सब वन भूल समान ॥३०॥
 दीप रत्न पोरो रत्न सब रत्नां की खान ।
 नर नरि सताप रती नीलमें आन ॥३१॥
 दीप रत्न पोरो रत्न नील नील आन ।
 नर नरि सताप रती नर जावे सब भाग ॥३२॥

विनुं डियां छूटे नहीं. यह निश्चय कर मन ।
 हंस हंस के क्युं खरबिये. दाम विगना जन । ३०
 जीव जिंसा करतां थकां. लागे मिष्ट अन्न ।
 जानी हम जागे नहीं विष मिलियो पकवान । ३१
 काम भोग प्यास लगे फल मित्राक ममन ।
 मीठी खाज खुजावतां. पीछे दुःख की खान ॥
 तब जब मंजम डोहियो औषध कड़वी जन ।
 सुख कारण पीछे घणा. निश्चय पड निगवान । ३२
 दाम अगी जल बिदुओ सुख विषयन को ॥
 नवमानर दुःख जल भयो यह संसार स्वभाव ॥ ३३
 चर उत्तम जर्ममे पवन शिखर नहीं वो सुख ।
 निमसुख अन्तर दुःख वसे मोसुख भीदु नर ॥ ३४
 जय लग निमके दण्डका,

गुणे कगे सहित है ते कहै है—१४ चवदे पुरब
११ जगारे अग भणे भणावे ।

पुन.

११ जगारे अग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

॥ रामो लोए सख साहूँ ॥

नमस्कार धावो लोकने दिषे सर्व साधु मुनिराजोने

ते साधु मुनिराज केहवा है नसबीस गुणे
करी सहित है ते कहै है—५ पच महाव्रत पाले ५

इन्दी जीने ४ चार कषाय टाले भाव संचय १५

करण सचय १६ जोग सचय १७ जमावंत १८

वैराग्यवत १९ मन समा धारणिया २० वचन

समा धारणिया २१ काय समाधारणिया २२ नाण

संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५

वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां

समो अहियासे २७

२४ तीर्थकरों के नाम ।

१ पहला श्री कृष्णभनाथजी ।

२ दुजा श्री अजितनाथ स्वामीजी ।

सकल पदार्थों की अविनय भक्ति आद्या
तनादिक करी करार्ह अनुमोदी मन वचन कायाण
करी द्रव्य थी, क्षेत्र थी काल थी भाव थी,
सम्पक प्रकारे विनय भक्ति आराधना पालना
परमना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमे नहीं
करी नहीं करावी नहीं अनुमोदी, तें मुझे धिक्कार
धिक्कार, बारम्बार मिच्छामि दुक्कडं ॥ मेरी मूल
चृक अवगुण अपराध सब माफ करो, वझो मुझे
मैं खभावुं मन वचन कायाये करी ॥

॥ दोहा ॥

मैं अपराधी गुरु देवको । तीन भवन को चोर ॥
ठगूं विराना माल मैं । हा हा कर्म कठोर ॥ १ ॥
कामी कपटी लालची । अपछंदा अविनीत ॥
अविवेकी क्रोधी कठिन । महापापी रणजीत ॥ २ ॥
जे मैं जीव विराधिया । सेव्या पाप अठार ॥
नाथ तुमारी साख सैं । बारम्बार धिक्कार ॥ ३ ॥

मैंने छःकायपणे छठी काय की विराधना करी
 पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय, वाउकाय, वनस्पति-
 काय, वेडन्डिय, तेडन्डिय चौगिन्दिय, पंचेन्द्रिय
 सत्ती असत्ती गर्भेज चौडह प्रकारे समुच्छिम प्रमुख,
 त्रस थावर जीवां की विराधना करी, करावी,
 अनुमोदी मन वचन कायाये करी, उठतां वेमतां,
 सुतां, हालतां, चालतां जञ्ज वस्त्र प्रकानाडिक
 उपकरणे करी उठावतां नरतां, लेतां देतां, वर्ततां
 वर्तावतां, अप्पडिलेहणा सम्बन्धी अप्रमाज्जना,
 सम्बन्धी, अविकी ओछी, विपरीत पुत्रना, संवंगी
 और आहार विहाराडिक नाना प्रकार का पडि-
 लेहणा वणा वणा कर्तव्योमा सम्पत्ता अम-
 प्यत्ता अने निर्गोद आश्रमी अनन्ता जीवांहा,
 जितना प्राण लट्ठा ये सब जीवो का, मैं पाणी
 अपगामी ५ । निच्येहमी बडला हा देणटार ह,
 सब जीव मुक्त प्रते माफ़ करे मेरी मुल ब्रह्म
 अवगुण अगमा सब माफ़ करे देवमी गडमी,
 चौमामी अने मायन्मरिह सम्बन्धी पारम्पार

मित्र, मित्र दुष्ट, वारंवार मे ममा ॥ १५ ॥
गमजो ॥

गाममि सन्ने जावा, न ॥ १६ ॥ गमम ॥ १७ ॥
भित्ति मे सन्ने नगण ॥ १८ ॥ न कणः ॥ १९ ॥

बो दिन न नगण जा दिन म न भे
हाय हा वर बदला म निवारा ॥ भव चागमी
लाभ जीवा योनिकु अनगटान देऊगा, सो दिन
मेरा परम कल्याण का होईगा ॥

॥ दोहा ॥

सुग्न दिया सुग्न होत है, दुःख दिया दुःख होय ॥
आप हर्ष नहीं अवरुं, आपक हर्ष नहीं कोय ॥१॥

इति दृजा पाप मृषावाड सो भूठ बोल्या ॥
क्रोधवशे, मानवशे मायावशे, लोभवशे, हास्ये
करो, भगवशे, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥२॥
निद्रा विरुवा करी, कर्कश कठोर मर्म ही भाषा
बोली, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये

करी मृषावाद झूठ बोल्या, बोलाया, बोलवाने
अनुमोद्या सो मन वचन कायाण करी मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ दोहिरा ॥

धापण मोमा मै किया, करि विश्वासज गान ।

पर नारी धन चोरिया, प्रगट कयो नदी जान ॥ १ ॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार, वाग्वाग् मिच्छामि
दुक्कड़ं । वो दिन मेरा बन्य होवेगा, जिस दिन
सर्वथा प्रकारे मृषावाद का त्याग करूंगा, सो दिन
मेरा परम कल्याण कर होवेगा ॥ २ ॥ श्रीज्ञा
पात्र अदत्तादान है सो अणदीधी वस्तु चोरी
करीने लीगी, ते मोटकी चोरी, लौकिक विन्द,
अथ चोरी घर सम्बन्धी नाना प्रकार का कर्तव्यो
ने उपयोग मयित तथा बिना उपयोगे अदत्तादान
चोरी करी रगड़ रगटाने अनुमोदी मन वचन
कायाणे करी, तथा मेरे सम्बन्धी जान दर्शन,
चागिअ अह नपही श्री नगस्व मुह दोही जग-
आज, रगड़े रगटाने मुझे धिक्कार धिक्कार

बारबार निच्छामि ॥ ७ ॥ न मगं भव
 होवेना जिम दिन सर्वथा प्रकार अउत्ताटान का
 त्याग कलना हो ॥ ८ ॥ न मगं भव तत्प्राण का
 होवेना ॥ ९ ॥ नाया सुख सेवन न विप्रे मन बचन
 अर साया का योग पदनाया नववाय सहित
 ब्रह्मचर्य नहा गलना नववायम अमुद्रपणे प्रवृत्ति
 हुर, आप सेवना अतरा पास सेवनाया, सेवना
 प्रत्ये नया जाण्या तो मन बचन कायाये करी
 मुझे भिक्कार भिक्कार बारबार निच्छामि दुक्कड ॥
 वो दिन भव होवेना जिम दिन म नववाड सहित
 ब्रह्मचर्य शोल रव आराधना सर्वथा प्रकारे
 काम विकारसे निवतना, तो दिन मेरा परम
 कल्याणका होवेना ॥ १० ॥ पाचमा परिग्रह तो
 सचित्त परिग्रह तो दास दासी दुपद चौपद
 तथा मणि पत्थर प्रभुता अनेक प्रकार का है अरु
 अचित्त परिग्रह जो सोना रूपा वस्त्र आभरण
 प्रमुख अनेक वस्तु है, निणसी मनना मुच्छा आप
 जात करो । अंत पर आठिक नव प्रकारका धाम

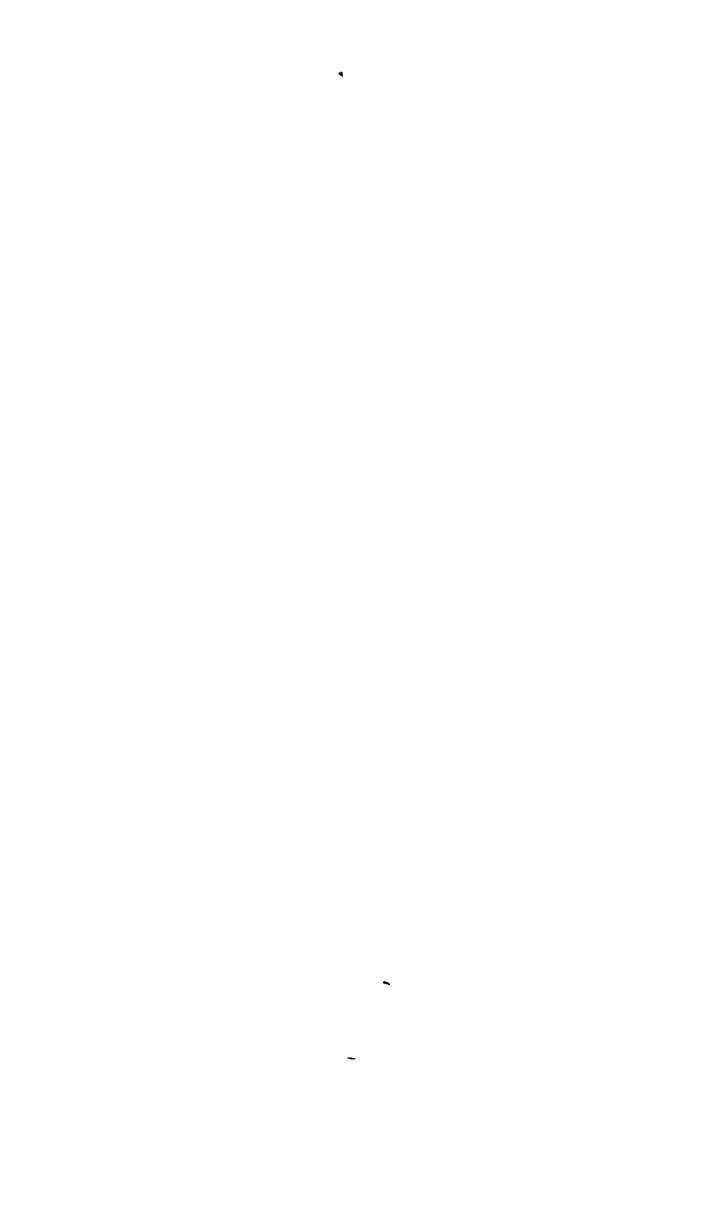
- ३ तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीजी ।
- ४ चौथा श्री अभिनन्दननाथ स्वामीजी ।
- ५ पांचवां श्री सुमतिनाथ स्वामीजी ।
- ६ छट्टा श्री पद्मप्रभु स्वामीजी ।
- ७ सातवां श्री सुपारमनाथ स्वामीजी ।
- ८ आठवां श्री चन्द्रप्रभ स्वामीजी ।
- ९ नवमां श्री सुविधनाथ स्वामीजी ।
- १० दशवां श्री शीतलनाथ स्वामीजी ।
- ११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी ।
- १२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी ।
- १३ तेरमां श्री विमलनाथ स्वामीजी ।
- १४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी ।
- १५ पन्द्रमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी ।
- १६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी ।
- १७ सतरमां श्री कुंथुनाथ स्वामीजी ।
- १८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी ।
- १९ उगणीसमां श्री मल्लिनाथ स्वामीजी ।
- २० बीसमां श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामीजी ।

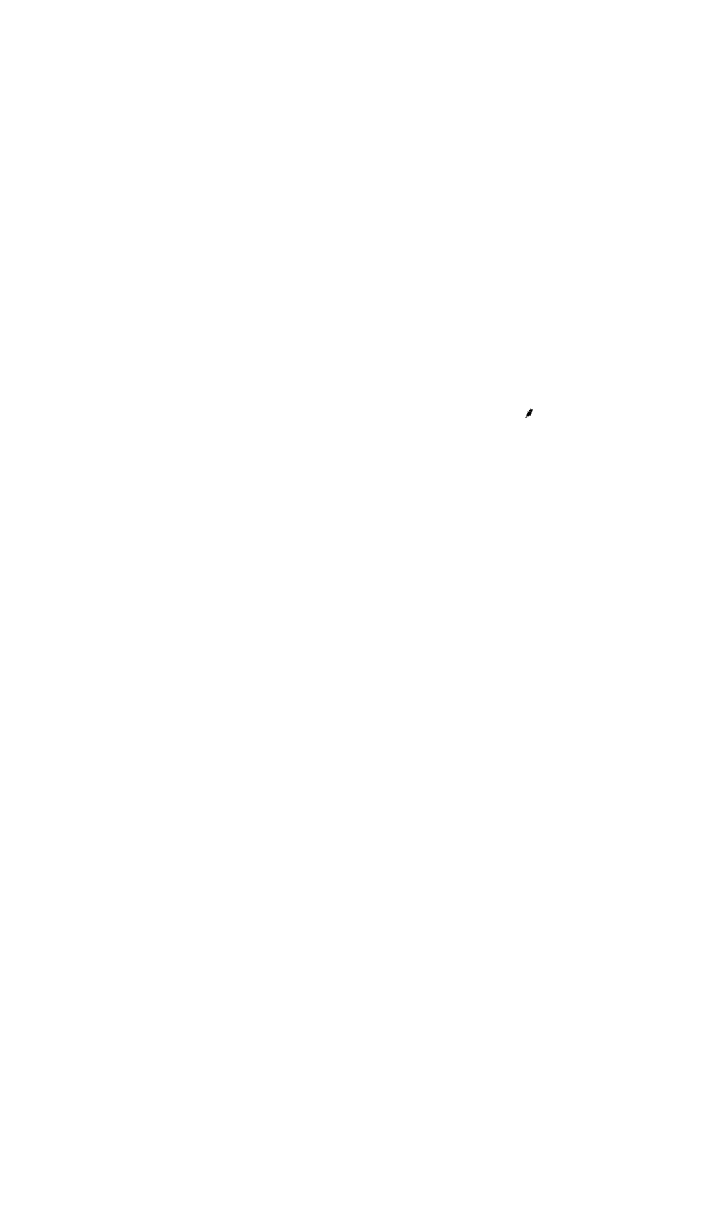
णताँ मन बचने अरु कायावे रुगी मेव्या, मेव-
 राया, अनुमोद्या अये अनये, वर्नअये, कामवजे,
 मोहवजे, न्ववजे, परवजे, डीयावा, गट्या,
 एगोवा, परिमागओवा पुत्तेवा जागरमाणेवा,
 इन भव मे पहेला मल्लवाना अमल्लवाना अनन्ता
 भवों मे भवप्रवण रुगना आज दिन सुयी, राग,
 द्वेष विषय कषाद आदल प्रमादादिक पादमलिक
 प्रपञ्च परगुण परजाप या विकल्प मल रुगी
 ज्ञान की विगमना रुगी उद्यम की विगमना रुगी,
 चाग्रि की विगमना रुगी पाग्रिचाग्रि की
 तप की विगमना रुगी श्रुत श्रुता शीत मन्तोप
 श्रमादिक निज मन्त्र पर विगमना रुगी उपशम,
 विवेक, भव, मल, मल, मल, मल, पटिहमगा,
 ध्यान मानादिक निज मन्त्र पर विगमना रुगी
 शील नर मन्त्र पर विगमना रुगी परम कल्याण-
 कारी इन योगी अरु योगिनी मन बचन
 अरु काया रु रुगी नरु नरु नरु नरु अनुमादी
 नरी । उरी आदरु मन्त्र प्रकाश विधि उपयोग

सक्ति आगम्या नहीं, पाण्या नहीं परम्या
 नहीं, विधि उपयोग सक्ति निराधार पणे यस्या,
 परन्तु आठर सन्सार माव सक्ति सक्ति नहीं
 कस्या, जानसा चोदर, समकित का पात्र, दारतवन
 का साठ कर्मठान का पन्द्रर सलेपणा का पांच, एवं
 नवाणु अतिचार साहे तथा १०४ अतिचार माहे
 तथा साधुजी का १०५ अतिचार माहे तथा ५२
 अनाचार की श्रद्धानादिक से विराधनादिक जो कोई
 अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचारादिक सेव्या, सेवराव्या,
 अनुमोद्या, जाणनां, अजाणनां सन वचन कायाये
 करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार, दारभ्यार मिच्छामि
 दुक्कडं । मैने जीव कूं अजीव सरध्या परुप्या,
 अजीव कूं जीव सरध्या परुप्या धर्म कूं अधर्म
 अरु अधर्म कूं धर्म सरध्या परुप्या तथा साधुजी
 को असाधु और असाधु को साधु सरध्या परुप्या,
 तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतियांजी
 की सेवा भक्ति यथा विधि मानतादिक नहीं करी,
 नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओं

सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कन्या, मुक्ति का
 मार्ग में संसार का मार्ग, वाचन पक्षीम मिथ्यात्व
 मांडिली मिथ्यात्व संन्या सेवाया, अनुमोया,
 मन करी वचन करी कायाये करी, पक्षीम कयाय
 मय्यन्धी, पक्षीम निया मय्यन्धी नेत्रीम अगा-
 तना मय्यन्धी, ग्यान का उगगीठा टोप, वन्दना
 का वक्षीम टोप, सामायिक का वक्षीम टोप, अने
 पोमद का अटारद टोप मय्यन्धी, मन वचन
 कायाये करी जे काटे पार टोप लग्या लग्या,
 अनुमोया न नुन रिझार रिझार वाग्यार मित्रासि
 दुकड । मन्ना मादनीर कमवार का श्रीम
 ग्यानक का मन वचन अने मायास मय्या मयाया,
 अनुमोया । जीरमी नव बाई आठ प्रवन्त
 मन्ना का की विगारमदिक नाना कायक का
 लक्ष्मीम गुन अने वाग्य अने की विगारमदिक
 मन वचन अने काया मन्ना का कायी
 अनुमोया । नया नीन अदुप अदुप का मय्यन्धी
 की, वेन्ना की मय्यन्धी करी अने नीन दुप मय्यन्धी

का लक्षण ही होता है, जिसका नहीं। नती
 वतः हमें में धेड़िले वर देरका मार्ग लोप्या
 मोप्या। नती मान्या अन्तर्गत आपना करी प्रव-
 न्ती, वन्ती आपना करी नती अरु अन्तर्गत की
 निषेधना नहीं करी, वन्ती आपना अरु अन्तर्गत की
 निषेधना करनेका नियम नहीं करता, कलुषना करी
 तथा व प्रकारे जानावरणीय वध का बोल, ऐसे ही
 व प्रकार का दुर्जनावरणीय वध का बोल, यावत्
 अन्तर्गत की अन्तर्गत प्रकृति वन्ध का पञ्चावन कारण
 करी वेगाली प्रकृति पाया की बांणी बंधाई, अनु-
 मोदी मन करी वचन करी कायाये करी, ते हृष्टे
 विह्वल विह्वल मारम्भार निवृत्तानि दुःखं। एक
 एक बोल से लगकर कोटा कोटी यावत् संख्याना,
 असंख्याना अनन्ता अनन्ता बोल नाई, मैं जो
 जान्या योग्य बोलको, सम्यक् प्रकारे जान्या
 नहीं करया नहीं, परया नहीं तथा विपरीतपणे
 अज्ञानादिक करी, कराई अनुमोदी मन वचन
 कायाये करी ते हृष्टे विह्वल विह्वल मारम्भार





॥ देहा ॥

थला अशुद्ध प्रपणा, करी करमना मोय ।
 जाण अजाण पक्षपानसे मिन्यासि दुष्टं मोय ॥१॥
 सच अर्थ ज्ञाणं नही अत्यनुद्धि अणजाण ।
 जिन नापित स्व जाग्रत, अर्थ पाठ परमाण ॥२॥
 देव गुरु धर्म सच कं नव नन्वादिक जोय ।
 अधिका ओला जे कथा मिन्यासि दुष्टं मोय ॥३॥
 हं मगनेलियो हो रणो, नही ज्ञान रम भीज ।
 गुरु सेवा न करि सकं, किस सुभकारज सीभ ॥४॥
 जाणो देखे जे सुणो देवे नवे मोय ।
 अपराधी उन सयन को, बडला देहां मोय ॥ ५ ॥
 गवन करं बुगचा रतन, दख भाव स्व कोय ।
 लोकन में प्रगट करं, इटं पाटं मोय ॥ ६ ॥
 जैन धर्म शुद्ध पायको, वस्तु विषय कपाय ।
 गह अचभा हो रक्षा, जल में लागी लाय ॥ ७ ॥
 जितनी वस्तु जगत में, नीच नीच में नीच ।
 स्व में में पापी बुरो, फसं मोह के बीच ॥ ८ ॥

२१. ऋषीन्ममा श्री नमिनाथ स्वामीजी ।
 २२. न बोममा श्री अग्निनेमनाथ स्वामीजी ।
 २३. मेयोममा श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी ।
 २४. नौमोममा श्री वर्धमान स्वामीजी ।

११. नरहरों के नाम :

- | | |
|--------------|---------------|
| १. इन्द्रभनि | ६. मण्डित |
| २. अग्निभनि | ७. मौर्यपुत्र |
| ३. वायुभनि | ८. अकम्पित |
| ४. वाक् | ९. अनलभ्राता |
| ५. सुभमा | १०. मेतार्य |

११. प्रभास

१२. सतियों के नाम :

- | | |
|----------------|-------------|
| १. ब्राह्मी | ६. कौशल्या |
| २. सुन्दरी | ७. सुगावती |
| ३. चन्द्रनमाला | ८. सुलला |
| ४. राजेनती | ९. सीता |
| ५. शोषदी | १०. सुभद्रा |

बुरो बुरा सच को कहे, धुरा न ठीमे कोय ।
जो घट सोभं आपणो तं सोय भुरा न कोय ॥१४॥
कामी कपटी लालची, कठिन लोभ को दाम ।
तुम पारस परमंगधी, सुवरन भाजुं स्वाम ॥१५॥

॥ श्लोक ॥

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संख्यर
समगतं । हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो
तुम शरणागतं प्रभु आयो तुम शरणागत ॥१६॥

॥ दोहा ॥

नहिं विद्या नहि वचन बल, नहि धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादि को, भरिया रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण थी, पाऊं चित्त समाध ॥ १८॥
कहेवा मे आवे नही, अवगुण भखो अनन्त ।
लिखवा मे क्युं कर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१९॥

एक कनक अरु कानिनी, दो नोटी नगर ।
उध्या था जिन भजनकं, विच में लिया नर ॥

॥ स्तुति ॥

मैं नदापारी छांड के मंनार जग छात्री न
विहार करूं, आगला कुछ धोय कीच कर गेव
पीच रहूं, विषय नुच चार नर प्रभुता बरगी
है । कनक ककीगी ऐनी अनीगी की जान रह
काहेकु विहार जिर रागरी उतारी है ॥ १० ॥

॥ स्तुति ॥

न्यागन कर मंदर करूं, विषय बनन जिन आशर ।
तुलसी ए मुक्त भक्ति हूं, बार बार विहार ॥ ११ ॥
गग उधे दो बीज है, कर्म बंध कर देन ।
इसकी कानिनी में ब-सो उठे नरो प्रभेन ॥ १२ ॥
तन ब-सो गडरी विषे, नरु जियो नर माहि ।
निह विजय ने जियो नर बडे कहु माहि ॥ १३ ॥

बुरो बुरो सब को कहे, दुरो न दीसे कोय ।
जो घट सोभं आपणो, तो मोसं दुरो न कोय ॥१४॥
कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम ।
तुम पारस परसंगधी, सुवरन धाशुं स्वाम ॥१५॥

॥ श्लोक ॥

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संव्यर
समगतं । हे दयाल कृपाल करणानिधि, आयो
तुम शरणागतं प्रभु आयो तुम शरणागतं ॥१६॥

॥ दोहा ॥

नहि विद्या नहि वचन बल, नहि धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादि को, भरिया रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण धी, पाजं चित्त समाध ॥ १८॥
कहेवा मे आवे नही, अवगुण भखो अनन्त ।
लिखवा मे क्युं कर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१९॥

गाननपति बडेमानजी, तुम मग मेरी डोड ।
 जैसे महुड जहाज बिना बलन पार न डोर ॥२६॥
 भव व्रमण सत्तार तुम नाका बार न पार ।
 निर्लोनी महुगुर बिना कवण उतारे पार ॥२७॥
 भवनागर सत्तार मे दिश श्री जिनराज ।
 उगम करि पटुने तिरे बैठी वरुष जहाज ॥२८॥
 पतित उडारन नाथजी असनो चिन्ह विचार ।
 नल नुक सब ग्हाथरी, नमिसे मागवार ॥ २९ ॥
 नाक कगे सब ग्हाथरा आज नलकना शोष ।
 दोन दयाल दियो हसे अडा शील नंतोष ॥३०॥
 देव अरिहत गुरु निग्रथ संवर निर्जरा धर्म ।
 केवली भापित शान्त ए, पही जैन मन नर्म ॥३१॥
 इस्त अपार सत्तार मे शरण नहीं अर कोय ।
 पाने तुम पद भगत ही भक्त सदाई होय ॥३२॥
 छूटं पिछला पापथी, नवा न माथं कोय ।
 ओ गुरुदेव प्रसादनों, सकल मनोरथ होय ॥३३॥
 आरंभ परिग्रह नजि करो, नमजित व्रत आराध ।
 अंत अवसर आलोपके अपराध चित्त नमाथ ॥३४॥

॥ नमोकार सह्य पचक्खाण ॥

उग्गद चरे नमोकार सह्य पचक्खामि,
चउविहंपि आहार अत्तण पाण ताइम साइम
अत्तथणा भोगेण सहसागरेण वोत्तिरामि ।

॥ पोरसिथंका पचक्खाण ॥

पोरसिथ पचक्खामि उग्गद चरे चउविहंपि
आहारं अत्तण पाण ताइम साइमं, अत्तथणा
भोगेणं सहसागारेणं पच्छत्त कल्लेणं, दित्तानो-
हेणं ताहुवण्णेणं, तच्च तमाहिवत्तियागारेण
वोत्तिरामि ।

॥ एगासणंका पचक्खाण ॥

एगासण पचक्खामि निविहंपि आहारं अत्तण
साइम साइमं, अत्तथणा भोगेणं, सहसागारेणं
सागारियागारेण आउट्ठमत्तारेणं, गुरु अण्डु-
डाणेणं महत्तरागारेणं तच्च तमाहिवत्तियागारेण,
वोत्तिरामि ।

११ जैज्या

१४ चेलणा

१२ कुन्ती

१५ प्रभावती

१३ दमयन्ती

१६ पद्मावती

चत्तारि मंगलं की पाटी ।

चत्तारि मंगलं. अग्निन्ता मंगलं. मिट्टामंगलं,
माहुमंगलं केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं । चत्तारि
लोगुत्तमा, अग्निन्ता लोगुत्तमा. मिट्टालोगुत्तमा,
माहु लोगुत्तमा. केवलिपन्नतो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि मरणं पवज्जामि अग्निन्ता मरणं पवज्जामि,
मिट्टामरणं पवज्जामि माहुमरणं पवज्जामि केवलि
पन्नतो धम्मो मरणं पवज्जामि ।

ए चार शरणा मगा और मगा नही कोय ।

जो नर नागी आदरे अक्षय अमर पद होय ॥

अथ श्री महाकु कन्दर्प ।

नमं अनंत चौबीसी. अप्पमादिक महावीर ।
आर्य श्रेष्ठ मां वाली धर्म नी मीर ॥१॥ महा अनुत्तम
बली नर गुरुवीर ने श्रीर । तीर्थ प्रवर्त्तात्री, पद्मोता

उपवास करने उपवास का पोसा पर
तिणको काई फल ११ १

उ०—हो गौतमजी ११ मा अरु ११ मा ११
लाख ११ हजार १ से ११ पत्थोपम भाजरो
नारकी नो आयु तृटे । देवता नो शुभ आयुष
बांधे ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान, कोई पोसा सतिन पोरसी करे
तिणको काई फल होवे ? ^{अधिका} ^{सोमसिवाय} ^{जेर्री} ^{को फल}

उ०—हो गौतम जी ३४६ काड़ २२ लाख २२
हजार २२२ पाल्योपम भाजरो नारकीनो
आयुषो तृटे देवतानो शुभ आयुष बांधे
॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान कोई आधा मुहरत संवर करे
तिणको काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ४६ करोड़ २६ लाख ६१
हजार ६ से पत्थोपम भाजरो नारकी नो
आयुषो तृटे देवता नो शुभ आयुष
बांधे ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक समायक करे निणको
काई फल होवे ?

उ०—हो गीतमजी ६० कोइ ५६ लाख २५ हजार
६ सँ २५ पत्तोपम साजगे नारकीनो
आउपो नृदे देवताना गृभ आयुष थावे ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान कोई बड़ी बड़ीना पचस्वान
करे निणको काई फल होवे ?

उ०—हो गीतमजी २ कोइ १३ हजार १०८
पत्तोपम साजगे नारकीनो आउपो नृदे
देवतानो गृभ आयुष थावे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार मन्त्र को
ध्यान करे निणको काई फल होवे ?

उ०—हो गीतमजी १६ लाख ३३ हजार २३३
पत्तोपम साजगे नारकीनो आउपो नृदे
देवताना गृभ आयुष थावे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अष्टवर्षी गणे निणको
काई फल होवे ?

उ०—हो गीतमजी २२२२ ३० सात्तोपम साजगे

उत्कृष्टा पांन सौ सागरोपम भोजेरो नार-
कीनो आठषो तूटे देवतानो शुभ आयुष
षांघे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकारसी करे
निणको काई होवे :

उ०—हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आठषो
तूटे देवतानो शुभ आयुष षांघे ॥ ८ ॥

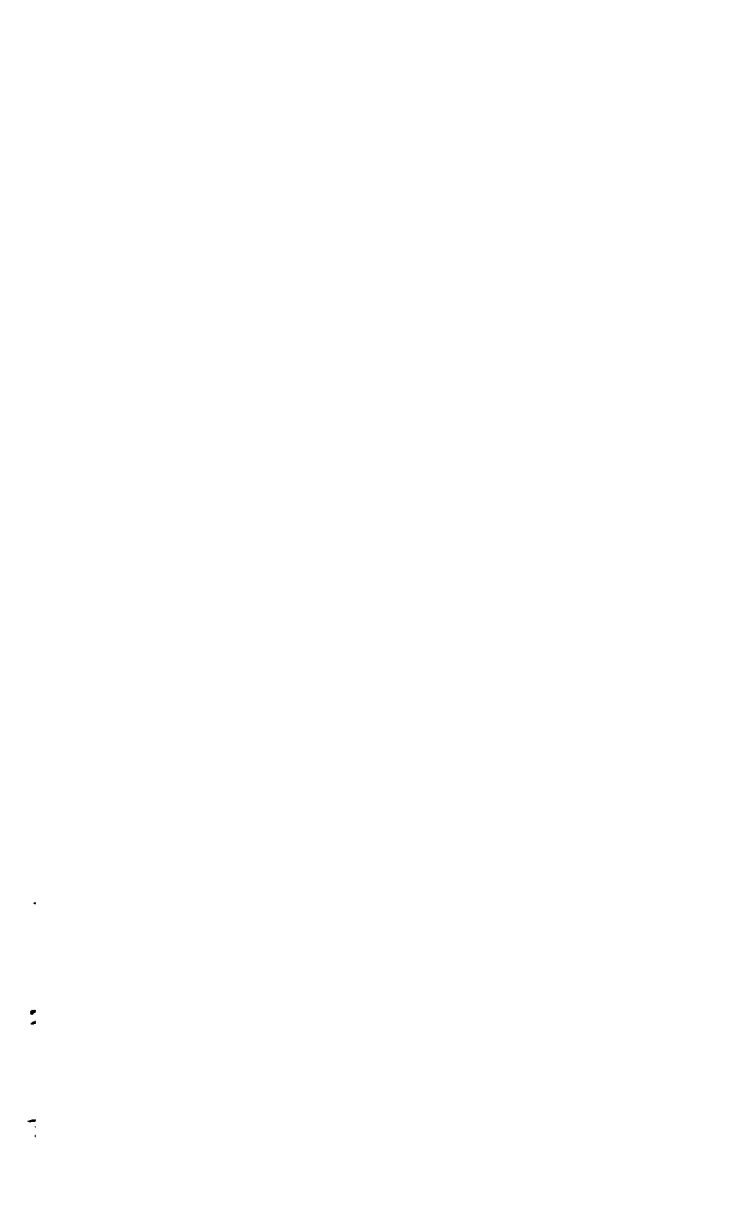
प्र०—हो भगवान कोई पोरसी करे निणको काई
फल होवे :

उ०—हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आठषो
तूटे देवता नो शुभ आयुष षांघे ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पोरसी करे निणको
काई फल होवे :

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकी नो
आठषो तूटे देवतानो शुभ आयुष
षांघे ॥ १० ॥

प्र०—हो भगवान कोई तीन पोरसी करे निणको
काई फल होवे :



१ महीना का—३३६५७०० सामउसाम ॥ ५ ॥

३ महीना का—१०१८७१०० सामउसाम ॥ ६ ॥

६ महीने का—२०३७४००० सामउसाम ॥ ७ ॥

८ महीने का—३०५६१३०० सामउसाम ॥ ८ ॥

१२ महीनेका—४०७४८४०० सामउसाम जाणवो ६

ॐ इति ॐ

पृथ्वीकाय का जीव एक मुद्रान्त में १०८०४

जनम मरण करे ॥ १ ॥

अपकाय का जीव एक मुद्रान्त में १०८०४

जनम मरण करे ॥ २ ॥

तेजकाय का जीव एक मुद्रान्त में १०८०४

जनम मरण करे ॥ ३ ॥

वायुकाय का जीव एक मुद्रान्त में १०८०४

जनम मरण करे ॥ ४ ॥

प्रत्येक धनधानिकाय का जीव एक मुद्रान्त में

३००० जनम मरण करे ॥ ५ ॥

साधारण वनस्पतिकाय का जीव एक सुहृत् में ६५५३६ जनम मरण करे ॥ ६ ॥

बेहन्द्री जीव एक सुहृत् में ८० जनम मरण करे ॥ ७ ॥

तेहन्द्री जीव एक सुहृत् में ६० जनम मरण करे ॥ ८ ॥

चऊहन्द्री जीव एक सुहृत् में ४० जनम मरण करे ॥ ९ ॥

असती पंचेन्द्री जीव एक सुहृत् में २४ जनम मरण करे ॥ १० ॥

सती पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

॥ इति सासडसाम को थोकडो सन्पूर्णम् ॥

॥ मोक्ष मार्गनो थोकडो प्रारम्भी ए छे ॥

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणा नमस्कार करके श्रवण भाव
श्री महावीर देवने पूछना हुआ ।

प्र०—हो भगवान् । जीव कर्मोंके वश किम रमरह्यो ?

“हो गौतमजी जिम तिलीमें तेल रमरह्यो”

“जिम सेलड़ी में रस रमरह्यो”

“जिम डही में मक्खन रमरह्यो”

“जिम पाषाणमें वातु रमरह्यो”

“जिम फलमें वामना रस रही

‘ जिम खर पृथ्वी में तीगल रमरह्यो”

“जिम यो जीव कर्मों के वश रमरह्यो छे”

प्र०—हो भगवान् यो जीव किम करीने सुगत जावसी ?

उ० हो गौतमजी । जिम फाँटे समारी पुष्प समार की कला केलवी न जिम तिली में तेल काट ।

सेलड़ी में स रस फाट ।

डही में स माखन फाट ।

कट में स अन्न फाट ।

पाषाण में स वातु फाट ।

खर पृथ्वी में स तीगल काटे ।

निम यो जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य तप,
अंगीकार करीने सुगत जावसी ।

प्र०—हो भगवान् । जीव जीव सगला सुगत में
जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ
नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । काई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । जीवका दो भेद एक सूक्ष्म
इतरा यादर । ते यादर कुं सुगति छे सूक्ष्म
कुं नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । यादर यादर जीव सगला
सुगत में जावेगा सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला
अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । काई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । यादर के दो भेद एक ब्रह्म

दृजा म्यावर त्रमकुं मुगती छे म्यावर कुं
मुगत नही ।

प्र०—हो भगवान् । त्रम त्रम मगला मुगत में
जावेगा, म्यावर २ मगला अटे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अटे समटे यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् काटे कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । त्रमका दो भेद (१) पंचेन्द्री
ने (२) तीन विकलेन्द्री । पंचेन्द्री कुं मुगत
छे तीन विकलेन्द्री कुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान् पंचेन्द्री २ मगला मुगत जावेगा
तिन विकलेन्द्री २ मगला अटे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अटे समटे यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् काटे कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । पंचेन्द्री का दो भेद एक
मही दृजा मगला । पंचेन्द्री का मुगत छे
त्रमकी कुं मुगत नहीं ।

भवजल तीर ॥ २ ॥ सीमंभर प्रमल, जगन्म नी-
 क्य वीस । छि अहीहीपमा, जगन्मा जगदीश
 ॥ ३ ॥ एक मां न भितर, उत्कृष्टा पद जगीश ।
 धन्य मोदा प्रभुजी, जेहेन नमार्नं कीश ॥ ४ ॥
 कवली दीप कोही उत्कृष्टा नव कोइ । मुनि दीप
 सरस कोही, उत्कृष्ट नव सहस कोइ ॥ ५ ॥
 विन्ने विदेहें म, मोदा नपरावी घोर । भावे करी
 वरुं . टाळे भव नी खोइ ॥ ६ ॥ जौवीसे जिन न
 सवला न गणधार । सवदेसे न बावन, न प्रणम
 सुखकार ॥ ७ ॥ जिन आसिन नायक, धन्य श्री
 वीर जिगद । गीतमादिक गणधार, वलींगो
 आगद ॥ ८ ॥ श्री ऋषभदेव ना भरनादिक सौ
 पून । वैराग्य मन आणी, संघम लियो अर्धभन
 ॥ ९ ॥ कवल उपराजी, करि करणी करन
 जिनमन दीपावी, सवला मोक्ष पडन ॥ १० ॥ श्री
 भरोभर ना, हुआ पाटोधार आठ । आदिन्य
 जगदीक पहीना विवधुर वाट ॥ ११ ॥ श्री जिन
 अन्तर ना, हुआ पाट असंख्य । मुनि मुक्ति पहीना

प्र०—हो भगवान् ! मली २ सगला हुगत जावेगा
असली २ सगला अडे रह जावेगा :

उ०—हो गौतमजी ! नो अडे समडे, यो अर्थ
समर्थ नही ।

प्र०—हो भगवान् काई कारण ते :

उ०—हो गौतमजी मलीका दो भेद, एक मनुष्य
दूजा निर्यञ्ज, मनुष्य कुंनो हुगती छे निर्यञ्ज
कुं हुगती नही ।

प्र०—हो भगवान् मनुष्य २ सगला हुगत में
जावेगा निर्यञ्ज निर्यञ्ज अडे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अडे समडे, यो अर्थ समर्थ
नही ।

प्र०—हो भगवान् काई कारण ते :

उ०—हो गौतमजी ! मनुष्य का दो भेद एक
समवृष्टि दूजा मिथ्यावृष्टि । समवृष्टि कुं
हुगत छे मिथ्यावृष्टि कुं हुगत नही ।

प्र०—हो भगवान् ! समवृष्टि २ सगला हुगत में
जावेगा मिथ्यावृष्टि २ अडे रह जावेगा ?

प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । सर्वव्रती का दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी अप्रमादी कुं मुग्त हे प्रमादी कुं मुग्त नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । अप्रमादी अप्रमादी सगला मुग्त मे जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?

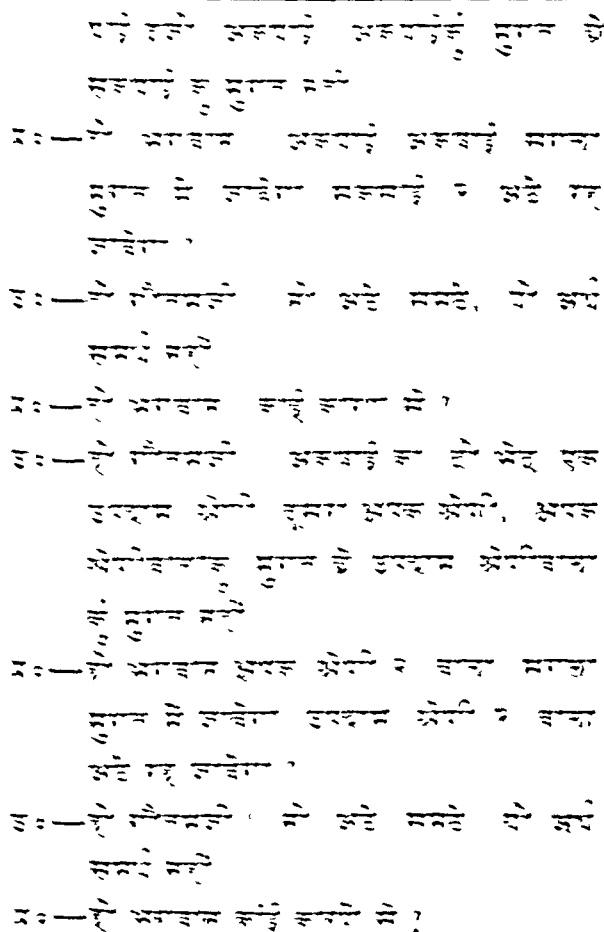
उ०—हो गौतमजी । अप्रमादी का दो भेद एक क्रियावादी दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुग्त हे अक्रियावादी कुं मुग्त नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । क्रियावादी २ सगला मुग्तमे जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?





आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१८—अपर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो मीलतो
थको जीव कर्मा की कोड लपारे, उन्कूटी
रमायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१९—सत्र सिद्धांतना विनय भगती उन्कूट भाव
में करतो थको जीव कर्मा की कोड लपारे,
उन्कूटी रमायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र
बांधे ।

२०—ग्राम नगर पुर पाटन विचरता, विद्यात
उन्वापतां समगत वापतां जीव कर्मा की
कोड लपारे उन्कूटी रमायण आवे तो
तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

॥ इति सम्पण्णम् ॥

दाली कर्म नो बंका ॥ १० ॥ धन्य कपिल मुनिवर,
 नमि नमं अणनार । जेणे तन्त्रण न्यायो, महन्त्र
 रमणि परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर हरकेली, चित्त
 मुनीश्वर भार । गुड संयम पाली. पान्या भव नो
 पार ॥ १४ ॥ बली डगुकार राजा, वर कमलावती
 नार । भगु ने जशा, नेहना दाय कुनार ॥ १५ ॥
 छये छति ऋद्धि छांड़ी ने, लीयो संयम भार । डम
 अल्प कालमां, पान्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥ बली
 संजती राजा, द्विग आदिदे जाय । मुनिवर
 गदभाली. आग्यो मारग टाय ॥ १७ ॥ चारित्र
 छेई ने. नेट्या गुन ना पाय । श्रुती राज्ञपीश्वर,
 चर्चा करी चित्त लाय ॥ १८ ॥ बली दश चक्रवर्ति
 राज्य रमणी ऋद्धि छोड़ । दश मुक्ति पद्दोता, कुल
 कुल ने शोभा चोड़ ॥ १९ ॥ इण अयमपिणी मां.
 आठ राम गया मोक्ष । बलभद्र मुनीश्वर गया,
 पंचम देवलोका ॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर
 बांध्या धरि मान । पछे इन्द्र द्वायो. दियो छः काय
 अनय दान ॥ २१ ॥ करकांड प्रमुन्व, चार प्रत्येक

અથ કર્મ વિપાક ધર્મ કથાના

ચોલ લિખ્યતે ।

પુત્ર કે ધર્મ કથા માઠી સાડા ત્રીન
। છે નિળ માહે દોય કોડ સોલે
તે પાંચસૌરો યોકડો, નિળ માંહી
મા કથા ચાલી તે માંહેલો ભાવ
જલ સરપ માંડિયો છે ।

હો ત્વામી ? કાનો હોય તે કિસા
ન ને ઉદે ।

શેષ્ય ? જે પૂર્વે અગલા ભવ માહે
જલ વીજ વીધિયા (તોડિયા) તેના
કાનો હોય છે ।

શિષ્ય—આંગો હોય તે કોણના કર્મ થી હોય ?

ગુરુ—જેણે પૂર્વે વ્રત ધાવર જીવો ને પાળી માહે
હુબોઈને માલ્યા તેના કારણથી અધત્વ પાવે ।

गुरु०—जे पूर्वे पशुपक्षी जीवोने भंभावकरतांग
लागलो करतो पकेन्द्री नी जड ग्वणतो
तेना प्रतापे ।

शि०—गूंगो, घोवड़ो होयते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे संजमवत, गुणवंत, शीलवंत जीवनी
पुठपाछे चावत (ग्वोटो आल) करी तेना
प्रतापे ।

शि०—खोज्यो होय ते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे वेदगिरी का काम कीधा
तेना प्रतापे ।

शि०—बेहेरो पात्रलो थाय ते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूरवे घणी वनस्पती स्वहाते करीने
छेदी तेना कारणसू ते जीव बेहेरो पात्रलो
उपजे ।

शि०—गूंगो टोलो होयते किंसा कर्मधी होय ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे चार तीर्थना अवगुण कखा
तेना प्रतापे ।

शि०—गलत कोडी जीव उपजे ते किंसा कर्मधी ?

શિ૦—શરીર ને ત્રિપે મગર રોગ ઉપજે તે કયાં
કર્મ ને ઉદે ઉપજે ને ।

ગુહ૦—જે પરદે સ્વરાને કરો પચેન્દી જીવો ને
હાણિયા તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—દુષ્પનો ગાના કરે અનેરાને દ્રવ્ય પામે તે
કિત્તા કરમને ઉદે :

ગુહ૦—જે એવે અનેરાને દ્રવ્યનો અંતરાય પાડિયા
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—ફડમાલા રોગ હોય તે કિત્તા કરમને ઉદે ?

ગુહ૦—જે એવે વળા માહલા મારિયા તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—શરીરને બિલે પાથરી રોગ હોય તે કિત્તા
કર્મને ઉદે :

ગુહ૦—જે પૂર્વમંત્રે નૈધુન વળા લેવિયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—અર્શ રોગ હોય તે કિત્તા કરમને ઉદે ?

ગુહ૦—જેણે પુરવે ધુળો ઘાલો વળા જીવાને
લતાવિયા તેના પ્રતાપે ?

शि० — शरीरने चिपे वाला निकले ने हिमा रुम
ने उड़े ?

गु० — जे उखे बगल जीवाग डावल नांही शोना
बगलची नेना प्रतापे ।

शि० — शरीरने चिपे गेग डीने नही जीव अनेक
हु न रावे ने हिमा रुम ने उड़े ?

गु० — ज उव कृष्टो बोली लाच लीया नेना
प्रतापे ।

शि० — नजामना विजोग थाव ने हिमा रुमने
उड़े ।

गु० — जे उखे माया कष्टाई तथा निच कष्टाई
हुनप्रता कीरी नेना प्रतापे !

शि० — शरीर हुनने गमे ने हिमा रुमने उड़े ?

गु० — जख बगल कष्ट बीज मोडिया गोले ह्य
दयाला नेना प्रतापे !

शि० — जीव उख कडे अगरी नजामना उड़े
ने हिमा रुमने उड़े ।

गु० — जे उख कष्टाई तथा नज की ता नेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे पाठो रोग भाय ते किसान
करमने उदे ?

गु०—जेणे पूरवे वावड्या कुंवा म्णान्या तेना
प्रतापे ।

शि०—कोई जीव मीठो बोले अनेराने कडवो लागे
ते किसान करमने उदे ?

गु०—जेणे पूरवे पंचेन्द्री जीवना आहार कीधा
तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे खाज फटणी चाले ते किसान
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा तेन्द्री जीव ताडवे अगन
पाणी माहे नाखी मराविया तेना प्रतापे ।

शि०—मिध्या शास्त्र मणे प्रपंच करे सो किसान
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा जीव उपर क्रोध कीधो भूठो
आल दीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव सूत्र मणवा वयावच करे पडे

ભળેલા ચાન્દાગ અવગુણ વાડ બોલે તે
કિસ્મા કર્મને ઉદે ?

ગુરુ—જેણે પરચે વી મેન નેલના ચામન ઉવાડા
મેલિયા માટે જીવ જગાવિયા તેના પ્રતાપે ।

શિષ્ય—સ્ત્રી નપુંસક થાય તે કિસ્મા કર્મને ઉદે ?

ગુરુ—જે પરચે માયા કપડાંદે ફગી દ્રવ્ય સ્ત્રીને
નદી ગટ્ટે તેના પ્રતાપે ?

શિષ્ય—ફોડિયો થાય તે કિસ્મા કર્મને ઉદે ?

ગુરુ—જે પરચે પુન્ધીજાવના ઉદન નેદન સીયા
તેના પ્રતાપે ।

શિષ્ય—ગમીયન વિષ જુંવા પડે તે કિસ્મા કર્મને ?

ગુરુ—જે પરચે નાડ્યાના આશર સીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિષ્ય—ફોડ જીવ ના ફરે જવ ફરે મરનાય ફરે
વર પો સીયો અલગ તે મુશવે નરી ન
કિસ્મા કર્મને ઉદે ?

ગુરુ—જે પરચે નરિન્દાસ ફગી જનન વિષ ફા-
દે ના તેના પ્રતાપે ।

शि०—तप जप न हुवे ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जेणे पुरवे तप जपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव बोलिआ अनेराने सुहावे नही ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पुरवे वचन कलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने अशुभ वर्ण पामे ते किंसा कर्मने उदे ।

गु०—जे पूरवे रूपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कूडो आल माथे आवे ते किंसा कर्म ने उदे ?

गु०—जे पूरवे अठारमो पापस्थानक बार बार घणो सेवियो तेना प्रतापे ।

शि०—आपणे अण कीना अपयश अपकीरत बने ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पूरवे अस्त्री हती तेवारे सासु नणंद नाई

मो० । मुनि मुक्ति पौता जीता कर्म मटा जोध
 ॥ २२ ॥ धन्य मोठा मुनिवर, मुगधुत्र जगीश ।
 मुनिवर अनायो जीता राग ने रीता ॥ २३ ॥ बली
 समुद्रपाल मुनि, गजेनाने रहनेम । केशी ने गौतम
 पन्या शिवदुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजय घोष
 मुनि, जयघोष बली जाण । ओगर्गाचार्य, पहोता
 लै निर्वाण ॥ २५ ॥ ओ उत्तराध्ययन मां, जिनवर
 किया बलाण । शुद्ध मन से ध्यावो, मन में धीरज
 आण ॥ २६ ॥ बली दानक सन्यासी, राख्यो
 गौतम स्नेह । मरावीर समीपे पच महावन लेह
 ॥ २७ ॥ नव कठिन करीने भोली अपणी देह ।
 गया अच्युत देवलोकें बवी लेते भव छेह ॥ २८ ॥
 बली ऋषभदत्त मुनि लेऊ लुद्धराण तार । शिव-
 राज कृषिखर धन्य गानेय अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध
 सयम पाली पान्या केवल तार । ए चारे मुनिवर,
 पहोता मोक्ष मभार ॥ ३० ॥ भगवन्तनी नाना,
 धन्य धन्य तनी देवानन्दा । बली तनी जयन्ति,
 छोड दिया घर कन्दा ॥ ३१ ॥ तनी मुक्ति पहोती,

शि०—कोई जीव बोलहो बलिरो अशुभ अणगमतो
संधान पामे ते किस्सा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे सुमर संधान माहे मद कीनो
घणी हसा कीधी मद करी घणा जीवाने
तास दीधो तेना प्रतापे ।

शि०—चतुष्प सुरससंधान पामे ते किस्सा करमने
उदे ?

गु०—जे पूरवे पर जीवने मीठा बोले, रक्षा करै,
पापना गीन बरजे तेना प्रतापे ।

शि०—पंचेन्द्री जीव बलहीण उपजे ते किस्सा
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे मांसनो आहार कीधी
तेना प्रतापे ।

शि०—पुरुष लिंग छेदी स्त्री लिंग पामे ते किस्सा
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे सतरमो पाप स्थानक माया मोसो
पणो सेवियो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे अमजी पचेन्द्री जीव हणिघा
हणाविघा तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव साधु साधवी माहे बालो लागे
नहीं ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे पचेन्द्री तरुण मनुष्य विराधिया
तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव संसारी जीवने तथा माता
पिताने वालो न लागे ते किसा करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे घणा विकलेन्द्री जीव विराधिया
तेना प्रतापे ।

शि०—पुरुषने तरुणपणे स्त्रीनो वियोग धाय ते
किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे अक्रंद भावे कंदर्प सेविघा तेना
प्रतापे ।

शि०—भणी भणीयानीनो तरुणपणे विजोग
धाय ते किसा करमने उदे ?



शि०—निम्नी लोको आवे ते निम्ना करम ने
उदे ।

सु०—जे पूरवे लोकागती धन धनार्ह तेना प्रनापे ।

शि०—पंचैन्ती पत्नी पामिनें पत्ने दोलता धुक
गीहगीहण आवे तामो देवता दुरगंछा
करे ते किन्ना करम ने उदे ?

सु०—जे पणवे मोरस लीह कचगे वना डीन सुधी
पण्डो करिने पांनड धारीया तेना प्रनापे ।

शि०—वना महुप्य सहित पाणी माये नाव डूबी
करे ते किन्ना करमने उदे ?

सु०—जे पणवे वेसाय मां वेसाय कीधो तथा
वना डीन रात्रीने डेरियो तथा ताज-
मना मां उवायामवन पण्डा कीधा
महुप्यने करे कीधा तेना प्रनापे ।

शि०—कोई जीव वना मागवानी बांवा करे ते
किन्ना करमने उदे ?

सु०—जे पणवे वना ताजमना हुगरीया तेना
प्रनापे ।

गु०—जे पुरवे घणा वन काटिया कटाविया तेना प्रतापे ।

शि०—घणो कांपणो पामे ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पुरवे घणा कपामीया तोडीया सेलडी घणी पीलिया तेना प्रतापे ।

शि०—तरुणपणे ढांत पडे माथारा केश धोला थाय ते किसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पुरवे कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटाची तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे घणा गुमडा थाय भरीया नीगल होय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे आगवा फल चीरीनें लुणसुं भरीया तेना प्रतापे ।

शि०—ढामपणो पामे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे मागवण (लुणी) इकठो घणा दिनासुं तपावीयो तेना प्रतापे ।

शि०—नासुर रोग थाय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे ।

बली ते वीरनी नन्द । महा मती सुदर्शना वणी
 सतियांना वृन्द ॥३२॥ बली कार्तिक ठोटे, पडिमां
 वही शूरवीर । जिभ्यो मोगं ऊपर, तापस बलती
 खीर ॥ ३३ ॥ पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र
 आठ धीर । मरी हुआ सकेंद्र चवी लेसे भव
 तीर ॥ ३४ ॥ बली राय उडाई, दियो भाणेजन
 राज । पछी चारित्र लेई ने, साखा आत्म काज ॥
 गंगदत्त मुनि आनन्द, तरणतारण जिहाज । कुशल
 मुनि रोहो, दियो वणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुन-
 क्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार । आराधक
 हुडने, गया देवलोक मभार ॥ ३७ ॥ चवि मुक्ति
 जासे. बलि सिंह मुनीश्वर सार । बीजा पण मुनिवर,
 भगवतीमां अधिकार ॥३८॥ श्रेणिकना वेटा, मोटा
 मुनिवर मेव । तजी आठ अन्तेउरी, आप्यो मन
 संवेगी ॥ ३९ ॥ वीर पै व्रत लेइने, बांधी तपनी
 तेग । गया विजय विमाणे, चवि लेसे शिव वेग
 ॥ ४० ॥ धन्य वावर्चा पुत्र, तजी वत्रिसे नार ।
 तेनी साथे निकल्या. पुन्य एक हजार ॥४१॥ सुखदेव

पिण तेहना पावे अवगुण माने ते किता
करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे रांधनरो काम होयो तेना प्रतापे :

शि०—कोई जीव वस्तु घानी लेंहेने तूपे तेहनी
चुगली करं ते किता करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे काजी नील फल अणावोने ताडाना
अंगार उपर धरीया तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने सोले रोग साये उपजे ते किता
करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे सेलडीरा कटका करीने घणा घाणी
माहे पीलिया घणा गांन नगर उजाड
कखा, मारीया, घाया वसाया तेना
प्रतापे ।

शि०—कोई जीव गर्न माहे उपजे पछे जन्मनी
वेला आडो आवे तेहने कासीने काडे ते
किता करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे कत्तार्ना हानसुं दान लीया तेना
प्रतापे ।

शि०—कोई जीव गने नाहे उपजे पड़े गलतो
जाय ने किना करमने उडे ?

गु०—जे उग्गे मायुने कुटो आल डीयो आमुन्तो
आजग डीयो नेना दतावे ।

शि०—कोई स्त्री ने बार बरमगे छेडो रहे ने
किना करमने उडे ?

गु०—जे उग्गे दगा देमाव पकटा कीया दगा फल
गालीने डोलिया जीव नगविया नेना दतावे ।

शि०—कोई स्त्रीने नेगीज गने चवीने केर नेगीज
कुटो गने नाहे उपजे पड़े चोवीम बरे
एक रह न किना करमने उडे ?

गु०—जे उग्गे दगा मैयुन मेविया नीत्र नहि
नत मेयन बायान माज डीयो मायग
करम कीया नेना दतावे ।

शि०—एड्या डीया नव गेग बाय नया मग मे
डीया नहु नहु कर न किना करमने उडे ।

गु०—जे उग्गे दगा मैयुन मेविया नीत्र नहि
नत मेयन बायान माज डीयो मायग
करम कीया नेना दतावे ।

શિઃ—કોઈ જીવ ભલે તરે જન્મ પામેને પણે
કમાઈ માટી કરે રાજદત્ત પદ્મીને હુ નદે
રોકો ગામે ડંડ કરે ગણે હારો વાથે વર ઘર
નીશા મગાવે તે કિતા કરમને ઉદે ।

ગુઃ—જે વરલે સોના નો આગાર કરાવીયો તેના
પ્રતાપે ।

શિઃ—સ્ત્રી વાંઝ હુલે તે કિતા કરમને ઉદે ?

ગુઃ—જે વરલે ફુલના અંતર કરાવીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિઃ—સ્ત્રી ભરત વાંઝ હુલે તે કિતા કરમ થી ?

ગુઃ—જેણે વરલે ઉગંતો વનસ્પતો પુકળા ચૂટીયા
(તોડીયા) તેના પ્રતાપે ।

શિઃ—પુરુષ વાંઝ હુલે તે કિતા કરમ થી ?

ગુઃ—જેણે વરલે ભલે વણા વીજનીજ કાટીયા
નોડોપા ત્યાગીયા રોકીયા તેના પ્રતાપ
નં ।

શિઃ—પુરુષ દુઃખ અને સ્ત્રીયા વણી સર્વ સ્ત્રીયા
વાંઝ હોય તે કિતા કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જેણે પૂરવે વળી વનસ્પતિનો રમ કરાવિયો
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—કોઈ જીવ ચોરી કરે વાટ મારે ગાઠ બોલે
તે કિમા કરમને ઉદે ।

ગુ૦—જેણે પાવે વળા હલાલબોરના કામ કીધા
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—કોઈ જીવ અનેગને કામી દેવે તે કિમા
કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જેણે પાવે જલચર જીવ વળા મારીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—જીવ ચરમ માળમે દુઃખ મરીબો પામે
તે કિમા કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જ્યા પાવે ત્યાં વળા વનસ્પતિના પાત ફૂલ
ચીત્ર ગ્રંથિ ઉડીયા બૂટીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—શાક પાત અન્નપાત માતા પિતાનો
વિભાગ પાત ન કિમા કરમને ઉદે ।

ગુ૦—જ્યા પાવે ત્યાં વળા વનસ્પતિના ગ્રંથિ ઉડીયા

अथ कामदेव धावककृती सञ्ज्ञाय

आवक श्रीवीरनो चम्पानो बासीजी ॥ ए ॥
 आंकडी ॥ इकदिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिय सभा
 रे मांय । दृढनाई कामदेवनीजी, कोई देव न सकैरे
 चलाय ॥ आव० ॥ १ ॥ सरव्यो नहीं एक देवताजी,
 रूप पिशाच बणाय । कामदेव आवक कनेजी,
 आयो पौषधशालरे माय ॥ आव० ॥ २ ॥ रूप
 पिशाचनो देवने जी, डरो नहीं रे लिगार ।
 जाण्यो मिथ्यानी देवता जी, लियो शुभ मन
 ध्यान लगाय ॥ आ० ॥ ३ ॥ जर्मो रहै कामदेव
 जी, तोने कल्पै नहो छै कोय । धारो धर्मज
 छोडनोजी, पिण हु छोटावस्य् तोय ॥ आ० ॥ ४ ॥
 हात्तीनो रूप बेके कियोजी, पिशाच पणो कियो
 दूर । पौषधशाला मे आयने जी, बोलै वचन
 कहर ॥ आ० ॥ ५ ॥ मन माहे नही कपियोजी,
 हात्तो संडने झाल । पौषधशाला बारै लेईजी,
 दियो आकाशे उछाल ॥ आ० ॥ ६ ॥ दन्त

अन वार । पहले स्वर्गे जपनाजी, चव जासी भव
 पार ॥ आ० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी,
 पालो आवक धर्म । कामदेव आवकनी परेजी, थे
 पामो शिव सुख पर्म ॥ आ० ॥ १५ ॥ सुरधर
 देशसुं आयनेजी, जैपुर कियो है चौमास । अष्टा-
 दश छीयासीएजी, ऋष कुशालचन्दजी कियो
 प्रकाश ॥ आ० ॥ १६ ॥

सुगापुत्र की टांक ।

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा बलभद्र
 नाम । तस घर राणो सुगावतीजी, तस नन्दन
 गुणधाम । ए माता मिण लाखीणी रे जाय ॥ १ ॥
 एक दिन बैठा गोमडेजी, राण्यां रे पग्वार ।
 शीश दाभै ने रवि तपे जी, दीटा तप अकवार
 ॥ ए माना० ॥ सुनि देखी नव लज्ज्यांची
 मन वसिगोरे बैराग । हरष वर्गने दृष्टिवा नी
 लागा मानाजीरे पाय । ए नन्दनी सुन्दरी रे

મોગી માય ॥ માતા૦ ॥ ૩ ॥ તું સુકુમાલ
 સુદામણો જી, ખોગો સંમાર ના ખોગ । જોશન
 વય પાછી પહે જવ, આઢરજો તુમ જોગ, રે જાયા
 તુમ ચિન વહીરે છઃ મામ ॥ ૪ ॥ પાવ પલકી
 વચા નદી ૭ માય, ફરે કાલકોજી માજ । કાલ
 અજાણ્યો કદ પહેજી, ડ્યો નીતર પર વાજ ॥ ૭
 માતા બિળ લાબિળી ૮ જાય ॥ ૫ ॥ મ્ત જકિત
 વર આગળાજી, ન સુન્દર અવતાર । મોટા કુલમે
 જપર્નાજી, કાઠે છાંડો નિમવાર ॥ ૬ જાયા નં૦ ॥
 ૬ ॥ વાટા વર વાટી મચિયે ૭ માય, બિળમે
 ભેન વાવ ડ્ય મમામ્ની મમ્પદાજી, દેલ્વંતા મિલ
 જાય ॥ ૭ માતા૦ ॥ ૭ ॥ ગિલ્લૂ પવરળે પોડળો
 જો ન નાળી ૮ મસાલ । ફતફ ફચોલે જીમળો
 જો ફાવલદ્દી મે આચાર ॥ ૮ જાયા નં૦ ॥ ૮ ॥
 માયર જડ પિયા વળાવે માય, નુંગ્યા માતાગ
 વાવ । તુમ ન તુમે જીવદોજી, ડ્યક અંગેળા
 વર ॥ ૯ માતા૦ ॥ ૯ ॥ વામિય છે જાયા
 ડ્યકિદમી વામિય બાંદની માર । વિન દવિયાળો

सन्नासो, पत सत्य गिण्य लार । प । गयमु सेलक,
लीधो सयम भार ॥४२॥ सने सत्य अडार्, नणा
जीवाने नार । पुटगिरि ऊपर सितो पादो गमण
सधार ॥४३॥ आराधक गर्ते लीधो नेवो पार । हुआ
मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥४४॥ धन्य जिन-
पाल मुनिवर, दोय धनावा सांग । गया प्रथम देव-
लोके, मोक्ष जासे आराध ॥४५॥ श्रीमल्लिनाथना छः
मित्र मयावल प्रमुक्त मुनिराय । सब मुक्ति सिधाव्या
मोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ बलि जितशत्रु राजा,
सुबुद्धि नामे प्रधान । पोते चारित्र लेडने, पान्या
मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य तेनले मुनिवर, दियो
छ काय अभयदान । पोटिला प्रति बोध्या, पान्या
केवल ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पाण्डव, नजी
द्रौपदी नार । ह्यविरानो पासे लीधो सयम भार
॥ ४९ ॥ श्री नेमि वंदणनो, एहवो अभिग्रह
कोध । मास मासतमण नव, शत्रुञ्जय जई सिद्ध
॥ ५० ॥ धर्मघोष नणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार ।
किडियानी करुणा आणी दया रस सार ॥ ५१ ॥

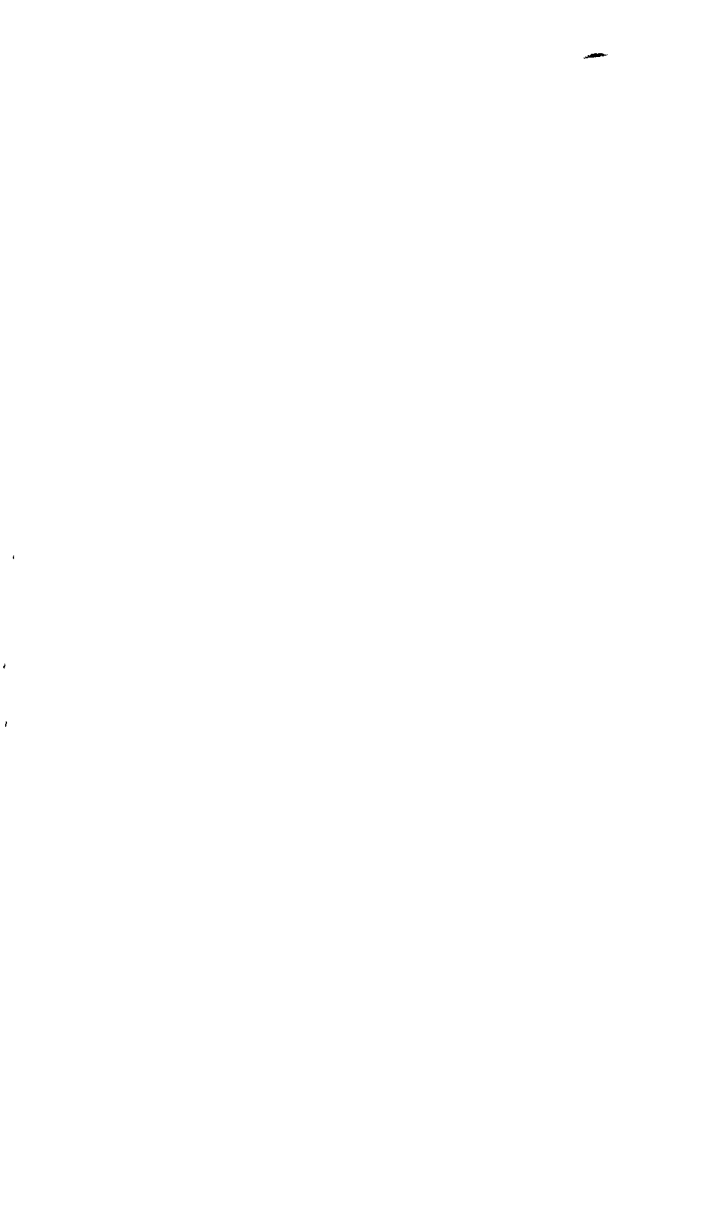
लुभणोजो, औषध नई है निगार ॥ रे जाया नृ० ॥
 १० ॥ चारित्र्य छे माना मोहेलोजी, चारित्र्य
 सुमनीजी ज्ञान । नवदेई राजनोकनाजी फेरा
 दालणहार ॥ ए माना ॥ ११ ॥ नियाले सी लागनी
 जी, उनाले नुरे बाध । चौनासे मेला कापडाजी,
 ए हुन सखो न जाय रे जाया० ॥ १२ ॥ धनमा
 छे एक सुनलोजी, कुण करे उणगिज मार ।
 सुनानी परे विनरस्यं जी, एकल्लो अगगार ॥ ए
 माना० । १३ ॥ मान बचन ले निसखाजी,
 सुना दुन कुमार । पच महा व्रत आदखाजी,
 लीशे संयम मार ॥ ए माना० ॥ १४ ॥ एक
 मासनी सलेखनाजी, उपनो केवल ज्ञान । कर्म
 खयाप हुक्के गया जी ज्योगे लीशे नित प्रति नाम
 । ए माना० । १५ ।

स्त्री-चरित्र की ढाल ।

सतियां तो सीता माग्यी, ज्यांग जिनका
 किया बन्धन । भविष्यण । कुसती कपिला माग्यी,
 प्यारी कर लीज्यो पिछाण । भविष्यण । चरित्र
 मृगों नारी तणा ॥ १ ॥ छाड़ी समारोहों कंड
 । भ० । जीलवन नर साम्बल, ते पामें पग
 आगद । भ० । च० ॥ २ ॥ कुसती में औगुण
 चणा बाग्या श्री जिनगाय । भ० । योद्धासा
 परगद फर ते मृगज्या चित्त ल्याय । भ० । च०
 । ३ ॥ नारी कड़ कपट नी कोवली, औगुणनो
 भण्डार । भ० । कलह कगवाने सांतरी, भंड
 पडावण तार । भ० । च० ॥ ४ ॥ देहली चढ़ती
 दिग पंडे चर ज्यारं दगर असमान । भ० । पामें
 बंदी नर की गने ज्ञाय समान । भ० । च० ॥

१. देव विद्यांत ओदक, मियने मन्मथ
 ज्ञान भ० । सागर उमीमें दे मोयं, उन्दर मं
 जितकाल भ० । च० । २ ॥ कोयल मोर नारी

परै, घोलै मीठा घोल । भ० । भोवर कहवी कुट-
 कली, मारि करै किलोल । भ० । व० ॥ ९ ॥
 निष रोवै निष में रंमै, निष सुख पावै युंघ ।
 भ० । निष रावै निषै निषे निष दाना निष
 मृग । भ० । व० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल
 करै, ऐसी नर अलाम । भ० । धन्दर ज्युं नचावै
 निज कंधनै, जालै कै असल सुलाम । भ० । व० ।
 । ८ ॥ नारीने काजल कोदरी, ए बेहुं एकज रंग । भ० ।
 काजल नर कालो करै नारि करै शील भंग । भ० ।
 । व० ॥ १० ॥ नारी नै मन डेलडी, दोनूं एक
 सभाव । भ० । कंठक रंग कुशील नर, निष स्युं
 बेहुं लग ज्यान । भ० । व० ॥ ११ ॥ नान छै
 अदला नर नो, पग सबली छै इग संसार । भ० ।
 समला सुर नर तेरनै, निमला कर दिया नर ।
 । भ० । व० ॥ १२ । सुर नर कितर देवता,
 त्यानै विष ब्रह्म किया नर । भ० । नाख्या
 नरक निगोद में त्यांगी नो अन्य ने दार । भ० ।
 व० ॥ १३ ॥ नैय छैय नारी नयन बचनन मीठा



म० । च० ॥ ३४ ॥ अविष्णु गान्धी ने कर्मिणा
 ब्राह्मणी, सेठ नै दिग उदयग अनेक । ०० ।
 सेठ सुठरजन चन्दिगो नदी, मनये आन विवध
 । म० । च० ॥ ३५ ॥ अंगुण कथा कृतुग्या
 तणा, कर्त्तान न आवे पार । म० । मनिगंगा गुण
 है अनि घणा, न्यागे नो वदोन विभार । ०० ।
 च० ॥ ३६ ॥ अट कर्मिणा ने श्रीगुण नगा
 चाखो है इवकार । म० । सेठ ने उदयग
 भीडियो, पिण सेठ न चन्दिगो दिग । ०० ।
 च० ॥ ३७ ॥

अथ चार शरणा श्री विष्णु ।

हिरदै धारीजे हो, भविष्य उत्कर्ष शरणा
 चार ॥ ए टेक ॥ पोत्र इह विन लक्ष्मीने हो
 भविष्य । मंगलीक शरण चार शरणा इहे
 सम्पदा मिले हो । भविष्य दण्डनना दानार ।
 अरिहन्त सिद्ध साधु नाना हो ॥ भवि०

आमना ॥ हो० भ० ॥ नेने न आवे रंग ॥ चरने
आणन्द जीवने ॥ हो० भ० ॥ एत तणा मंयोग
॥ हि० ॥ ६ ॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो
भ० ॥ निधय फल निरवाण ॥ कुमी नही देव-
लोक मे ॥ हो० भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥
॥ हि० ॥ १० ॥ मंवन अठारे घावन्ने ॥ हो० भ० ॥
पाली सेवे काल ॥ ऋष चौधमलजी इम कहे ॥
हो० भ० ॥ सुणज्यो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥

ॐ इति ॐ

चेत चेत नर चेत ।

६ दोहरा ६

परलोके सुख पामवा, कर सारो संकेत ।
हजी बाजी छै हाथ मां, चेत चेत नर चेत ॥
जोर करी ने जीतबुं, खरे खरं रण खेत ।
दुश्मन छै तुझ देहमां, चेत चेत नर चेत ।
गाफल रहिश गमार तुं, फोगट धरुश फजेत

श्वे जम्भ हृत्पीयार थड चेत चेत नर चेत ।
 नन धन नें तागं नयी, नयी प्रिया पण्डित ।
 पाछल मौ रज्जो पट्टां, चेत चेत नर चेत ।
 प्राग जडो जयं रिगड नी रिड गंगाडो देव ।
 माटी मां माटी थडो, चेत चेत नर चेत ॥
 रक्षा न गंगा गजिया सुर नर मुनि मन्द ।
 नुनो नरणा नुन छे चेत चेत नर चेत ।
 रज्जुन नाग रज्जुडो जेम रज्जुनी रेत ।
 पटी नर नन पानीया कयां चेत चेत नर चेत ॥
 काना केम मटी गया, मयें वनीया मंद ।
 दोवर दोर जनुं रज्जुं चेत चेत नर चेत ।
 पट्ट पट्टां मण्डरीने, विचारी ने कर चेत ।
 कदाही आवरो कयां जनुं चेत चेत नर चेत ॥
 नृप दीपावली मण्डरीने, प्रभु माये कर केंद्र ।
 अने अविचार अने छे चेत चेत नर चेत ॥

कटुआ तुंवानो, कीथो मयलो आहार । सर्वार्थ
 मिट्ट पढोता. चवि लेसे भवपार ॥ ५० ॥ बली
 पुंडरिक राजा कुंडरिक डिंगियो जान । पोते चारित्र
 लेई ने, न वाली धर्ममां हाण ॥ ५१ ॥ सर्वार्थ
 मिट्ट पढोता. चवि लेसे भव पार । श्री ज्ञाना
 पत्र में. जिनवर कत्या वग्याण ॥ ५२ ॥ गौतमादिक
 कुमर मगा अडारे भ्रान । सर्व अंधक विष्णु सुत,
 धरणी ज्यांगी मान ॥ ५३ ॥ तजी आठ अंतेउगी,
 काढी दीक्षानी वान । चारित्र लेडने कीथी मुक्ति
 नो साथ ॥ ५४ ॥ श्री अनेक सेनादिक, छजं
 सहोदर भाय । वसुदेव ना नन्दन. देवकी ज्यांगी
 माय ॥ ५५ ॥ भद्रीलपुर नगरी. नाग गहावण
 जाण । सुलमां वर वधिया. मांभली नेमिनी बाण
 ॥ ५६ ॥ तजी वत्रीम अंतेउगी. निकलिया छिट-
 काय । नल कुवेर मनाणा, भेड्या श्री नेमिना
 पाय ॥ ५७ ॥ करी छट २ पारणा मन में वैराग्य
 लाय । एक नाम मंथारे, मुक्ति विराज्या जाय
 ॥ ५८ ॥ बली दान्ण मारण. नुमुन्व दुमुन्व मुनि-

छिन्नु जी कोड, ते नर अंते अकेलडो, चाल्यो छै
सहु कृद्ध छोड़ ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे नर छत्र
धरावता, चमर विभ्रंता जी मार, ते नर पोछ्या छे
काठ मे, ऊपर डांगां की मार ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे
नर दीपक करी पोढ़ता, फलडां सेज बिछाय, ते
नर अदबी मांहे पोढ़िया, चांचां मारै रे काग ॥
मा० ॥ ७ ॥ यादवपति सरिखा जी चल गया, जोवो
कृष्ण नरेश, वन कशुंवी मे एकलो दणायो बाण
सूं जेम ॥ मा० ॥ ८ ॥ दोहा दोहा रे पाळता,
निर्वता बलि छांय, पहिले पोढर बिजा हुता, छले
दीसैजी नांय ॥ मा० ॥ ९ ॥ कदवा गहारां जी
कुण अडे म्हे काढां करड़ा नी नांहा, मगज मांहे
मावता नही, ते तो होय गया रांक ॥ मा० ॥
१० ॥ गरीब लोकां ने खोसता, डरता प्रभुजी
से नांय, रावले रोक्या रे दुख पडे, सोच कां मन
मांय ॥ मा० ॥ ११ ॥ घर मंदिर गृंही गद्या, मांय
पुण्य ने पाप, कुटुम्ब काज कर्म यात्रिया, नांगवे
एकलो आप ॥ मा० ॥ १२ ॥ नर्म विट्टणी रे ३

चढ़ी, निश्चय निष्फल जाय, ओछा जीव रं
 कारणे, मृद रत्नो ललचाय ॥ मा० ॥ १३ ॥
 नोषत बुग्ती जी बारणे, मरणाई जंग्व भेर, काल
 निहाने जी ले गयो, नही कोई लावे जी वेर ॥
 मा० ॥ १४ ॥ धमण धमंती जी रह गई, बुझ
 गई लाल अंगार । परण ठमको जी मिट गयो,
 उठ चल्यो जी लोठार ॥ मा० ॥ १५ ॥ मिम्व
 पयमणा में पोढ़ता, तेल कुलेल लगाय । एक दिन
 इसही चणी, कृता हाग जे ल्याय ॥ मा० ॥ १६ ॥
 नन मगम में बामो रुगी, जीव साये सुख चैन ।
 व्यास नमाम जी कनम, बाजत हे दिन दिन ॥
 मा० ॥ १७ ॥ परमात्मी ने पाछा लिखा, हुंहुं
 चणी जी दह । जन्मे पैज सीचो लिगो, भृग २
 फाम्नु मनह ॥ मा० ॥ १८ ॥ मानी नर मानी
 बया दता नारही नीच । इस जाणी नमै आइं,
 न ना पुण्यवन जीव ॥ मा० ॥ १९ ॥ निर्दोषी
 निरालोषी उ कायम रदापाल । व्यांगि परमीन
 नर नारी नर नारी नर नारी ॥ मा० ॥ २० ॥

सद्गुरु सांशारे डालसी, जोवो सुबुद्ध नरेश ॥
 साधु श्रावक ब्रत पालज्यो, हुबै सुगति प्रवेश
 ॥ मा० ॥ २१ ॥ कुगुरु कुमारग घालसी, मन
 पनीजज्यो त्यांग । हिंसा धर्म करायन, मेलसे
 नारकी मांग ॥ २२ ॥ तिहां कोई आडो नहीं
 आवसी, जी जी जपसे निवार । मारसे हेलो रे
 एकलो, छेदन भेदन मार ॥ मा० ॥ २३ ॥ अनंत
 भूख तृषा सही, शीत ताप दुःख घोर । धरती
 करवन सारसी, वेदन कठिन कठोर ॥ मा० ॥ २४ ॥
 पांच पच्चीस बाकी रखा, हिंसा भूठ अदत्त । मांस
 मद्य परनारना, लागा दोष अनंत ॥ मा० ॥ २५ ॥
 देव दुंलाला जी आवसी, करता लोचन लाल ।
 देख्यां जीवडो रे कापसी, मारसी मुद्गल भाल ॥
 मा० ॥ २६ ॥ हसतां कर्मज बांधिया, रोयां हूटेजी
 नांघ । सतगुरु देवे रे चेतावणी, चेतो चतुर सुजाण
 ॥ मा० ॥ २७ ॥ पडदे रहती जी पदमणी,
 सजती नित शृङ्गार । आखर उतखा जी धर्मरा,
 तयारे नर २ री पणिहार ॥ मा० ॥ २८ ॥ चिहुं

॥ मा० ॥ ३६ ॥ ए गुण धार्यां जी सुख लहे,
पावे मोक्ष प्रभान । देवलोक मांहि वासो मिले,
देखो नवनव ज्ञान ॥ मा० ॥ ३७ ॥ तिहां पिण
सुख जे सुर नणा, रत्नजडित आवास । गहणा
गांठा जी नया नया, अधिकी जोत प्रकाश ॥ मा० ॥
३८ ॥ सामायिक ने पोसा करो, सद्गुरो सुणो
रे बलाण । प्रतीते धर्म पालजो, तो पर भव अमर
विमाण ॥ मा० ॥ ३९ ॥ शीयल व्रत संजम
आदरो, निधो धरो मन माय । ज्यु सुख पामो
जो शाशवता, चित्ते चितवोजी ज्ञान ॥ मा० ॥
४० ॥ संवन् अठारे गुण्यासीये, जोडी मन शुद्ध
भार । वीर प्रभुजी इन कहै, छोड़ो आल जंजाल ॥
मान न कीजे रे मानवी ॥ ४१ ॥

कर्म सङ्क्राम्य ।

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरिहर नरवर
सबला । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पान्या, सबल

हुवा महा निचला रे । प्राणी कर्म समो नही
 कोडे ॥ ७ ॥ आंकडी ॥ १ ॥ आडीवर जी ने
 कर्म अदाव्या, वषे दिवस रया नुवा । वीर ने
 बारद वरस दु ल दीया, उपना ब्राह्मणी कवार ।
 मा ॥ २ ॥ वत्तीस महस देडांगे मादिय,
 वकी मनवकुमार । सोलह गेग डगीरमे उपना,
 हमे हिंगो ननु डार ॥ ३ ॥ माद महस मुन
 माना ७ हण दिन, जो १ जवान नर जमा ।

पाशवती नारी, कर्त्ता पुन्य कदाचे । अह निजि
 मद्रुत मठाग मे वामो निश्चा भोजन लावे रे ।
 १३ ॥ महस विष्णु वृज पतिनापी, गत दिवस
 गेहे अदनी । मोलद कला शशिधर जग चाखी,
 दिन दिन जावे यदनी रे ॥ १७ । उम अनेह
 लवण्या नर कम, भाज्या ने पिण माजा । रुद्धि
 १४ हर जोडिने विनये नमो नमो कमे मठागता
 रे । १८ ॥

॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पिडा टल जाय, दोषी दुशमन
 लागे पाय । सगलो भांगे मनको भरम, समकित
 पामी काटे करम ॥ ४ ॥ सुणो प्रभुजी मांहरी
 अरदास, हूं सेवग धे पूरवो आश । मारा मनरा
 चिंत्या कारज करो, चिंता अरध विघनज हरो ॥
 ५ ॥ मेढो प्रभुजी म्हांरा आल जंजाल, प्रभुजी
 मुक्कने नैन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम,
 प्रभुजी सुधारो म्हारो काम ॥ ६ ॥ जे नर नित्य
 प्रभुजीने रटे मोत्यां बंध सम फूला कटे । चोब
 लावण दोनूं भड जाय, विना औपध कट जावे
 छाग ॥ ७ ॥ प्रभुजीरा नाम धी आंख्या निरमल
 धाय, धुंध पडल जाला कट जाय । कवल्यो
 पिलीयो भड भड पडे, शान्त जिनेश्वर साता करे ॥
 ८ ॥ गरमी व्याध मिटावे रोग, सेण मितररो
 मिले संजोग । इसडो देव न दीसे और, नहीं
 चाले दुशमणरो जोर ॥ ९ ॥ लूटेरा सब जावे
 नास, दुरजन फिटी हुवे दास । शान्त प्रभुरी महिमा
 घणी, किरपा कीजो तीन भुवनरा धणी ॥ १० ॥

अरज कसंछं जोड़ी हाथ, थां छानी नहीं दूजी
 बान । दूर गद्दीयाछो पोते आप, काटो प्रभुजी
 म्हांग पाप ॥ ११ ॥ म्हांग मनरा चाचा कीजे
 काज, राखो प्रभुजी म्हांगी लाज । थां समान
 जुगमें नहीं कोय, थांनं मिमरां मुल समत
 होय ॥ १२ ॥ थां आगे न चाले मृगीरो जोर,
 ताव तेजरो नांवे तोड़ । मरी मिटाईदो कर गो
 जान्त, तुम गुणां रो नहीं आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने
 मिमरे माधु मती, थांनं मिमरे जोगी जती ।
 संकट काटो राखो मान, अविचल पदवी आपो
 बान ॥ १४ ॥ समत अठारं चोराणवे जाण,
 दण मानवो डवक यत्नाण । जहर जावलो चंतरं
 मास । दं छं प्रभु चरणारो डाम ॥ १५ ॥ अथ
 स्वभाव यणाया छद, काटो प्रभुजी म्हांग करमाग
 सद । जोय ग्योठं आवरी घाट, मनकी मगली
 बिना घाट ॥ १६ ॥

पूज्य श्रीलालजी महर्षि की लक्ष्मी

श्री हुकम मुनि महाराज हृदये बड़ भागी । गढ़ा-
 राज किया उद्धार बनाया जी । गिरतात उदग
 मुनि पाट चौध श्रीलाल दीपायाजी ॥ टेर ॥ उगणी
 सै हन्सीसे टोंक शहर के माही । महाराज पूज्यका
 जनम जो धाया जी । है ओस वंश बंस जिन कुल
 धन धन कहलाया जी । चुनीलालजी पिता दूरप
 बहु पाये, महाराज सर्वको अधिक सुतायाजी ।
 धन्य चांद कुंवरजी मान जिन्होंने गोद खिलाया
 जी (उडावणी) है क्या बातपणा में शरत
 मोहनगरी । जो देखे जिस कूं लागे अतिही प्यारी ।
 है छोटी बयमे संगत साधांकी धारी । शुद्ध शरधा
 पानी मिथ्या मनको टारी । महाराज जैन का
 भक्त कहाया जी ॥ शिवलाल ॥ १ ॥ फिर
 कीवी सगाई मान और भाई ने, महाराज नार
 सुन्दर परणायाजी । है मान कुंवरिजी नाम रूप
 गुण सम्पन्न पायाजी । फिर थोड़ा दिनोमे चढ़ा अल्ल

जाणोजी । क्या कानिक सुदीके मांह, शहर
 रतलाम पिछाणोजी । मुनि विनय वैधावच्च कर
 साता उपजाई । महाराज पूज्य मन अति हर-
 षाणोजी । हे लेवो पूज्य पद आज स्वयं मुग्न इम
 पुरमाणोजी (उडावणी) जब गुरु आग्रहसे पूज
 पद मुनि लीनो । पूज मस्तक हाथ रग्व हित उपदेश
 बहु दीनो । मुनि शुद्ध भावसो अमृत सम रस
 भीनो । चारो संघ सन्मुख भोलावण बहु दीनो,
 महाराज चौध पूज्य स्वर्ग सिंहायाजी ॥ शिवला०
 ॥ ४ ॥ मुनि सम भाव शान्ति मूरति है प्यारी ।
 महाराज सन्पगुण अधको पायाजी । ये भक्तवच्छल
 मुनिराज सर्वको अधिक सुहायाजी । रतलाम शहर
 चौमासो पूरण करके महाराज फिर इन्दौर
 सिंहायाजी । कई ग्राम नगर पुर विचर बहु उपकार
 करायाजी (उडावणी) मुनि जहां जावे नहां लागै
 सषको प्यारे । क्या अमृत वाणी मूरति मोहन गारे ।
 मुनि जहां विचरै जहां करै बहुत उपकारे । नपत्या
 स.माइक पोषभ व्रत बहु धारे, महाराज भव्य मन

[illegible]

करवाये । महाराज अनिजय गुण अधिका पायाजी ।
 कोई सुरत देग्व डिल मस्त हुवै धर्म चित लायाजी ।
 (उडावणी) जो घग्वाण सुणवा एक बार कोई
 जावै । फिर नही कहणेका काम, तुरत चल आवै ।
 उपदेश सुणके डिल उनका हुलमावै । करे आपसुं
 पञ्चख्यान त्याग मन भावै । महाराज आपका गुण
 बहु छायाजी ॥ शिवला० ॥ ११ ॥ फिर कोटेसे
 अजमेर जो आप पभारे महाराज नवठाणें से
 आयाजी । बहु हाव भावके साथ चौमासो जाण
 मनायाजी । अजमेर पधासा सुणके भट मै आया ।
 महाराज दर्शन कर प्रसन्न धायाजी । हुवो हरष
 हिये उह्लास जोड कथ गुण मै गायाजी (उडावणी)
 कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी । अजमेर
 लावणी जोडके गई खासी । चौसठ साल आपाह
 एकम सुदि भासी । सम श्रावक श्राविका सुणके
 हुआ हुलासी । महाराज प्रत्यक्षा जश सवायाजी ।
 शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दीपाया
 जी ॥ १२ ॥ ॥ इति सम्पूर्ण ॥

पूज्यश्रीश्री १००८ श्रीलालजी

महागुरु का स्तुत ।

महागुरु परम उपासी मुक्त नाराजी,
श्री श्रीलाल मुनी परवासी पार उताजी ॥
७ दूर ॥ जन्मदाता नगर मन्त्री, ज्ञानी चांद
रुवर मन्त्री । पिता चुन्नीलाल अवतारी, दीक्षा
चामालीस में बारी, मुक्त नाराजी ॥ १ ॥
प्रथम ब्रह्म मुनी अवतारी, और जिवलाल उदे-
चन्द बारी ।

शिवपुर ठाम । धूर आदि मकाड, अंत अलक्ष
 मुनि नाम ॥ ७१ ॥ बली कृष्णगयनी, अग्रमहिषी
 आठ । पुत्र बहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥
 यादवकुल सतियां, दाली दुग्ध उचाट । पढ़ोंता
 शिवपुर में, ए छै सूत्र नो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिक
 नी राणी, कालियादिक दश जाण । दश पुत्र
 वियोगे, सांभली वीरनी बाण ॥ ७४ ॥ चंदनवाला
 पै संजम लेई हुआ जाण । तप करी देह भोंसी,
 पढ़ोंता छै निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरह,
 श्रेणिक नृपनी नार । सबली चंदनवाला पै, लीधो
 संयम भार ॥ ७६ ॥ एक माम संधारे, पढ़ोंता
 मुक्ति मभार । ए नवं जणानो, अंतगड़मां अधि-
 कार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा, जालियादिक तेवीस ।
 वीर पै ब्रत लेई ने, पाल्यो विश्वावीस ॥ ७८ ॥
 तप कठन करी ने, पूरी मन जगीश । देवलोके
 पढ़ोंता, मोक्ष जासे तज रीश ॥ ७९ ॥ काकंदीनो
 धनो, तजी बचीसे नार । महावीर समीपे, लीधो
 संयम भार ॥ ८० ॥ करी छट छट पारणो; आंबिल

बीनतीड़ी अवधारो, म्हे तो सदा दास चरणारो,
सुभने० ॥ ५ ॥ म्हे तो शहर जोधाणे आया,
सम्बत सीतर मे सुख पाया । कानिक सुद पुनम
गुण गाया, केवे जोधकरण चरणारो चाकर,
सुभने० ॥ ६ ॥

अथ श्रीकर्मचन्द्रजी स्तुति कृत ध्यानाः ।

प्रथम पद्म आशण धिर करी, पछै मन धिर
करी, विषे कषाय श्री, चितनी लहर मिटायनं,
अन्तः करण मे हम ध्यावणो । नमस्कार यावो
श्री अरिहन्त भगवान ने ते अरिहन्तजी कहवा छै
—सुरासुर सेवित, चरण कमल सर्वज्ञ, भगवन्त
जगन्नाथ जग जीवां ना तारक, कुगत मारग
निवारण, निर्वाण मारग पमाडण, निराह निरहंकार,
निसंग निर्मम, शान्त दान्त करुणा समुद्र, विशोच
उपगार सागर । अनन्त ज्ञान दर्शण चारि

રે જીવ જેહવો સિદ્ધ પરમાન્માનો સરૂપ છે ।
તેહવો તાંહરો ચેનાનન્દ નો સરૂપ સના મે છે, રે
નેનાનન્દ તાહરો સરૂપ કર્મા અછયો છે, મોહને
ઉદય મલીન હોય રહ્યો છે, નિજ સરૂપ ભૂલિ પર
સરૂપ મે રમ રહ્યો છે । ક્રોધ મે, માન મે, માયા મે,
લોભ મે, રાગ મે, દ્વેષ મે, હાસ્ય રતિ અરતિ ભય
સોગ દુગંઢા મદ બિકાર મે ચરત રહ્યો છે, કર્મ ઘસો
નરકાદિક ચ્યાર ગતિ, ચૌરાસી લાલ્લ જીવા જોની
મે કુન્મારના ત્રાકની પરૈ પરિભ્રમણ કરિ રહ્યો છે ।
ભ્રુવ તૃષા શીત તાપ હર્ષ સોગ જંત નીચપણો પામી
રહ્યો છે ચવદે ગજ લોક મે જન્મ મરણ કરિ પરિ
રહ્યો છે (ગાથા) ન ત્તા જાઈ ન ત્તા જોળી મ ન
ઠાળં નતં કુલં ન જાયા ન મૃત્વા જચ્છ સવે જીવા
અનન્ત સૌ ।

રે જીવ ત્ હિસા ઝૂઝ ચોરી મૈથુન પરિગ્રહ જાવ
નિધ્યા દ્રશન સત્ય એ સેવી પાપ ઉપારજી આત્મા
ભારી કરી નરકે ગયો, તે નર્ક કેહવી છે મહા ઘોર
હ્રદ અન્ધકાર નહિત બિયાનગી છે, નિતાં પેદના

असंख्याती अवसर्पिणी उत सर्पिणी लग्गुणीज्यो
 खदिज्यो दुख भोगव्या एवं अप्प मे तेउ वाउ में
 वनस्पति में गयो तिहां अनन्ता भव किया सूक्ष्म
 बादर प्रत्येक साधारण मे अनन्ती अवसर्पिणी
 क्षेत्र धकी अनन्ता लोकाहाश प्रमाणे असंख्याता
 पुद्गल प्रावर्तना ताई स्थौ निगोद मे गयो तिहां
 अंगुल ने संख्यात मे भाग मात्र एक शरीर मे
 अनन्ता भेदे अनन्ता जीव रहै छै तिहां रहिने
 एहवी सकराई भोगवी एक मुहुरत मध्ये ६५०००
 हजार ५०० सौ ३६ भव करे एहवी जन्म मरण
 नो पेदना भोगवी छेदन भेदन पासि बले बेइन्द्री
 तेइन्द्री चौइन्द्री में लाग्वां भव किया अनेक दुख
 भोगव्या बले निर्गञ्ज पंचेन्द्री मे जलचर धलचर
 उरपुर भुजपुर खेचर मे लाग्वां भव किया शस्त्र
 धकी भूवो भूख नृपा वध बन्ध परवशादि अनेक
 दुःख भोगव्या घली इम रहते २ घणा कण्टे ४८
 जो भिनख जन्म पायो तो नो मान नाइ लइने
 दुःख सखा प्रथम उत्पत्ति समय तिहां में ईने

(गाथा) 'पुरसा तुम मेव तुम्मीतं' हे पुरुष
 तांदरो तूहीज मित्र छै तूं पाहिर मित्र हिणस्यूं बछे छै
 (गाथा) मितं मीछसी अपाकपावीक्ताय" इत्यादिक
 अतो जीव ए तांदरी आत्मांज कर्मा री कर्ता,
 एहीज भुगतता, एहीज बखेरता, एहीज दुःखनी
 दाता, एहीज सुखनी दाता, एहीज बैरी, एहीज
 मित्र, एहीज पर उपकारनी करणहार, तिणस्यूं ज्ञान
 दर्शन चारित्र संहित आत्मा ऊपर परम प्रतीत
 राखिये, एह टाली ने हिण ही सचित अचित वस्तु
 ऊपर स्नेह न करिवो (गाथा) "असिणेह सिणेह
 करहं" जे आपस्यूं स्नेह करे छै, तांदरे त्यां स्यूं पिण
 निस्नेह पणे रहवो, ए केवली नो बचन छै, बले
 कस्यो छै (गाथा) "स्नेह पासा भयंकरा" ए स्नेह
 रूपी पाशा महा भयना करणहार छै, तिणसूं रे
 जीव ए वीतराग नो बचन बिमासी तूं हिणस्यूं ही
 स्नेह मत कर जगतना सर्व जीवांस्यूं तांदरे पूर्वे एक
 २ स्यूं अनन्ता २ सगपण क्रिया, इम जाणी राग
 टालिये रे जीव तूं तांदरा निज गुण निहाल, तांदरा



सुखदायनी तेहनी अगीर मय्यां गेग उपशमै
 पढ़वा म्त्री-सगाते सुख भोगवी, उः लण्ड नो
 राङ्ग भोगवी सात सो वषे नो आउलो पाली,
 रुमे उपार्जी सातमी नहे तेनीस सागर ने आउगे
 गयो सात सावपा मे २८ कोड १२ कोड ३८ लाप
 ८० हजार व्यास व्यास लिया पहे ही व्यास
 व्यास व्यास नाही नी मास हेइ ही ११ लाप
 पद १३ हजार पद २०० सी पद २१ पद पहे
 पद ना नी-वा नाग पदमा पद ही पदना नोम गा
 पद व्यासा व्यास ।

उल्लिखित आचार । श्री वीर वनाण्यो भग्न भक्तो
 अणगार ॥ ८१ ॥ एक मान मगारे, सर्वार्थसिद्धि
 पहोत । महाविदेह क्षेत्रमां, करसे भवनो अन्त
 ॥ ८२ ॥ भक्ता नी रीते, हुवा नवुंड संत । श्री
 अनुत्तरोववाईमा, भाग गया भगवंत ॥ ८३ ॥
 सुमाहु प्रसन्न, पांच पाचसे नार । तजि वीर पै
 लीधा, पच महाव्रत सार ॥ ८४ ॥ चारित्र लेई ने,
 पावगो निरतिचार । देवलोके पहोना, सुखविपाक
 अधिकार ॥ ८५ ॥ श्रेणिकना पौत्रा, पोमादिक
 हुवा दश । वीर पै व्रत लेई ने, काय्यो देहीनो कस
 ॥ ८६ ॥ सजस आराधी, देवलोकमां जई वस ।
 महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जश ॥ ८७ ॥
 बलभद्रना नन्दन, निषभादिक हुवा धार । तजी
 पचास अतेउरी, त्याग दियो संसार ॥ ८८ ॥
 सहु नेमि समिपे, चार महाव्रत लीध । सर्वार्थसिद्धि
 पहोना, होसे विदेह मे सिद्ध ॥ ८९ ॥ धनो ने
 सालिभद्र, मुनीश्वरां री जोड । नारीना बन्धन,
 तत्क्षण न्हाव्या तोड ॥ ९० ॥ घर कुटुम्ब कवीलो,

समर्थ, पहले देवलोक दोग सागर नो आउगो
 देवनानो, एक देवता रे आठ देवाज्ञा एकेकी देवी
 सोलह सोलह हजार महा अद्भुत आश्चर्यकारी
 ज्योति कान्ति मनोहर भेष लावण्य जोवन नी
 धरनहार शिणगार नो घर पहवा उतर बैक्रीय रूप
 बैक्रीय करै एतला रूप देवता करे ते देवी केतली
 भोगवे २२ कोड़ा कोड़ २५ लाख कोड़ ७१ हजार
 कोड़ ४०० नै कोड़ २२ कोड़ ५७ लाख १४ हजार
 २२० देवी भोगवै तो पिण तृप्ति न हुबो तो रे
 जीव ए मिनसनों उदारिक शरीर सम्बन्धी महा
 जगला अल्प कालना सुख धी स्यं तृप्त हुसी । इम
 जाणी ने रुचि उतारवी ।

रे जीव आरज खेत्र उत्तम कुल दीर्घ आउगो
 परी इन्द्री सन्धुरांनी संगत बीतराग ना बचना नो
 सांभहदो बीतराग ना बचन बेहवा छै सत्य छै,
 उत्तम निर्मल निर्दोष सकल कारण नी निद्रि ना
 करणहार जन्म मरण ना मिटावण हार एकान्त
 रिवकारी—रे जीव ज्यां लग जरा नहीं रोग नर ।

साधु मुनिराजके २२ परीपह ।

११ परीपह वेदनी कर्मके—

क्षुधा १ तृषा २ सीन ३ उष्ण ४ डंस मसक
५ चर्चा (चालने का) ६ औंघा (बैठने का) ७
बध (छेदन भेदन का) ८ रोग ९ जलमेल १०
नृण स्पर्श ११

२ जानावरणी के—

अज्ञान (सीगने सूं बोल चढ़े नहीं) १ प्रज्ञा
(जाण पणे को अभिमान न करे)

मोहनी के ८—

१ दर्शन मोहनी को—

दर्शन (वीतराग प्ररूपित धर्म सत्ता जानें) १

७ चारित्र मोहनी के—

अरति (धर्म में राजी रहै अरतिपणो न लावै)
१ अच्छेला (वस्त्र मोटो मिलै अधवा नहीं मिले
तो सम भाव रखे) २ स्त्री (स्त्री देखकर
नित्त दश भे राखै) ३ निषया (ध्यान करनां

जाण, भजन कियां होय अमर विमाण । देव
लोक सुखरा भिणकार ॥ वां० ॥ ४ ॥ स्वामी
सुधर्मा वीरजी रे पाट जनम मरण सेवगरा काट ।
मुझने आप तणो आधार ॥ वां० ॥ ५ ॥ मण्डी
पुत्रने मोरीज पूत, मुक्त जावणरा कीधा सुत ।
त्रिविधे त्यागा पाप अडार ॥ वां० ॥ ६ ॥ अकम्पित
ने अचलज भ्राता, वीरजीने वचने रछाज राता ।
चवदै पूरवना भण्डार ॥ वां० ॥ ७ ॥ मैतारजने
श्रीप्रभास, मोक्ष नगर मे कीधो वास । जपतां हुवै
जयजयकार ॥ वां० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मण जान,
चम्पालीसे निकल्या साथ । ज्यां कर दीनो खेवो
पार ॥ वां० ॥ ९ ॥ इण नामे सहु आशा फलै,
दोषी'दुशमन दरे टलै । ऋद्ध वृद्ध पामे सुखसार
॥ वां० ॥ १० ॥ इण नामे सब न्हासे पाप, नितरो
जपिये भवियण जाप । चित्त चोखे हिरदा मे धार
॥ वां० ॥ ११ ॥ समत अठारे तयालीसे जाण,
पूज जेमलजीरी अमृत वाण । चांमासे स्तवन
कियो पिपाड ॥ वां० ॥ १२ ॥ अन्नाद सुद नातुम्

मलजी ने दीक्षा आप दीनी शररे बलुन्दे रे
मांही । ससन उगणीसै नौणमेरा आना नीज
निवार ॥ क्ष० ॥ ५ ॥ कर्त्तव्य नान्दमल नरणारो
वाकर मुझ पर महर करीज्योजो । मै अज्ञानी कठिन
कठोर । न काय को डेदनहार । सर्व पाप केरा
करस्यं न्याग । बोर दिन होसो म्हारो परम
कल्याण ॥ क्ष० ॥ ६ ॥





राजा धर्ममित, पद्म प्रभुजी नै वांद् नित्त । पूर्व
भव जे सुन्दर वाहु तेह सुपास प्रणमूं जग नाहु
॥ ४ ॥ पूर्व भव द्रगवाहु मुनीश, चंद्र प्रभु
प्रणमूं निशदीस । जुगवाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं
सुबिध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लठ्ठवाहु पूर्वभव
जास, श्री शीतल प्रणमूं हुलास । दीन राई कुल
तिलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥
इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवंत, वासुपूज्य वांद् भग-
वंत । पूर्वभव सुन्दर बडभाग वांद् विमल धरी
मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्द, तेह
अनंत जिन प्रणमूं सुग्वकद । साधु शिरोमण
सिंहरथ राय धर्मनाथ वांद् चित्तलाय ॥ ८ ॥
पूर्वभव मेघरथ गुण गाजं, शान्तिनाथ जिनवर
चितलाजं । पूर्वभव रूपी मुनि कहियै, कुंधुनाथ
प्रणम्यां सुख लहियै ॥ ९ ॥ राय सुदर्शन
मुनि विख्यात, वांद् अरजिन त्रिभुवन तात ।
पूर्वभव नन्दन मुनिचंद, ते प्रणमूं श्री महि
जिनंद ॥ १० ॥ सिंह गिरि पूर्व भव सार,

धन कंचननी कोड़ । माम मामन्वमण तप, टालसे
 भवनी खोड़ ॥६१॥ श्रीमुधर्मा स्वामीना शिष्य, धन्य
 धन्य जम्बू ग्राम । तजी आठ अन्तेउरी मानपिता
 धन धाम ॥ ६२ ॥ प्रभवाद्रिक तारी, पहोंता शिव-
 पूर ठाम । मृत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥
 ६३॥ धन्य डंडण मुनिवर. कृष्णरायना नन्द । शुद्ध
 अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ॥६४॥ बली
 खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल । परीषह सहीने
 भव, फेरा दिया टाल ॥६५॥ बली खंधक ऋषिना
 हुआ पांचसे शिष्य । वाणीनां पित्या, मुक्ति गया
 तज रीश ॥ ६६ ॥ संभुति विजय शिष्य, भद्र-
 बाहु मुनिराय । चवदे पूरवधारी चन्द्रगुप्त आण्यो
 ठाय ॥ ६७ ॥ बली आद्रकुमार मुनि, स्थूलिभद्र
 नंदिपेण । अरणक अडमुत्तो, मुनीस्वरांनी श्रेण
 ॥ ६८ ॥ चौवीसे जिनना मुनिवर, संख्या अठा-
 बीस लाख । ऊपर सहस्र अड़तालीस, सूत्र परं-
 परा भाव ॥६९॥ कोई उत्तम वांचो, मोठे जगणा
 राख । उवाड़े मुख बोल्यां पाप लागे इम भाव

તીર ॥ ૨ ॥ પર્વતે ચક્રવર્તી થયા, સૂપત દેવ
 નિર્મલક । અજિતાદિક તેવીસ જિણ ગાગા મટ
 મંડલીક । ૩ ॥ વ્રત ભેટું પર્વ ચક્રવર્તી સૂપત
 ભળ્યા મનગા । પર્વતે તેવીસ જિન ભળ્યા
 ટગ્યારં શ્રમ ॥ ૪ ॥ વીસ મ્યાનક નિર્મલ મેવિયા,
 થીવંતે મવ મુર ગાવ । નિર્મલ વી ચવિ ચીવીસ
 નિર્મલ ન મ્યા વ્રમસ વાવ ॥ ૫ ॥

राजा धर्ममित्र, पद्म प्रभुजी नै बाई' नित्त । पूर्व
 भव जे सुन्दर बाहु तेह सुपाम प्रणमं जग नाहु
 ॥ ४ ॥ पूर्व भव दगबाहु सुनीश चद्र प्रभु
 प्रणमूं निशदीस । जुगबाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं
 सुविध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लहुबाहु पूर्वभव
 जास, श्री दीनल प्रणमं हुलास । दीन राई कुल
 निलक समान, प्रणमं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥
 इन्द्रदत्त सुनिवर गुणवंत, वासुपुत्र्य बाई' भग-
 वंत । पूर्वभव सुन्दर बडभाग बाई' विमल धरी
 मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्द्र, तेह
 अनंत जिन प्रणमं सुनचंद । साधु शिरोमण
 सिंहरथ राय, धर्मनाथ बाई' चित्तलाय ॥ ८ ॥
 पूर्वभव मेघरथ गुण गाजं, शान्तिनाथ जिनवर
 चित्तलाजं । पूर्वभव रूपी सुनि बहियै, कुंधुनाथ
 प्रणम्यां सुत लहियै ॥ ९ ॥ राय सुदर्शन
 सुनि विख्यात, बाई' अरजिन त्रिभुवन नात ।
 पूर्वभव नन्दन सुनिचंद, ते प्रणमूं श्री महि
 जिनंद ॥ १० ॥ सिंह गिरि पूर्व भव सार,

કાલ ૩ જી ૧

જાત રાગ રેલાગ

ચંદ્રાનન જિન પ્રથમ જિનેશ્વર, રૂઝા શ્રીસુચંદ
 ભગવન્તક । અગિયસેણ ત્રીજા તીર્થંકર, ચૌથા
 શ્રી નન્દસેણ અરિહંતક ॥ ત્રિકર્ણ શુદ્ધ સદા જિન
 પ્રણમું ॥ ૧ ॥ ઠેરવ મેત્ર તળારે ચૌવીસક,
 અષ્ઠમાદિક સ્વામી અતુલન દુવા, એક સમૈ જન્મ્યા
 જગદીશક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૨ ॥ પંચમા ઇસિદિણ
 ધુળીજૈ, વવહારી દટ્ટા જિનરાયક । સૌમ-
 ચંદ સાનમા જિન સનહું શુત્તિસેન આઠમા
 સુપસાયક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૩ ॥ નવમા અગિયસેણ
 જિન પ્રણમું, દશમા શ્રી શિવસેણ ઉદારક । દેવ
 સમા ઇગ્યારમા ધ્યાઈ, બારમા નિશ્ચિન્ન સત્ય
 સુલકારક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૪ ॥ તેરમા અસંજલ જિન
 તારક, ચવદમા શ્રી જિનનાથ અનન્તક । પનરમા
 ઉપશન્ન નમીજૈ, સોલમાં શ્રી શુત્તિસેણ મહંતક ॥
 ત્રિ૦ ॥ ૫ ॥ સતરમા અતિપાત્ત સુળીજૈ પ્રણમું

जोड़ी प्रणमं ते पोह सम, नाम कहं हिव जे
परमिद्वक ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

ढाल ४ थी ।

॥ राग वन्यासरी ण्डेशी ।

पोह सम प्रणमं ऋषभ जिणेश्वर, श्री मरुदेवा
सिद्ध सुहंकर । चौरासी गणधार सिरोमणि,
उमभ सेण मुनिवर प्रणमं सुखभणि ॥ १ ॥
॥ उल्लालो० ॥ सुखभणी प्रणमं बाहुवल मुनि,
सहंस चौरासी मुनि । वीम सहंस प्रणमं केवली
वले सिद्ध थया त्रिभुवन धणी ॥ तीन लाग्व
समणी धुर नमं, नित नाम ब्राह्मी सुन्दरी ।
सहंस चालीसे केवली वले, नमं भ्रमणी चित्त
धरी ॥ २ ॥ आरीसं वर भरत नरेसर, ध्यान
षले कर केवल लहे वर । सहस दसे संघाती
नरपति, विचरे जगमे प्रणमं शुभ मति ॥ ३ ॥
॥ ऊ० ॥ शुभ मति जम्बूद्वीप पन्नती वग्वणिगै,
भरतनी परं लहे केवल क्षेत्र द्रव जाणिये ॥

अजिया राणी सती । सागर लाग्वै नवकोड अंतरे,
 केवली जे थया बन्दिये शुभ परे । शुभ परे सुमत
 जिणेसर गणधर, चमरकासवि अजया । नेऊ सहंस
 कोड सागर, विच नमूं जे सिद्ध थया ॥ श्रीपद्म-
 प्रभु शिष्य नामी, सुव्वय, सृषि बन्दिये, साहुणी
 ते रई नामे, प्रणम्यां दुस्त दर निकन्दिये ॥ १० ॥
 कोड सहंस नव सागर विच बली, प्रणमूं मुनिवर
 जे थया केवली । श्री सुपास विदर्भ गुणदधि
 प्रणमूं सोमा समणी गुण निधि ॥ ११ ॥ ज० ॥
 गुण निधि नवसे कोड सागर, अंतरे जे केवली ।
 तेह प्रणमूं भाव ह्यं ए, दुःख जावै सहु टली ॥
 श्रीचन्द्र प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये ।
 नेऊ सागर कोड अंतरे, केवली गुण गाइये ॥ १२ ॥

ढाल ५ मी ।

॥ सरर ससार अतार ए ह गिण्—एदेशी ॥

सुवध जिणेश मुनिवरा ए, साहुणी बन्दिये
 बित्त उछाह ए । अंतरो कोड नव सागर सहु

॥ १०० ॥ भग्न मरुदेवी माता, ध्यावो निर्मल
 ध्यान । गज हौंदे पागुं निर्मल केवल ज्ञान ॥
 १०१ ॥ भग्न आदेश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी
 दोष । चारित्र लेई ने, मुक्ति गयी सिद्ध होय ॥
 १०२ ॥ चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौबीस ।
 सती मुक्ति पत्नी, परी मन जगीश ॥ १०३ ॥
 चौबीसे जिननी, सर्व साधवी सार । अडनालीस
 लग्न ने, आठसे सितर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी
 पुत्री, राखी धर्मसुं प्रीत । राजेमनी विजया,
 मृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरैहा,
 द्रौपदी दमयन्ती सीत । इत्यादि सतियां, गई
 जमारो जीत ॥ १०६ ॥ चौबीसे जिनना, साधु
 साधवी सार । गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो
 धार ॥ १०७ ॥ इण अडीहीपमां, घरडा नपस्वी
 बाल । शुद्ध पञ्च महाव्रतधारी, नमो नमो तिण
 काल ॥ १०८ ॥ ए जतियां सतियां ना, लीजे
 नितप्रते नाम । शुद्ध मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम
 ॥ १०९ ॥ ए जतियां सतियांसुं राखो उज्ज्वल

જિહાં ફાલિત પત્રનો ચોટ માલી તિહાં ॥ ૧ ॥
 સ્વામી જીતલ જિન માન આનન્દ ૫, મતી
 મુલમા નમ તિત આનન્દ ૫ । ૫૬ સાગર કોડ
 તળો અતલો ફરો ૫૬૦ સાગર ડળો ફર
 મપ્રચો ॥ ૨ ॥ મજન યવીન યમામડ લાગ
 ડપર ફાલિત પત્ર ના ડડ ડળા તતર । શ્રીશ્રવાન
 મતિ માત્ર ના સાગર માત્રા માત્રા વલે નાળ

धया, केवली वंदिये भाव भगते सया । विमल
जिन वन्दिये साध सिमन्धर वली, समणी धरणी
धरा आगम सांभली ॥ ७ ॥ गुरु सुदरशन
मुनि सागर दत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिव
पत्त ए । नव सागर बिच अंतरे केवली, जे धया
ते सह वंदिये वलि वलि ॥ ८ ॥ स्वामी अनंत
जिन प्रणमिये जसु गणी, समणी पोमा नमूं
सुगुरु श्रेयांस मुनि । जीश अशोक भववीथ
सुप्रभ जति, भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ॥ ९ ॥
सागर च्यार नो अंतरो भाखिये, केवली वदिने
शिवसुख चाखिये । जिणवर धर्म अरिट्ट गणधर
कहूं, सती श्रमणी शिवा वान्दी शिव सुख लहू ॥
१० ॥ पूर्व भव कृष्ण गुरु ललित सु शिष्य ए, राम
प्रणमूं सुदरशण निश दीस ए । बंधव पुरुष
सिंह केशव भयो, आत्मव पंच सुमर पुढवी
गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बिच आंतरे भाखिये,
पूण पढ्योपम ऊणो करि दाखिये । तिहां कण
राय ऋषि मधव मुनिवर भयो, जे धन छोडिनै

મુન મયમ યયો ॥ ૧૨ ॥ ચાયો ચક્રીમર મનત
 કુમાર ણ ચડિયે અન રુગિયા અરિસાર ણ । ડા
 અન્તર મુનિ મુન્નિ ગયા જિકે કેવલી ચડિયે
 માવ મગત તિરુ ૧૩ ॥



गानन सुनिबर बन्द । १० श्री० ॥ भवने
 निज निर नामनी माई । कर्म हमीने केवल
 गन्या, पहुँचा दिवदुग नामनी माई । २ ॥ श्री० ॥
 नव निध खवटे रैन जिन म्यागी, चकी श्री हरि-
 सेनगी माई । आनव नही सम्वर मगडी बेगे बगी
 दिव जेनगी माई । ३ ॥ श्री० ॥ बरस बले इहां पंच
 गल अंगर, तिहां चकी जयगायरी माई । बले अनेग
 सुवने पहुँचा, ते बन्दूं मन लायरी माई ॥ ४ ॥
 श्री० ॥ गौतम सहस्र सागर गाजं गन्भीर धन्भीर
 उदारगी माई अचल कंठिल अक्षोभ प्रसेण, दशमो
 विष्णु कुमागी माई ॥ ५ ॥ श्री० ॥ प्रोह सन
 प्रगन् श्री नेनीरवर, समग ते सहस्र अठार गी
 माई । बरदत्त आदि सुनि पनरै से, बान्दूं केवल
 धार री माई ॥ ६ ॥ श्री० ॥ अक्षोभ सागर
 सहस्र बन्दू, हेमवन्त अचल सुबहरी माई । धरणि
 दुरण अभिबन्द आठमो भगवा इग्यारे अइरी
 माई ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अन्धक विष्णु सुन धारणी
 अइल, सुनिबर एह अठार री माई । आठ आठ

पलदेव धारणी पूनरी माई । बीस बरस संयम
 धरी सीख्या, चवठै पूरव सूत्र री माई ॥ १५ ॥
 रुक्मणी कृष्ण कहुं कुमर परजन्म, जम्बुवती सुत
 सम्परी माई । परजन्म सुत अनिरुद्ध अनोपम,
 जास वेद रवि अम्बरी माई ॥ १६ ॥ श्री० ॥
 समुद्र भिजै शिवा देवी रा नन्दन, सच नेमी दृढ़
 नेम री माई । वारे अगै सोला बरसे, रमणी
 पचासे तेम री माई ॥ १७ ॥ श्री० ॥ समुद्र-
 विजय सुत मुनि रहनेमी, ए सहु राज कुमाररी
 माई । कर्म हणीने मुक्ते पहुता ते प्रणमूं वारम्बार
 री माई ॥ १८ ॥ श्री० ॥ यक्षणी आद दे
 शिष्यणी समणी, आराज्यां सत्स चालीस री
 माई । साधव्यां सिद्धि तीन सत्स ते, वान्द्रूं कुमति
 टालीसरी माई ॥ १९ ॥ श्री० ॥ पौमा ने गौरी
 गन्धारी, लखमणा सुसमा नाम री माई । जम्बु-
 वती सतभामा रुक्मणी, हरि रमणी अनिराम री
 माई ॥ २० ॥ श्री० ॥ मूलमिरी मूलदत्ता वेजं,
 सम्य कुमर री नार री माई । अन्तगट अगे

धीरभद्र जस आदि दे, सिद्धा सहस्र प्रमाण । तेह
 मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी
 संख्या सह अडतीस. सहस्र बखण्ण पुष्पचूलादिक
 सहस्र दो, सिद्धि ते मन आण्ण ॥ २ ॥ समणी
 सुपासिया मीळसी, भापी धर्म चौ जाम । ए
 अधिकार कळो. श्री ठाणांग सुठाम ॥ चौदश
 पुर्वी वली, चौनाणी केशी कुमार । परदेशी
 प्रतिबोधिगो, कीधो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस
 अठाइसौ अन्तरो. सिद्धा साधु अनेक । ते सह
 षण्ढ मुविनय मूं, आणी चित्त विवेक ॥ मुनिवर
 चौदे सहस्र गुरु, प्रणमूं श्री महावीर । सातसौ
 केवली वन्दिये, गणधर एकादश धीर ॥ ४ ॥
 इन्द्रभूती अग्निभूती, तीजा वान्द वाइभुई । विगत
 सुधर्म वन्दतां, मुक्त मति निर्मल होई ॥
 मंडीपूत मोरीपूत, अकम्पित नित शिवदास ।
 १, प्रणमूं श्री प्रभास ॥ ५ ॥
 सजई नोजनेय । सेतन
 संख कह्ये ॥ धीर

भाव । एम कहै जयमलजी, एहिज नग्ननो डाव
 ॥ ११० ॥ संवन अठारन, वर्ष माने मिरदार ।
 गढ़ भालोगामां, एह कछो अधिकार ॥ १११ ॥

❀ अथ चौबीसी पद ❀

१-श्री अद्वैतार्थजी का स्तुतक ।

॥ उमादे मटियाणी ॥ ण्डेजी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमं शिरनामी
 तुम भणी । प्रभु अन्नरजामी आप । मोपर महार
 करीज हो, मेटीज चिन्ता मन नणी । म्हारा काटो
 पुरङ्कित पाप ॥ श्री आदीश्वर स्वामी हो ॥ देर ॥ १ ॥
 आदि धर्मकी कीवी हो, भर्तृक्षेत्र सर्पणी काल
 में । प्रभु जुगलिया धर्म निवार । पहिला नरवर ?
 मुनिवर हो २. तीर्थङ्कर ३ जिनहुवा ४ केवली ५ ।
 प्रभु तीर्थ थाप्या चार ॥ श्री ॥ २ ॥ मा मरुदेव्या
 धारी हो, गज हाँदे मुक्ति पधारिया । तुम जनम्यां

वीरभद्र जस आदि दे, सिद्धा सहंस प्रमाण । तेह
 मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी
 संख्या सह अडनीस, सहंस बखणं पुष्पचूलादिक
 सहंस दो, सिद्धि ते मन आणूं ॥ २ ॥ समणी
 सुपासिया सीभसी, भाषी धर्म चौ जाम । ए
 अधिकार कल्यो श्री ठाणांग सुठाम ॥ चौदश
 पुर्वी वली, चौनाणी केशी कुमार । परदेशी
 प्रतिपोधियो, कीधो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस
 अठाइसौ अन्तरो, सिद्धा साधु अनेक । ते सह
 बंदू सुविनय स, आणी चित्त विवेक ॥ मुनिवर
 चोदे सहंस गुरु, प्रणमूं श्री महावीर । सातसौ
 केवली बन्दिचे, गणधर एकादश धीर ॥ ४ ॥
 इन्द्रभूती अग्निभूती, तीजा बान्दूं वाइभुई । बिगत
 सुधर्म बन्दतां, मुक्त मति निर्मल होई ॥
 मंडीपूत मोरीपूत, अकम्पित नित शिवदास ।
 अचल भ्राता मेतार्य, प्रणमूं श्री प्रभास ॥ ५ ॥
 वीर गण वीरजसा नृप, संजई नोजनेय । सेतन
 सभ्य उदायण, नरपत संख कह्ये ॥ वीर

पिङ्गल नै शिवराजो जी । काल उदाई अँवन्तो
 मुनि वन्दतां सीभै काजो जी ॥ ४ ॥ नि० ॥
 मकाई मुनि किङ्किम वन्दिये, अर्जुन माली हुलासो
 जी । काशव खेमनि धृतहरि जाणिये, केवल रूप
 कैलाशो जी ॥ ५ ॥ नि० ॥ मुनि हरचन्द वार तियै
 बलि, सुदरशन पूरण भद्दो जी । साध समण भद्र
 समता आदरै, सुपइठ समय समन्दो जी ॥ ६ ॥
 नि० ॥ मेह मुनीश्वर अँवन्तो मुनि, राघ ऋषि
 अलक्षो जी । श्री जिन शिष्य ए सह्य मुक्ते
 गया, सेवै सुर नर सको जी ॥ ७ ॥ नि० ॥
 सहंस छतीसे समणी चन्दणा, आद दे चवदे सै
 सिद्धो जी । देवानन्दा जननी वीरनी, केवल
 ज्ञान समिन्दो जी ॥ नि० ॥ नित २ वन्दूं
 समणी ए सह्य ॥ ८ ॥ समणी जैवन्ती पढम सिम्हा-
 तरी, सिद्धि केवल पामोजी । नन्दा नन्दवती
 नंदोतरा, बले नन्दसेणिया नामो जी ॥ ९ ॥ नि० ॥
 मरता समरता मरा मरना नमूं, मरदेवा बले
 जाणोजी । भद्रा सुभद्रा सुजाया जिन तणी,

वैशाली सावण, पिङ्गल नाम निहन्त । परवायक
 पूछ्या, खन्धक समय पहन्त ॥ २ ॥ काली
 पुत्र मेहल आनन्द ऋषये ज्ञानी । वले कासव
 चौधो, धिवरां पास सन्तानी ॥ ३ ॥ मुनि तीसग
 कुन्दत बले नियंती पूत । धन नारद पुत्र मुनि,
 सामहती संयुक्त ॥ ४ ॥ मुनि क्षत्र सर्वण
 भुई, क्षिपर कण्ठो आनन्द । जिन ओसो ल्यायो,
 धन २ सिंहो मुनिन्द ॥ ५ ॥ वले पूछ्या जिनने,
 लेश्यादिक बहु भेद । गुण गाऊं महामुनि
 माकंडी पुत्र उमेद ॥ ६ ॥ हिव श्रेणिक सुत
 कहूं, जाली कुमार मयाली । उवयाली पुरससेण,
 वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ ॥ देहदन्त नै
 लठदन्त, धारणी नन्दन होय । वेहल नै वेयास,
 चेलणा अङ्गज दोय ॥ ८ ॥ इक नन्दा नन्दन,
 मुनिवर अमय महन्त । देहसेण नै महासेण,
 लठदन्त नै गुढदन्त ॥ ९ ॥ सुधदन्त कुमार
 हल्ल, द्रुम नै द्रुमसेण ॥ गुण गाऊं महा द्रुमसेण,
 सिंह नै सिंहसेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेण

निण प्रति लाभ्यो मुनि पुष्करन्त, विदांघो यथो
 सु जान । तृण सम जाणी सहु गृह्य वान,
 आदरी आठे प्रवचन मात, भविषण तसु गुण
 गान ॥ ३ ॥ पूर्व भव नृपति धनपाठ, विसमण
 भद्र नै दान रसाल, देई शिवा शिव थाय ।
 संयम लेई ते मुनिराय, लटि केवल ने शिवपुर
 जाय, ते बन्दू मन लाय ॥ ४ ॥ पूर्वभव
 मेगरथ राजान, सुभर्म मुनि नै देई दान, ओजै
 भव जिनदास । संवर पाली जे यथा सिद्ध, केवल
 दरशन ज्ञान समिद्ध, बान्दू तेह उदास ॥ ५ ॥
 नेत्राई पूर्वभव जाण, संभुत भिजे नै दोन भवाण,
 ते ते । होई । चोर समोषे सयम
 ते, तत्ता । तम हणो नै सोभो दिन प्रति
 जोई ॥ पूर्वभव नामदत्त धनेसर,
 सुनोसर, महिबल नाम कुमार ।
 ज्ञाना, भव सायर धी चैन
 दुगार ॥ ७ ॥ गुरुपति हतो
 तलाभ्यो जनि सतोष, नाम मुनि

जितशत्रु सुबुद्धि, कर्महणी तिण करी विशुद्धि,
ते बन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजै-
घोष बांदूं, बले श्री नाम गृणापुत्र बांदूं । कमला-
वती इक्षुकार, पुत्र पुरोहित बले तसु नार, नाम
जसा जम्बेगे सारी, बन्दता नित जयकार ॥ १४ ॥

ढाल १३ कीर्ति ।

॥ चतुर विचारिण्ये र—एकशा ॥

मुनि इसिदाम ने धनो बले बन्वाणिघे रे, गुण
फग्वत्त कत्तिय संयुत्त । संठाण शालभद्र आनन्द
तेतली रे, दशार्ण भद्र अचन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण
गाइये रे० गावन्ता परमानन्द । शिव गुण साधने
करी अहो निश संपजै रे, भाजै भव भय इन्द
॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहिज बीजी
ना रे एश् मुनिचर नाम । :

ही परमाण । पिता नाभ महाराजा हो भव देव
तणो कर नर भया । प्रभु पाया पद निरवाण ॥
श्री० ॥ ३ ॥ भरतादिक सौ नंदन हो, वे पुत्री
ब्राह्मी सुन्दरी । प्रभु ७ धारा अंग जान । सगला
केवल पाया हो, समाया अविचल जोत मे । कांइ
त्रिभुवन मे विख्यात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इत्यादिक
षट् ताया हो, जिन कुल में प्रभु तुम अपना ।
कांइ आगम मे अधिकार । और असंख्या ताया
हो, ऊधाया सेवक आपरा । प्रभु शरणा ही
आधार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अशरण शरण कहीजै हो,
प्रभु विरद विचारो सायवा । अहो गरीब निवाज ।
शरण तुम्हारी आयो हो हृ चाकर निज चरना
तणो । म्हारी सुणिये अरज अवाज ॥ श्री० ॥ ६ ॥
तृ करुणा कर ठाकुर हो, प्रभु धरम दिवाकर जग
गुरु । कांइ भव दुख दुकृत टाल । विनयचन्दने आपो
हो, प्रभु निज गुण संपन सास्वती । प्रभु दीनानाथ
दयाल ॥ श्री० ॥ ७ ॥

जितशत्रु सुबुद्धि, कर्महणी निण करी विशुद्धि,
ते वन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजै-
घोष बांदूं, वले श्री नाम मृगापुत्र बांदूं । कमला-
वती इक्षुकार, पुत्र पुरोटित्त वले तसु नार, नाम
जसा जम्बेगे सारी, वन्दता नित जयकार ॥ १४ ॥

ढाल १३ कीर्ति ।

॥ चतुर विचारिये रे—एदेशी ॥

मुनि इसिदास ने धनो वले बखाणिये रे, सुण
कखत्त कत्तिय संयुत्त । संठाण शालभद्र आनन्द
तेतली रे, दशार्ण भद्र अँवन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण
गाह्ये रे० गावंता परमानन्द । शिव सुख साधने
करी अहो निश संपजै रे, भाजै भव भय द्वन्द
॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहिज बीजी
वाचना रे, अँ दश मुनिवर नाम । नन्दी सुत्र में
साध सुभद्र पणे कल्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥
३ ॥ मु० ॥ विषम नन्दी फल अधिकार धनो मुनिरे,
धनो देव दिन तात । सुव्रता समणी गुरुणी शिष्यणी,

तेह ॥ १० ॥ मु० ॥ श्री जसोभद्र ने मुनि
सम्भूतविजं बलि रे, भद्रवाहु थूलभद्र । एम
अनेरा जिनवर आण माही हुवा रे, ते मुनि गाऊं
समुद्र ॥ ११ ॥ मु० ॥ काल अनन्ते मुनिवर
जे मुक्ते गया रे, संप्रति विचरे तेह । नाण
दर्शन ने चरण करण धुर धुरारे, श्री देव बन्दे
तेह ॥ १२ ॥ मु० ॥ कलश ॥ चौवीस जिनवर,
प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा । संसार
तारक केवली बलि समण समणी संथुवा ॥
संवेग श्रुत धर साध सुखकर, आगम बचने जे
सुण्या । ज्ञानचन्द्र गुरु सुप्पसाये, श्री देवचन्दे
संथुण्या ॥ १३ ॥

॥ श्री बड़ी साधु बन्दना सम्पूर्ण ॥



मोड़ो भगडा राइ मूं, काई बरजो फोगट बाद ॥
 स० ॥ ५ ॥ वर्षा चहन बग्वाण्गोजी, जाणो घण
 बादल बीजली, काई नरपति चहन निशाण ।
 आच्छी रीत समाइजी सुखदाई रुंही आदरो, काई
 ए भ्रावक अहनाण ॥ स० ॥ ६ ॥ कोड भवारा
 कीभाजी उडावै पातक आपणा, काई अवल समाई
 एक । सुर नर पदवी पावैजी शिवपुर ना सुग्न लहे
 शाश्वता, काई आणन्द लील अनेक ॥ स० ॥ ७ ॥
 अफल दिहाडो जावैजी पाछो नही आवै आपरो,
 काई धर्म धिना करी ह्द । सफल दिहाडो तेहिजी
 चिन देई धर्म समाचरो, काई जपो वीर जिणन्द ॥
 स० ॥ ८ ॥ करणी रुंही कीजैजी लाहो भल लीजै
 कोइ सूं, काई अवसर लाभो आज । काल अनन्तो
 दोहरोजी नही छै सोहरो जिन कणो, काई सारो
 आत्म काज ॥ स० ॥ ९ ॥ सम्बत अठारै गुणसठै
 जी तिथि मटासुदि भली सप्तमी काई शनिवार
 सुखदाय । चन्द्र भाण सराईजी समाई रुंही रीत
 सूं, काई चाइयास चित्तलाय ॥ स० ॥ १० ॥

४ ॥ राय प्रदेशीरे हुंतीस रे, सुरिकन्ता नार ।
 इष्ट कांत वाली घणीस रे, सत्र मे अधिकार ।
 निज स्वारथ विन पापणीस रे, मारो निज भरतार
 रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुटल आवक रे हुंतीस रे, दइता
 तीसने दोय । अग्नि मांती प्रजालियो सरे, दया
 न आणी कोय । माठी गतनी पाहुणीस रे, गई
 जमारो खोय रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चकी
 तणीस रे, हुंती चूलणी मान । व्यभिचारण चूक
 गईस रे, दीर्घ राय के साथ । घात विचारी पुत्रनीस
 रे छै ए बहुली बात रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस्र विद्या
 त्रिगण्ड धणीस रे, रावण मोटो राय । सीता ने
 हरतां धकांस रे, बैठो लङ्का गमाय । घर फुट्यो
 बैरी हण्योस रे, धका नरक मे खाय रे ॥ म० ॥
 ८ ॥ पदमोत्तर हुरमन गईस रे, गये कीचक ना
 प्राण । पाण्डव त्रिया द्रौपदीस रे मूल न राखी
 काण । माठी गत मरने गयोस रे, मारे छै जमराण
 रे ॥ मू० ॥ ९ ॥ जिणहपि ने जिनपालजीस रे,
 संभव हुंता दोय । रेणा देवी रे वज्र पस्यास रे,

२-श्री अजितनाथजी का स्तवन ।

। कुपिमन म रग माये रे धिग ॥ पड़ेगी ।

श्री जिन अजित नमो जयकारी तुम देवनको
 देवजी । जय शत्रु गजाने विजिया गणी को,
 आत्म जान तुमैवजी । श्री जिन अजित नमो
 जयकारी ॥ देर ॥ १ ॥ दृजा देव अनेग जगमें, ते
 मुक्त डाय न आवेजी । नर मन नर चित्त हमने
 एक, नुहिज अधिक मुद्रावैजी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 मेव्या देव थणा भव २ में, नो पिण गरज न
 मारी जी । अचकै श्री जिनराज मिल्यो नृ, पृष्ण
 पर उपकारीजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्रिभुवन में जग
 उज्ज्वल नेरो, फल रथो जग जानेंजी । वंदनीक
 वृजनीक सकल लोकको, आगम एम बन्वानें जी ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ नृ जग जीवन अंतरजामी, प्राण
 आधार पियारे जी । सब विधिलायक संत महा-
 यक, भक्त बडल वृद्ध धारो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 अष्ट मिट्टि नव मिट्टि को दाता, नो सम अवर न
 कोटि जी । बर्य तेज सेवक को दिन दिन, जेय तेध

ससार ॥ ए आंकडी ॥ मोह मिथ्यात की नीद में
जीवा, सुतो काल अनन्त । भव भव माहें तूं भट-
क्तियो जीवा, ते सांभल विरतन्त ॥ जी० ॥ १ ॥
ऐसा केई अनन्त जिन हुवा जीवा, उत्कृष्टो ज्ञान
अगाध । इण भव धी लेनो लियो जीवा, कुण
बतावे धांरी आद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्नि
मे जीवा, चौथी वायु काय । एक एक काया मझे
जीवा, काल असंख्याता जाय ॥ जी० ॥ ३ ॥
पंचमी काय वनस्पति जीवा, साधारण प्रत्येक ।
साधारण मे तूं बस्यो जीवा, ते सांभल सुविवेक
॥ जी० ॥ ४ ॥ सुई अग्र निगोद मे जीवा, श्रेणि
असंख्याती जाण । असंख्याता प्रतर एक श्रेणि
मे जीवा, इम गोला असंख्याता प्रमाण ॥ जी०
॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये जीवा, शरीर असं-
ख्याता जाण । एक एक शरीर मे जीवा, जीव
अनन्ता प्रमाण ॥ जी० ॥ ६ ॥ ते मां धी अनादी
जीवण जीवा, मोक्ष जावे दग चाल । एक शरीर
खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनन्ते काल ॥ जी० ॥

ऊपर रहै वेहु पाय । आंख्यां आटी मुष्टी वेहु जीवां,
 इम रखो भिष्टा घर मांय ॥ जी० ॥ १५ ॥ वाप
 विरज माता रुद्र जीवा, इसडो लियो थे आहार ।
 भूल गयो जन्म्यां पछै जीवा, सेवी करे अविचार
 ॥ जी० ॥ १६ ॥ ऊट कोड सुई लाल करे जीवा,
 चापै रुं रुं मांय । अण्ट गुणी हुवै वेदना जीवा
 गरभावासारे मांय ॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवै
 कोड गुणी जीवा, मरतां कोडा कोड । जनम मरण
 री जीवडा जीवा, जाणजो मोटी खोड ॥ जी० ॥
 १८ ॥ देश अनारज जपनो जीवा, इन्द्री हीणी
 होय । आज्जो ओछो हुवै जीवा, धर्म किसी विध
 होय ॥ जी० ॥ १९ ॥ कदाचित नर भव पामियो
 जीवा, उत्तम कुल अवतार । देही निरोगी पायने
 जीवा, घरी खोयो जमवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग
 फांसीगर चोरटा जीवा, धीवर कस्तूरी न्यात ।
 उपजी ने सुई जिसी जीवा, पंसी न रही कोई जान
 ॥ जी० ॥ २१ ॥ नवदेई राजलोक में जीवा, जनम
 मरणरी जोड । खाली बालाव मात्र ए जीव



पन्द्रह जात । भव जीवा मार देवे एकण जीवने,
करै अनन्ती घात ॥ ८ ॥ भव जीवां अर्थ अनर्थ
धर्म कारणे, जल ढोल्या बिन ज्ञान । भव जीवां
बाहिर शुचि बहुला किया, मांहे मैल अज्ञान ॥
९ ॥ भव जीवां वैतरणी लोही राधनी, तिणरो
तीखो नीर । भव जीवां तिणने डुबोवे तेहमे, छिन
छिन होय शरीर ॥ १० ॥ भव जीवां ढांडा ज्युं
चरतो सदा, नही जाण्यो तिथि वार । भव जीवां,
पान फूल रंख छेदतो, दया न आणी लिगार ॥
११ ॥ भव जीवां वृक्ष तिहां कुल सांवली, तिणरी
बैसाणे छांय । भव जीवां पान पडे तरवारसा, टूक
टूक होय जाय ॥ १२ ॥ भव जीवां धन्धा में खूतो
रहे, जूती घररे भार । भव जीवां लोह तणे रथ
जोतरे, धरती धूप अंगार ॥ १३ ॥ भव जीवां
परनी छाती दाह दे, चोस्या वित्त बहुवार । भव
जीवां धन खाभो कुटुम्बियां, सहे एकलो मार ॥
१४ ॥ भव जीवां हाय पांव छेदन करै, नाखे अंग
मरोर । भव जीवां पुकार करे किण आगले, वहां



षण संग पामे साता । सप्तमी सात निवारिये,
 कुम्पसन महा दुग्गदाय । दुर्गति कारण शिव
 रिहसु काई रक्त अज्ञान अधाय प्रबल दुग्ग आष
 किया पावे ॥ वी० ॥ ७ ॥ रमणी रङ्गरानो मतवालो,
 लगावे आत्म ने कालो । सीख सतगुरु की नहिं
 लागी, अभोगति जाय कुमति रागी । अष्टमी आठूं
 मद नजो, अष्ट रिपु जड जार । आठूं गुण परगट
 हुवेस काई, शिव सुन्दर सुगुत्तार । द्विदुख मे
 फेर नहीं आवे ॥ वी० ॥ ८ ॥ जगन सहु इन्द्र-
 जाल जाणी, विषय तृष्णा नज वर प्राणी ।
 कषायानि अलगी कीजे, प्रवर ज्ञानामृत रस पीजे ।
 नवमी नव तत्व भणी, अद्वै यथार्थ सार । बाढ़
 अभङ्ग ब्रत आदरोस काई, ध्यान विमल वर धार ।
 चले गुण येणी शुद्ध भावे ॥ वी० ॥ ९ ॥ कामिनी
 कनक फल्लु फंसियो, लिप्त मोह जाल विषय
 रसियो । नरक फुल निगोद मे जार्, परम पीडा
 सरी संकटार् । दशमी दश विष आदरो, श्रमण
 धर्म सुविनीत । विनय उलम्भा बापडास

पोष घीज पावे, सफल क्रिया करणी धावे । ज्ञान
 विन क्रिया सह करणी, तुच्छ फल छार लेप वरणी ।
 चौदह गुणस्थानक चढो, क्षपक श्रेणि धर खन्त ।
 घाती कर्म खपायनेस काई, लहै केवल वृत्तन्त ।
 आत्मा परमात्मा धावे ॥ घी० ॥ १४ ॥ चरण
 तप भग दर्शन वासुं, मुक्ति भग आख्या जिन
 वासुं । एह विन सीभयो को नाहीं, काण्यो शिव
 पन्थ जैन मांही । पूनम पणदश भेद सूं, सीभा
 सिद्ध अनन्त । भाव धरी भजिये सदास काई,
 अरिहन्त श्रमण महन्त । प्रणमतां परमानन्द पावे
 ॥ घी० ॥ १५ ॥ गणाधिप जयवर यशधारी, भजो
 भवि सम्प्रति सुखकारी । सुगुरु सुप्रसाद सुमति
 आई, शहर सरदार मांही गाई । उगणीसै इक-
 तीस मे, भाद्रव सुदि गुरुवार । तिथि पण्टी कुम्भो
 भर्णस काई, सन्तोष मति अनुसार । सुणत
 आह्लाद हृदय आवे ॥ घी० ॥ १६ ॥

इति धली इन्द्र सुरांरो नाथ रे । उमगी रे ने
 सगला आंधन्यां रे, जोयजो काई अवरज वाली
 पान रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलियां रे तीन पत्थो-
 पननो आयुषो रे, लान्सी ज्यांरी तीन कोस री
 काय रे । कलकल पुरै ज्यांने दश जानना रे,
 पादल जिन गया दिलाय रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
 भगवन्त चौशीसवां श्री वर्द्धमानजी रे, शकेन्द्र
 सोल्यो इस्तडी बाय रे । स्वामी दोय घडी आयुने
 बधारज्योरे, जिनि यह भस्मग्रह टल जायरे ॥ आ०
 ॥ ७ ॥ बलना भीवीर जिनेन्द्र इस्तडी कहै रे, सुन
 रे शकेन्द्र मांररी बाय रे । तीन काल में दान हुई
 नहीं रे आयुषो बधाखो नहिं जाय रे ॥ आ० ॥
 ८ ॥ अस्थिर संसार नजी सुनि नीसखा रे, करना
 सुनि नवकरनी बिहार रे । भारंड पक्षीनी ज्यांने
 उपमा रे, न धरै सुनि मनना नेह निगार रे ॥
 आ० ॥ ९ ॥ चारित्र पाटे रुडी रीति सुं रे, देवे
 बली अपनो छन्दो रोज रे । तुलत विराजे सुनि
 सुक्ति में रे, यश लरै शरलोड ने परलोड रे ॥

स्यां राज ॥ आ० ॥४॥ अष्ट कर्म ढल अति जोग-
वर, ते जीत्यां सुख पास्यां । जालम मोह मार कै
जगसे, माहम करी भगास्यां राज ॥ आ० ॥ ५ ॥
अवट पंथ नजी दुर्गति को, शुभगति पंथ समा-
स्यां । आगम अग्र्य तणे अनुमारे, अनुभव दशा
अभ्यास्यां राज ॥ आ० ॥६॥ काम क्रोध मद लोभ
कपट तजि, निज गुण सृं लवलास्यां । विनचन्द
संभव जिन तृष्टौ, आवा गमन मिटास्यां राज
॥ आ० ॥ ७ ॥

४-श्री अभिनन्दन ग्वासीजी का स्तव ।

॥ आदर जीव शिष्या गुण आदर ॥ पदेशी ॥

श्री अभिनन्दन, दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन
योगजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ संवर राय सिद्धारथ राणी,
जेहनों आत्म जान जी । प्राण पियारो साहिब
सांचो, तुही जो मातनें तातजी ॥ श्री० ॥ २ ॥
कैट्यक सेव करं शङ्कर की, कैट्यक भजै मुरारी

यह धर्म । कई मिथ्याती होसी मानवी । मुश्कल
 निकलेला ज्यांरा भ्रम ॥ ५ ॥ हंस अनारज
 सुखिया होयसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक ।
 काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक
 होसी थोक ॥ ६ ॥ रसमे सरसाई थोड़ी होयसी,
 आजपो पावेला पूरो नांय ॥ चौमासा लायक क्षेत्र
 साधने, थोड़ा मिलेला भरत मांय ॥ ७ ॥ साधु
 श्रावककी पड़िमा विछेद जावसी । शिष्य गुरुरा
 अविनीत । गुरु चेलाने थोड़ा पढ़ावसी । मुश्कल
 निकलेला ज्यांरा भ्रम । कुमाणस कलेश घणा
 होयसी । अल्प होयसी न्यायवन्त । हिन्दूरा जाया
 नीचा बाजसी । ऊंचा तो बाजसी म्लेच्छ लोग ॥
 नीचा कुलरा राजा बाजसी । करसी खोटा-खोटा
 न्याव । ज्यारें घरमे लोहड़ो लावसी, सो धनवन्त
 कहवाय ॥ सम्बत् उगणीस वर्ष इकसटे । चितौड़-
 गढ़ कियो चौमास । गुरु नन्दलाल तणै शिष्य
 जोड़िया । अल्प कियो समास ॥

गही, निन पापसे उरते रहो । फिरते रहो शुभ
कामसे, उपकार नी करते रहो । एमी बातोंको
दिलसे जमा तो सही ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ पूज्य गुण पुष्पांजली ॥

हृषभादि महावीरजी वन्द वार हजार, प्रथम
पाट सुभर्मजी द्वितीय जङ्ग अणगार, प्रभव स्वामी
नोसरे सयम्भव चतुर सुजाण जसोभद्र सन्नुत
विजय भद्र बाहु गुण खान ॥ १ ॥ स्थूल भद्र ये
आठवां आर्यसिंह बलसिंह, सोवन स्वामी
इग्यारमा बयर स्वामी स्थूल जितधर आर्य
समंद यह सोलवां नन्दोल खान, नागरस्ती
रेवंतजी सिंहगणी प्रणाम ॥ २ ॥ बीसवां स्थूल
जानिए ऐनवंत नागजीन, गोविन्द स्वामी तेईसवा,
भूतारेन रहे प्रीति ॥ चौगणी और इस्सगणी
देवगणी जना प्रणय जाण सत्ताइसमे पाट ॥

जैनी बाजो हो नरां, बोलेो वचन विचार ।
 खुले मुँहे बोलतां, लागे पाप अपार ॥१॥
 अठाई दिन आठकी परमव खरची मांग ।
 संसार हांती कारणे, नगर जीमाणो नांग ॥२॥

—कोठारी चान्दमल

निवेदन ।

जन समाज में सामायिक के समय तो
 लोग पुस्तको से ढाल, स्तवन मन्त्रायादि
 जयगायन वांचते हैं । किन्तु बाद में अच्छे-
 जानकार श्रावक भी उवाड़ें मुग्न पढ़ते हैं । यह
 अभ्यास पापकारी है । अतः इस बुरी आदत
 को छोड़ देना ही ठीक है ।

—कोठारी चान्दमल

जी । गणपति परम भगवान् । ॥ श्री ० ॥ १ ॥
 पारती ॥ श्री ० ॥ २ ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 सो दन भवयो स्वयम् जी । ॥ श्री ० ॥ ३ ॥
 भवमे पद्वी न न्यायं दायजी ॥ श्री ० ॥ ४ ॥
 जटपी इन्द्र नरिन्द्र निचाज, तदपी पारती ॥ श्री ० ॥ ५ ॥
 जी । तू पजनीक नरिन्द्र इन्द्र पो दीन भगवान्
 कृपाल जी ॥ श्री ० ॥ ५ ॥ जय लग आवागमन
 द्यटे, तय लग काजं अरदासजी । स्वयन्ति सति
 ज्ञान समतिन गुण पाऊं दृढ़ विसवामजी ॥ श्री ० ॥
 ॥ ६ ॥ अभय उद्धारण विरुद्ध तिहारो, जोयो इण
 संसारजी । लाज विनयचन्द्रकी अब तोने, भव
 निधि पार उतारजी ॥ श्री ० ॥ ७ ॥

५-श्री सुमतिनाथजी का स्तव ।

॥ श्रीशीतल जिन साहिवाजी ॥ पदेशी ॥

सुमति जिणेश्वर साहिवाजी, मगरथ नृप नो
 नन्द । सुमङ्गला माता तणो जी, तनय सदा सुख-
 फन्द, प्रभु त्रिभुवन तिलो जी ॥ १ ॥

સુપ્તિ ટાલાર, સદા સદિસા નિલોજી । પ્રણમં વાર
 હજાર પ્રભુ ત્રિભુવન નિલોજી ॥ ૩ ॥ અધુના મો
 યન યોદિયોજી યાલતી કામુષ સુલાસ । ન્યં સુખ-
 યન યોદ્યો સદી જિન સદિસા સદિ ન જાય ॥
 પ્રભુ ૦ ૬ ॥ અર્પં પદ્મજ સુરજ સુખી જી, વિક્રમં
 સુર્ય પ્રકાશ । ન્યં સુખ યનદો મદ મદ, કશિ જિન
 જરિન હુલાસ ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૪ ॥ ગમ્યો પીડ પીડ
 ધરેજી જાન વર્ષાશ્રુ જેજ । ન્યં યો યન નિશ ડિન
 રહે, જિન સુમરન સં નેજ ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૫ ॥ કામ
 યોગની લાલસા જી વિરતા ન ધરે સદા । વિન
 નુમ બજન પ્રતાપ થી ટાણે સુપ્તિ સદા ॥ પ્રભુ ૦
 ॥ ૬ ॥ અવનિધિ વાર ડનારિયે જી, સદા સદા
 યગવાન । વિનચન્દ્ર થી વિનતી, યાનો કૃપા નિધાન
 ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૭ ॥

૬-શ્રીપદમમુન્દરામીજીવા મન્ત્રકન ।

॥ પ્રથમ કેસ મનસા પદ દુહાયા ॥ ૭૮૭ ॥

૭૮૭ પ્રભુ પાવન નામ નિજારો પ્રભુ પદિન

उत्तारन तारो ॥ १२ ॥ जन्मि भीतर मीन कम्पाई,
अति पापिण जमारो । तदपि जीत तिम्रा तज प्रभु
भज, पार्य मरदपि पारो ॥ पदम० ॥ ६ ॥ गों
जाणण प्रमदा नाटक पी मोटी तिव्या न्यारो ।
तेतनो करणतार प्रभु भजने होत तिव्या सं न्यारो
॥ पदम० ॥ ७ ॥ वेभ्या चुगल चण्डाल जुवारी
चोर मत्ता मट मारो । जो रत्यादि भर्ज प्रभु तोने,
तो निवृत्त ससारो ॥ पदम० ॥ ८ ॥ पाप परालको
पुज घन्यो अति मानो मेरु अकारो । ते तुम नाम
ह्ताशन सेती, सलड्यां प्रजलत सारो ॥ पदम० ॥ ९ ॥
परम धर्मको मरम मत्तारस, सो तुम नाम उचारो ।
या सम मन्त्र नही कोई दृजो त्रिभुवन मोहन
गारो ॥ पदम० ॥ १० ॥ तो सुमरण विन इण
कलयुगमे, अवर न को आधारो । मै बलिजाजं तो
सुमरन पर दिन २ प्रीत बधारो ॥ पदम० ॥ ११ ॥
कुसमा राणीको अङ्गजात तं, श्रीधर राय कुमारो ।
निनैचन्द्र कहे नाथ निरशन, जीवन प्राण हमारो
॥ पदम० ॥ १२ ॥

७-श्रीसुपार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन ।

॥ प्रभुजी दीन दुखाल सेवक गगन आरो ॥ एतेज ॥

श्री जिनराज सुगम, पूरे आश हमारी ।
 प्रतिष्ठ सैन नरेश्वर को सुन, पृथ्वी तुम मरुतारी ।
 सगुण सनेही साहब सांचो, सेवकने सुखकारी
 ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक,
 मन बांछिन सुखपूरे । बार बार तुम्ह दिनती यरी,
 भव = चिन्ता बुरी ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ जगत
 गिरोमणि भगति निवारी, कल्प वृक्ष सम जागृ ।
 पूरण ब्रह्म प्रभु परमेश्वर, भव भव तुम्हें पिछागृ
 ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ हूं सेवक तुं साहब नेगे, पावन
 पुरुष विजानी । जनम = जिन निध जाजं नो,
 पातो प्रीति पुगनी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ ताग्य नग्य
 लन अशक्त शरणको, बिन्दु इमो तुम मोहे । नो
 सम दीनदयाल जगत में, इन्द्र नगिन्द्र न को हूं ॥
 श्रीजिन० ॥ ५ ॥ स्वयम्भू गमण बड़ो मनुष्यों में, शैल
 सुमेरु पिगजै । तू शङ्कर त्रिभुवन में मोहो, भगत
 किरां दुख भाजै ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ जगम जगो-

वैराग्य-सागर ।

समाप्त

आम् वोटागो जवानमल चान्दमल ।

हृदय-पुष्प (मासिक) ।

हृदय —

महात्मनः सदैव

पोतवाल प्रेस ।

१० १३ विमानोः स्त्री

कलकत्ता ।

द्वोर विनिष्ठाद २५३३

संस्कृत २०००]

[विनिष्ठाद]

॥ मुक्त० ॥ ४ ॥ चन्द्र चक्षोरन के मनमें, गज
 आवाज होवे घनमें । पिय अभिलाषा ज्यों त्रिय
 तनमें, त्यों वसियो तं मो चित्त मनमें ॥ मुक्त०
 ॥ ५ ॥ जो मुनजर साहिव तेरी, तो मानो विनती
 मेरी । काटो भरम करम बेरी, प्रभु पुनरपि नहिं
 पखं भव फेरी ॥ मुक्त० ॥ ६ ॥ आत्म ज्ञान दशा
 जागी, प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी । अन्य देव
 भ्रमना भागी, विनैचन्द्र तिहारो अनुरागी ॥ मुक्त०
 ॥ ७ ॥

६-श्री सुनिष्कन्धः श्री कः स्तुतः ।

॥ बुढापो बेरी आवियो हो ॥ पदेशी ॥

श्री सुविध जिणेश्वर बंदिजे हो ॥ डेर ॥ काकंदी
 नगरी भली हो, श्री सुग्रीव नृपाल । रामा तसु पद
 रागनी हो, तस सुत परम कृपाल ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥
 त्यागी प्रभुता राजनी हो, लीधो संजम भार ।
 निज आत्म अनुभाव थी हो, पाम्या प्रभु पद
 अविकारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अष्ट कर्म नो राजवी हो,

मोह प्रथम क्षय होन । मन समन्ति चारित्र नो
हो, परम ज्ञायक गुण होन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञाना-
वरणी दर्शणावरणो हो, अन्तरागके अन्न । ज्ञान
दर्शण बल ये त्रिज हा प्रगट्या अनन्ता अनन्त
॥ श्री० ॥ ४ ॥ अवा वात सुग पामिया हो आयु
क्षय करन श्री जिनराय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नाम करम
नो क्षय करी हो, अमूर्त्तिक कदाय । अगुरु लवू पण
अनुभव्यो हो, गोत्र हरम मृकाय ॥ श्री० ॥ ६ ॥
आठ गुणा कर ओलह्या हो जात रूप भगवन्त ।
विनैचन्द के उर बसो हो, अह निश प्रभु पुष्पदन्त
॥ श्री० ॥ ७ ॥

१०-श्री शीतलकफज्जीकी स्तुति ।

॥ जिद्वारा ॥ पदेशा ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री दृश्य नृपति पिता, नन्दा धारी माय ।

रोम रोम प्रभु मो भणी शीतल नाम सुहाय ॥

जय० ॥ १ ॥ करुणा निध करतार, सेव्या सुर

नन जेहवो । वांछित सुख दाता ॥ जय० ॥ २ ॥
 प्राग प्रियारो नृं प्रभु. पतिव्रता पति जेन ।
 लगन निग्नन लग रही. दिन दिन अधिको प्रेम ॥
 जय० ॥ ३ ॥ जीतल चन्द्रमनी रंग. जपता निश दिन
 जाप । विषय कषाय ना जगनै नेहो भव दुःख
 नाप ॥ जय० ॥ ४ ॥ आग्न न्द्र प्रगान थी, उपजै
 चिन्ता अनेक । ते दुःख काटो मानसी. आपो अचल
 विवेक ॥ जय० ॥ ५ ॥ गंगादिक भुवा वृषा.
 नय गन्ध अन्ध प्रहार । नकल जरीगी दुःख हरो.
 दिल नृ विन्द दिचार ॥ जय० ॥ ६ ॥ सुपग्नत्र
 होय जीतल प्रभु. नृं आशा दिनगन । दिनेचन्द्र
 कहै मो भगी दीजै नुक्ति नुकान ॥ जय० ॥ ७ ॥

११-श्री श्रेयांसखसुकी स्तुति ।

॥ गग काको देगी होरो सो ॥

श्रेयांस जिनन्द सुमर रे ॥ देर ॥

चेतन जाग कन्याग करन को आन निन्यो
 अवसर रे । गान्ध प्रमान विद्यान प्रभु गुन. नन

चञ्चल गिर कर रे ॥ श्री० ॥ १ ॥
 धिलास भजन को, दृढ़ विश्वास पसर रे ।
 भ्यास प्रकाश लिये विन, सो सुमरन
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ कंदर्प क्रोध लोभ मद माया
 सबही पर हर रे । सम्यक् दृष्टि सहज मुग
 ज्ञान दशा अनुसर रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 जीवन तन धन अरु, सजन सनेही घर रे ।
 छोड़ चले पर भवकुं, बान्ध शुभाशुभ धर रे ॥ श्री० ॥
 ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी, आशा
 करत अमर रे । ते पूरव सुकृत कर पायो, धरम
 मरम दिल भर रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ विश्वसैन नृप
 विस्त्रा राणी को, नन्दन तूं न बिसर रे । सहज
 मिटै अज्ञान अविद्या, मुक्त पंथ पग धर रे ॥ श्री० ॥
 ६ ॥ तूं अविकार विचार आतम गुण, भ्रम जंजाल
 न पर रे । पुद्गल चाय मिटाय बिनैचन्द्र, तूं जिनते
 न अवर रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

१२-श्री कासुपूज्यजीकी स्तुति ।

॥ फूलसा देह पलकमे पलटे ॥ पदेशी ॥

प्रणमूं वास पूज्य जिन नायक, सदा सहायक
तूं मेरो । विषमी वाट वाट भय थानक, परमासय
शरणो तेरो ॥ प्रणमूं० ॥ १ ॥ खल दल प्रबल दुष्ट
अति दान्धण, चौतरफ दिये बेरो । तो पिण कृपा
तुम्हारी प्रभुजी. अरियन भी प्रगटै चेरो ॥ प्रणमूं०
॥ २ ॥ विकट पहार उजार विचालै चोर कुपात्र
करै हेरो । निण विरियां करिये तो सुमरण, कोई
न छिन सकै डेरो ॥ प्रणमूं० ॥ ३ ॥ राजा बाद-
शाह कोड कोपै, अति तकरार करै छेरो । तदपी
तूं अनुकूल हुवै तो, छिनमें छूट जाय केरो ॥
प्रणमूं० ॥ ४ ॥ राक्षस भूत पिशाच डांकिनी,
सांकिनी भय न आवैं नेरो । दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न
लागै, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो ॥ प्रणमूं० ॥ ५ ॥
विष्फोटक कुटादिक सङ्कट, रोग असाध्य मिटै
देहरो । विष प्यालो अमृत होय प्रगमें, जो
विश्वास जिनन्द केरो ॥ प्रणमूं० ॥ ६ ॥ मान जया

वसु नृपके नन्दन, तत्त्व जगारय पुन प्रेरो । वे कर
जोरि बिनैचन्द्र विनवे वेग मिटे मुझ भव फेरो
॥ प्रणमू० ॥ ७ ॥

१३-श्री विमलनाथ स्वामीका

स्तुतन ।

॥ भिग २ मोट विटम्बना ॥ पदेशा ॥

विमल जिनेश्वर सेविये । धारी बुध निमल हो
जाय रे ॥ जीवा ॥ विषय विकार विसार ने, नूं
मोहनी करम गवाय रे ॥ जीवा ॥ विमल जिनेश्वर
सेविये ॥ १ ॥ सूत्र साधारण पणे । परतेक बनस-
पति माय रे ॥ जीवा ॥ छेदन भेदन ते सही ।
मर मर उपज्यो तिण काय रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥२॥
काल अनन्त तिहागन्यो । तेहना दुःख आगम थी
संभाल रे ॥ जीवा ॥ पृथ्वी अप्प तेउ वायु मे ।
रह्यो असंख्या असख्यातो कालरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥३॥
एकेन्द्री सूं बेद्री धयो । पुन्याई अनन्ती वृद्ध रे
॥ जीवा ॥ सती पंचेन्द्री लगे पुन्य बंध्या । अन

अवर न होत अनन्त ॥ कवि परिहित कर
कर पके, आनन अरे विजान मो पाप तुम अनु-
भव विनो न नको मलना उजगर अनन्त ४

मनुष्ये भोक्तृत्व तन्मन्त्रो देवो जायो जाय । कहि न
तको मनु तुम नृपति अलग अनन्त जाय ॥

अनन्त ५ मन दुःख बागो मो विवै पहुवे
नाने उगरे ताही लोकलोक मो निराविकल्प
निराकार अनन्त ६ मनु जता तिरुथ
मि मनु तुम अनन्त निरुद विनैवद अव
ओलखो ताहि मन्त्रमन्त्र अनन्त । ७ ॥

१५-श्री इन्दिराशङ्करौ का नृकृत् ।

। नृकृत् नृकृत् नृकृत् नृकृत् । नृकृत् ।

अरु निनेखन हनु विवै मलो प्यारो प्राण
तनन कदर न बितरु हो निगारु तहो तदा
अपरिहित अरु अरु १ २ ज्य पतिहारी
कुम्भ न बितरै नष्टो नरिन निदान । पलक न
बितरै हो पदनिनो पिड भगो, बकवो न बितरै रे
आन अरु ३ ४ ज्य लोभो मन अनको

लालसा, भोगी के मन भोग । रोगी के मन
 माने औषधि, जोगी के मन जोग ॥ धरम० ॥ ३ ॥
 इणपर लागी हो पूरण प्रीतडी. जाव जीव पर्यन्त ।
 भव भव चाहूं हो न पड़े आंतरो, भय भञ्जन
 भगवन्त ॥ धरम० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद मच्छर
 लोभ धी, कपटी कुटिल कठोर । इत्यादिक अवगुण
 कर हूं भखो, उर्द कर्म केरे जोर ॥ धरम० ॥ ५ ॥
 तेज प्रताप तुमारो प्रगटै. मुक्त हिवड़ामें रे आय ।
 तो हूं आत्म निज गुण संभालने, अनंत बली
 कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सुव्रता जननी
 तणो, अंगजान अभिराम । विनैचंद ने रे बल्लभ
 तूं प्रभु. सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥

१६-श्री शान्तिनाथ स्कामी का

स्तुति ।

॥ प्रभुजी पधारो हो नगरी हम तणी ॥ पदेशी ॥

शान्ति जिनेश्वर साहब सोलमों । शान्तिदा-
 * यक तुम नाम हो ॥सौभाग्य॥ तन मन वचन सुध

यह पुस्तक चान्दमलकी माजी माद्वि

होमजि की तरफ से

जैन भाइयों की सेवा में

मादर भेट ।

पुस्तक यत्न से रक्खें और जयणा से पढ़ें

पुस्तक मिलने का पता —

(१) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल ।

मु० बलुन्दा (मारवाड़) ।

(२) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल ।

मु० सिराजगंज (पटना) ।

कर ध्यावता । परै सघली आस हो ॥ सौभाग्य
 ॥ १ ॥ विश्व सैन नृप अचला पटराणी । तत्
 कुल शिणगार हो ॥ सौभागी ॥ जन मति शान्ति
 करी निज देश मे । मरी मार निवार हो
 सौभागी ॥ २ ॥ विघन न व्यापे तुम सुख
 कियां । न्हारै दारिद्र दुःख हो ॥ सौभागी ॥ अ
 सिद्धि नव निदि मिलै । प्रगटै सबला सुख हो
 सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिन
 तं । तेहने कमीय न काय हो ॥ सौभागी ॥ जे
 कारज मनमें बहै । ते ते सफला धाय हो ।
 सौभागी ॥ ४ ॥ दूर दिशावर देश प्रदेश में
 भटके भोला लोक हो ॥ सौभागी ॥ सानिध्या
 सुमरन आपरो । सहजे मिटै सहु शोक हो न
 सौभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छै एह
 जो जिण सेवक होय हो ॥ सौभागी ॥ ॥
 आशा पूरै देवता । चौसठ इन्द्रादिक सो
 सौभागी ॥ ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तु
 हमने छै आधार हो ॥ सौभागी ।

विनैचन्द्र विनवै । आपो सुख श्रीकार हो ॥
मौभागी ॥ ७ ॥

१७-श्रीकुण्डुनाथ स्वामीका स्तवन ।

॥ रेखता ॥

कुन्ध जिणराज तं जेमो. नहीं कोई देवतं
जैमो । त्रिलोकीनाथ तं कहिये, हमारी बांह दृढ़
गहिये ॥ कुन्ध० ॥ १ ॥ भवोदधि डूबतो नारो,
कृपानिधि आमरो थारो । भगेमा आपका भारी,
विचारो विगढ़ उपकारी ॥ कुन्ध० ॥ २ ॥ उमाहुं
मिलन को तोसे, न राखो आंतरा मोसे । जैमी
मिद्व अवस्था तेरी, तैमी चेतन्यता मेरी ॥ कुन्ध
॥ ३ ॥ कर्म भ्रम जाल को दृष्ट्यो, विषय सुख
ममन में लपट्यो । भ्रम्यो हूं चिहं गति मारिं उदै
कर्म भ्रम की छांटी ॥ कुन्ध ॥ ४ ॥ उदै को जोर है
जालूं, न छूटै विषय सुख तालूं । कृपा गुन्देवकी
पाई, निजानम भावना आई ॥ कुन्ध ॥ ५ ॥ अजब
अनुभूति उर जागी. सुगति निज सूर्य में लागी ।

कुनो नम पर तो जाना विनायक नम नम
 मान ॥ कृष्ण ॥ २ ॥ श्री गुरु सर नम नम
 अतो सर्वज्ञ सग रत्ना । तिनना नीर नम
 गुण मे न नगर्ष अविना उमने ॥ कृष्ण ॥ ३ ॥

१८-श्री अर्चनाथ स्वामीजी का

रत्नसूत्र ।

अथ विनायक एवम् ।

अष्ट नम अविनासी, शिव सुख लीधो ।
 विमल विज्ञान विलासी । साहिब सीधो ॥ १ ॥
 तू नेनन भज अर्चनाथ ने, ते प्रभु त्रिभुवन राय ।
 नान श्रीधर सुदर्शन देवी माता, तेहनों पुत्र
 कहाय ॥ साहिब सीधो ॥ २ ॥ जोड़ जनन
 करतां नहो पामे, एहवी मोटी नाम । ते जिन
 भक्ति करी नै लहिये, मुक्ति अमोदक ठाम ॥
 साहिब ॥ ३ ॥ समकित सहित कियां जिन
 भगती, ज्ञान दरशन चारित्र । तप वीर्य उपयोग
 निहारा, प्रगटै परम पवित्र ॥ साहिब ॥ ४ ॥ सो

उपयोगी मरूप चिदानन्द, जिनवर ने नृं एक ।
 द्वैत अविद्या विभ्रम मेटो, बाधें गुह्य विवेक ॥
 साहित्य० ॥ ५ ॥ अलग्न अरूप अग्रण्डित अवि-
 चल, अगम अगोचर आपैं । निरविकल्प निकलंक
 निरञ्जन अद्भुत जोति अमापैं ॥ साहित्य० ॥ ६ ॥
 ओलग्न अनुभव अमृत याको, प्रेम सहित नित
 पीजैं । हं नृं छोड़ विनैचन्द अन्नस, आनम राम
 रमीजैं ॥ साहित्य० ॥ ७ ॥

१६-श्री मल्लिकार्जुन स्वामीजी का

स्तवक १

॥ लावणी ॥

महि जिन बाल ब्रह्मचारी, कुम्भ पिता पर-
 भावनी मढ्या । निनकी कुंवारी ॥ टंक ॥ मानी
 कृंव कन्दरा मांही, उपना अवतारी । मालनी
 कुमुम मालनी बांछा, जननी उरधारी ॥ म० ॥ १ ॥
 निणथी नाम महि जिन थाप्यो, त्रिभुवन प्रिय

મારો અરુન નરિન હુનાર મધુલી કેડ ખરો
 મારો મં ॥ ૨ ॥ ધરન કાજ જાન મજ આપે,
 અરનિ હ મારો, મિતિનારુનો ઘેરિ જોતરકા
 સેવા વિહારો ॥ મં ॥ ૩ ॥ રાજા હુમ્મ પ્રકાશી
 હુમ પૈ રોચક વિધિ મારો, વહુ નુપ જાન મજી
 નો ધરન આપા અતકારી ॥ મં ॥ ૪ ॥ ઓસુજ
 ખીર દોષો વિનાને, રાજ્યો હુ શિપારી ॥ હુનલી
 તક રજો નિજ અરુન ધોધી રકવારી ॥ મં ॥ ૫ ॥
 ઓહન સગત ખરો ત્તા હુનલી ઓજિણ શિપ-
 મારો, અરનિ વહુ હુલાયા મન્દિર, ધીવ્ર વહુ
 દિના પારો ॥ મં ॥ ૬ ॥ હુનલી રેનન હુનું નુપ
 મોહા અવતર વિહારી ॥ હાક ઉધાર લીમો હુનલી
 કો અમર્યો અનિ મારો ॥ મં ॥ ૭ ॥ હુત્તર
 હુર્ગન્ય સહો ન જાવે, હજ્યા નુપ રારો ॥ નવ ઉપ-
 રેશ દિયો ઓહન ત્, મોદ દરશા ઘરો ॥ મં
 ॥ ૮ ॥ મહા અતાર ઉદારક દેની, હુનલી રક
 પ્યારી ॥ તમ કિમ પટકૈ અવ હુત્તર ને, નારિ નરક
 વારી ॥ મં ॥ ૯ ॥ નુપ હુનું પ્રનિ બોધે મનિ રોપ,

सिद्ध गति संभारी । विनैचन्द्र चाहत भव भवमें.
भक्ति प्रभु थारी ॥ म० ॥ १० ॥

२०-श्री मुनि सुव्रत स्कामी का
गुणकृत ।

॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ पदेर्जा ॥

श्री मुनि सुव्रत साहिवा, दीन दयाल देवां
तणा देव के । नागण तरण प्रभु तो भणी, उज्जल
चित्त मुमरुं नितमेव कै ॥ श्री मुनि सुव्रत साहिवा
॥ १ ॥ हूं अपराधी अनादि को. जनम जनम
गुन्हा किया भग्नर कै । लड़िया प्राण छः कायना,
सेविया पाप अटार करुं कै ॥ श्रीमुनि० ॥ २ ॥
पूख अशुभ करतव्यता, ते हसना प्रभु तुम न
विचार कै । अधम उधारण विन्द छै, शरण आयो
अव कीजिये मार कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किञ्चित
पुन्य परभाव थी. उण भव ओलख्यो श्रीजिन
धर्म कै । निवृत्त नरक निगोद थी, एहवी अनुग्रह
करो परब्रह्म कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ माधुपणो नहिं

संगतो, आगत व्रत न किया अर्द्धपार वै ।
 आदर्यो तो न अगधिया तैत्थी मलियो अनन्त
 संसार क ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब समकित व्रत
 आदर्यो, नदपि अगधक उत्तम मय पार वै ।
 जनम जीवत सफलो नृप तृणपर विनयं पार
 हजार कं ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तृप्त
 पिता धन धन श्री पदमावती माय वै । तसु सुत
 त्रिभुवन तिलक तू, वन्दन पिनैचन्द शीश नवाग
 कं ॥ श्रीमुनि० ॥ ७ ॥

२१-श्री नेमिनाथजी का रतवन ।

॥ सुणियोरें बाग कुटिल मझारी तोता ले गई ॥ पदेशी ॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इकबीसमों ॥ टेर ॥
 विजयसेन नृप विप्राराणी नेमीनाथ जिन जागो ।
 चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्तमव सुर नर आनन्द
 पागो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ भजन कियां भव
 भवना दुष्कृत, दुक्ख दुभाग मिट जावे । काम
 क्रोध मद मच्छर तृष्णा दुरमत निकट ॥ ४२

॥ सु० ॥ २ ॥ जीवादिक नव तन्व द्विये घर, जंय
 हेय समुझीजै । तीजी उपादेय ओलखने, समक्ति
 निरमल कीजै रे ॥ मुजा० ॥ ३ ॥ जीव अजीव बन्ध
 ये तीनं, जंय पदार्थ जानो । पुन्य पाप आस्रव
 परहरिये, हेय पदार्थ मानो रे ॥ मुजा० ॥ ४ ॥
 संवर मोक्ष निर्जग निज गुण उपादेय आढरिये ।
 कारण कारज समझ भली विधि, भिन भिन
 निरणो करिये रे ॥ मुजा० ॥ ५ ॥ कारण जान
 मस्पी जियको कारज क्रिया पसारो । दोनं की
 मास्त्री सुध अनुभव आपो खोज निहारो रे ॥
 मुजानी ॥ ६ ॥ तं सो प्रभु प्रभु सो तं है, द्वैत
 कल्पना भेटो । गुढ चेतन आनन्द विनैचन्द, पर-
 मानम पद भेटो रे ॥ मुजानी० ॥ ७ ॥

२२-श्री अरिष्टनेम प्रभुका मत्कन्त ।

॥ नगरी मृदु वर्णा छै जी ॥ प्देशी ॥

श्रीजिन मोहन गारो छै, जीवन प्राण हमारो
 छै ॥ देर ॥ समुद्र विजय सुत श्री नेमीश्वर, यादव

कृत तो टीतो । स्तन कक्ष भारनी सेवा देवी,
 जेतो नन्दन नीतो ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुन पुरार
 पशु की कर्णधार जानि जगत सुग्न फीको । नव
 भव नेह नज्यो जोवन मे, उग्रसेन नृप भी को ॥
 श्री० ॥ २ ॥ सतन्त्र पुरुष सो सजम लोभो, प्रभुजी
 पर उपकारी । धन धन नेम राजुल की जोड़ी, महा
 बालब्रह्मचारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बोधानन्द सरूपा-
 नन्द मे, चित्त एकाग्र लगायो । आत्म अनुभव
 दशा अभ्यासी शुक्त ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ पूर्णानन्द केवली प्रगटे, परमानन्द पद
 पायो । अष्टकर्म छेदी अलवेसर, सहजानन्द
 समायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नित्यानन्द निराश्रय निश्चल,
 निर्विकार निर्वाणी । निरान्तक निरलेप निरामय,
 निराकार वर नाणी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवो ज्ञान
 समाधि संयुक्तो, श्री नेमीश्वर स्वामी । पूरण कृपा
 विनैचन्द प्रभु की, अबते ओलख पामी ॥ श्री०
 ॥ ७ ॥



२४-श्री महावीर ममु का स्तवन ।

॥ ओ नमस्कार जपो मन रगे ॥ एदेशा ॥

धन २ जनक सिद्धारथ राजा, धन वसलादे
मात रे प्राणी । ज्यां सुत जायो गोद खिलायो,
बर्द्धमान विख्यात रे प्राणी ॥ श्री महावीर नमो
वर नाणी, शासन जेहनो जाण रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥
प्रवचन सार विचार हिया मे, कीजै अरध प्रमाण रे
॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र विनय आचार तपस्या,
चार प्रकार समाधि रे ॥ प्रा० ॥ ते करिये भव
सागर तरिये, आत्म भाव अराधि रे ॥ प्रा० ॥
श्री० ॥ ३ ॥ ज्यो कश्चन तिहुं काल कहीजै,
भूषण नाम अनेक रे ॥ प्रा० ॥ त्यो जगजीव चरा-
चर जोनी, है चेतन गुण एक रे ॥ प्रा० ॥ श्री०
॥ ४ ॥ अपणो आप विषै धिर आत्म, सोहं हंस
कहाय रे ॥ प्रा० ॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय,
पुद्गल भरम मिटाय रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥
शब्द रूप रस गन्ध न जामे, ना सपरस तप छांहि

रे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नार्हीं, आत्म
 अनुभव मांहि रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख
 जीवन मरन अवस्था, ते दश प्राण संघात रे
 ॥ प्रा० ॥ इणथी भिन्न विनैचन्द्र रहिये, ज्यों जल
 में जल जात रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
 गावतां मन गढ़ गहै ।
 कुमट गोकुलचन्द्र नन्दन,
 विनैचन्द्र इणपर कहैं ॥
 उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
 तत्व निज उरमें धरी ।
 उगणीस सौ छः के छमच्छर,
 चतुर्विंशति स्तुति डम करी ॥

अनुपूर्वी ।

जहा १ है वहा नमो अरितनाण बोलना ।

जहा २ है वहां नमो सिद्धाण बोलना ।

जहा ३ है वहा नमो आगरिगाणं बोलना ।

जहा ४ है वहा नमो उवज्झाणाण बोलना ।

जहा ५ है वहां नमो लोण सब्बसाहण बोलना ।

अनुपूर्वी गुणने का फल ।

अनुपूर्वी गुणिये जोय,

छ. मासो तपनो फल होय ।

सदेह मन आणो लिगार,

निर्मल मन जणो नवकार ।१।

शुद्ध बन्ध परि विवेक,

दिन दिन प्रत्यै गिणवी एक ।

एम अनुपूर्वी जे गुणे,

ते पाच सो सागरना पापने हणे ।२।

अशुभ कर्म के हरण को, मन बडो नवकार ।

आणो द्वादश अङ्ग मे देव तिथो तत्त्व सार ॥ ३ ॥

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

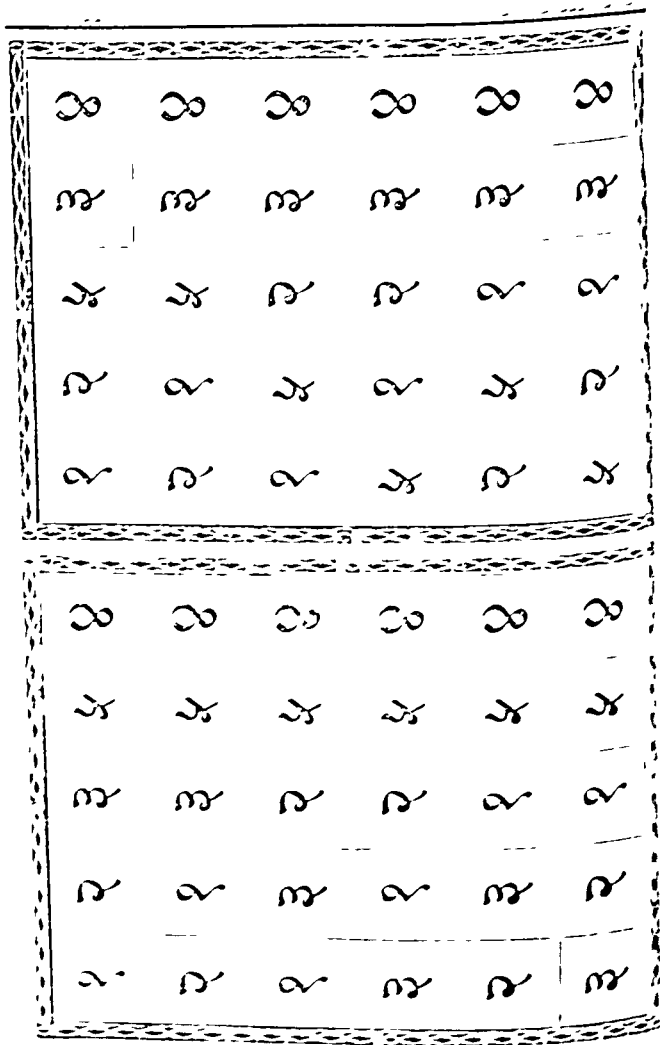
1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.

1. 2. 3. 4. 5. 6.



ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

म म म म म म

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

म म म म म म

५ ५ ५ ५ ५ ५

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

म	म	म	म	म	म
अ	अ	अ	अ	अ	अ
इ	इ	उ	उ	ए	ए
उ	ए	इ	ए	इ	उ
ए	उ	ए	इ	उ	इ

म	म	म	म	म	म
ए	ए	ए	ए	ए	ए
इ	इ	उ	उ	अ	अ
उ	अ	इ	अ	इ	उ
अ	उ	अ	इ	उ	इ

वेगव्य मागर ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

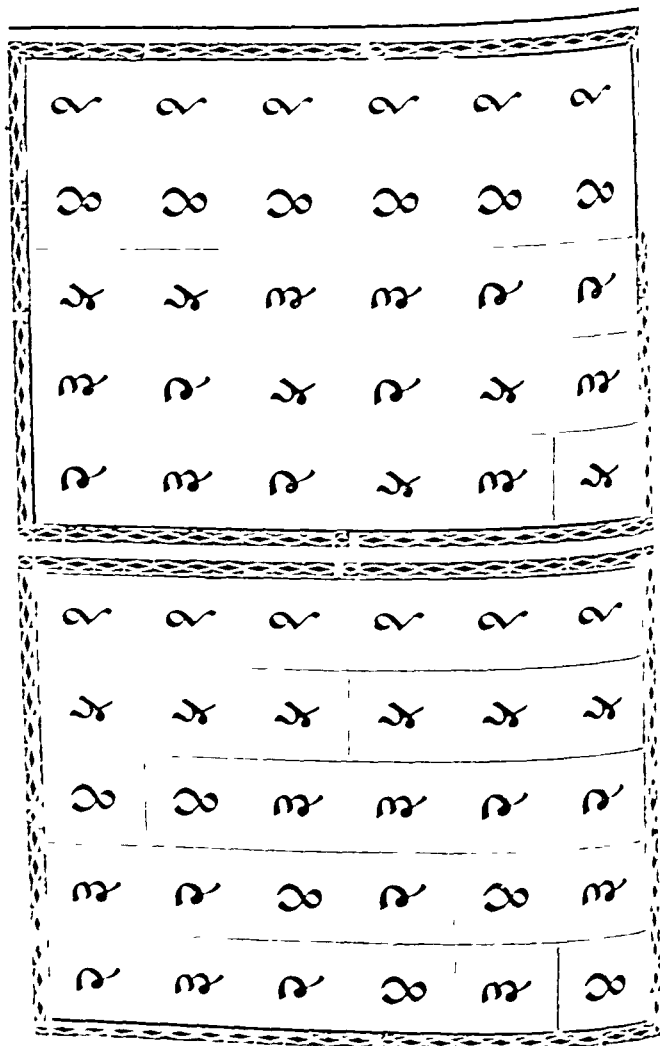
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विषय	पृष्ठा
१८ चउच्चिहार उपवास का पंचस्त्राण ..	१७४
१९ रात्रि चउच्चिहार का पंचस्त्राण	१७४
२० ताम्र उस्मास को थोकडो	१७४
२१ माश्र मार्गनो थोकडो	१८३
२२ ताम्र बोलकरा जाव तीश्रदूर गोत्र बावे	१८३
२३ कर्म विपाक वम कथा ना बोल	१८७
२४ कामदेव श्रावकर्ता सञ्भाय	२२३
२५ मृगापुत्र की ढाल	२२५
२६ म्त्रा चरित्र की ढाल	२२८
२७ चार शरणा को स्तवन	२३३
२८ चेत चेत नर चेत	२३५
२९ भुलो मन भमरा फाट भयों	२३७
३० मान न कीज रे मानवी ..	२३८
३१ कर्म सञ्भाय ..	२४३
३२ शान्तिनाथ प्रभुजी का स्तवन ...	२४६
३३ पूज्य श्रीलालजी महर्षि की लावणी	२४६
३४ पूज्य श्री श्री १००८ श्रीलालजी महाराज को स्तवन	२५६
३५ कर्मचन्दजी स्वामी कृत ध्यान .	२५७
३६ साधु मुनिराज के २२ परीषद	२६६
३७ इग्यारे गणधराको स्तवन	२७०
३८ तपसी श्री श्री सिरेमलजी महाराज के गुणो की ढाल	२७२
३९ तेरह ढाल की बटी साधु वन्दना ...	२७४

१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	१२'
२०'	२०'	२०'	२०'	२०'	२०'
५	५	२०	२०	१२'	१२'
२०	१२'	५	१२'	५	२०
१२'	२०	१२'	५	२०	५

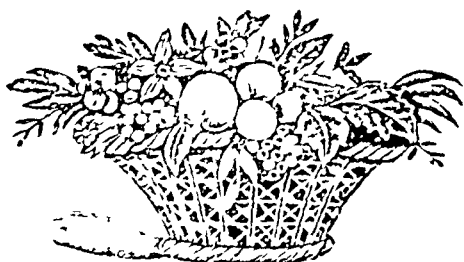
१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	२०'
१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	१२'
५	५	२०	२०	२०'	२०'
२०	२०'	५	२०'	५	२०
२०'	२०	२०'	५	२०	५



अथ श्री मोलह मत्तीनी स्तवन ।

आदिनाथ आदि जिनवर बंदी, सफल मनो-
 ग्रथ कीजिये ॥ प्रभाते उठी मङ्गलीक कामे.
 मोलह मत्तीना नाम लीजिये ॥ १ ॥ बालकुमारी
 जगहिनकारी ब्राह्मी भगवती बहेनड़ी ॥ २ ॥
 व्यापक अक्षर रूपे मोलह मत्ती मांदि जे बड़ी ॥
 ॥ ३ ॥ बाहुबल भगिनी मत्तिय शिरोमणि.
 सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ॥ अंक स्वरूपी त्रिभु-
 वन मांदि. जेह अनोपम गुण युता ॥ ४ ॥
 चन्दनबाला बालपणे श्री, शीयलवती गृह आविका
 ॥ उड़दना बाकला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लक्ष्मी
 वन भाविका ॥ ५ ॥ उग्रसेन धुवा भार्गवी
 नंदनी, गजेमती नेम बल्लभा ॥ चौवन बेरो काम
 ने जीन्यो संयम लेई देव दुल्लभा ॥ ६ ॥ पत्र
 भगवती पांडव नागी. द्रुपद ननया यन्त्राणिये ॥
 एक मां आटे चीर पुगना, शीयल महिमा नम
 जाणिये ॥ ७ ॥ दशरथ नृपनी नागी निम्ब

त्रिविधे तेहने वन्दिये ए । नाम जपंतां पातक
जाए, दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निषथा-
नगरी नलह नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहिनी ए ।
संकट पड़तां गीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी
ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजिता जग जन पूजिता,
पुष्पचुला ने प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामित
दाना, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीर
भात्री शास्त्रे साग्री, उदय रतन भाखै मुडा ए ।
घाहणु वहना जे नर भणशे, ते लेखे सुख सम्पडा
ए ॥ १७ ॥ इति ॥



आथं आजिना साती वही

रासि ॥

॥ दोहा ॥

अजना मोटी सती, पाल्यो शील रसाल ।
अशुभ कर्म उदय हुवा, आयो अणहुन्तो आल ॥
शील पाल्यो तिण किण विधे, किण विध आयो
आल । हिवै धुरसूं उत्पति कहूं, सुणज्यो सुरत
सम्हाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ कडखानी ॥ एदेशी ॥

महिन्दपुरी जग जाणिये, राजा हो महिन्द
षसे तिण ठामक । तसु पटराणी छै खड़ी, मानवेगा
राणी तेहनो नामक ॥ सौ पुत्र राणी तिण जन-
मिया, ते रूप में खडा छै अभिरामक । तयारे केडे

जाई एक बालिका, अञ्जना कुंवरी छै तेहनो नामक
 ॥ सती रे शिरोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ मान पिताने
 बाहली बणी, बंधव सगलां ने गमती अत्यन्तक ।
 रूप में छै रलियामणी. नैण दीठां बणो हरष थं-
 तक ॥ सजन सगा ने सुह्रामणी, सखी सहेलियां
 में रही नित खेलक । विद्या भणी सुत्र अनि बणी,
 दिन दिन बधे जिम चम्पक बेलक ॥ स० ॥ २ ॥
 अञ्जना कुंवरी मोटी हुई, चिन्तवी ने राय वित्त
 मभारक । पछै वेग प्रधान तेड़ावियो, कहे अञ्जना
 बर तणो करो रे विचारक ॥ जव एक कहे रावण
 ने दीजिये, एक कहे दीजे मेघ कुमारक । ते पुत्र
 छै राजा रावण तणो, तिणरो जोवन रूप बणो
 श्रीकारक ॥ स० ॥ ३ ॥ जव एक कहे डम सांभलो.
 बरष अठारमें मेघ कुमारक । चारित्र लेसी बंगण
 मं, बरष छावीस में जासी मोक्ष मभारक ॥ तो
 कन्या ने सुत्र किहां थकी, सगलाई कर देखो मन
 में विचारक । मेघ कुमार ने वो मनी, और विचारो
 कोर्ट राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी नणो

राजवी, राग प्रताड विगाधर नामक । तेहनो पुत्र
 अति दीपनो, पवनकुमार है तेहनो नामक ॥
 अञ्जना ने वर योग है ए राजा कियो बचन प्रमा-
 णक । पीछे दूत मेल्यो निण नगरी मे, सगपण
 कीधो है मोटे मण्डाणक ॥ स० ॥ ५ ॥ रूप ने
 गुण अञ्जना नणो, प्रगट हुवो है लोक मे नामक ।
 ते पवनकुमार विण साभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने
 कहे है आभक ॥ कहे आपां जावां रूप फेरने,
 जोवाने अञ्जना नणो रूप शिणगारक । पीछे मनो
 करी दोनुं नीसला, ते आय उभा महल नले निण
 वारक ॥ स० ॥ ६ ॥ हिचे पवनजी निरखे छै
 अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रखो दिष्टक । रूप में
 जाणे देवांगणां, बाणी बोले जाणे कोयल बाणक ।
 चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै नृगनैन
 समानक ॥ स० ॥ ७ ॥ अञ्जना बैठी सिधासणे,
 दोनुं पासे अनेक सलिया नणा हृन्दक । वस्त्र
 आभूषण अगे धसा शोभ रही जाणे पूनम
 चंदक ॥ हिचे बसन्त माला हमउच्चरे बाई ने जोग

जोड़ी मिली श्रीकाशक । उद्धरे पवनजी जगिने,
 मेहरी यमी है अहना नाशक ॥ २० ॥ ८ ॥ हिं
 बीजी सुखी हम उद्धरे, पदमा नो कर मन जिनका
 जेहक । मेहका पवनजी कर नदी, वन अछाह मे
 वगिठ लेहक ॥ गंतु इन्दी ने जीपने, वन
 छावीन में पवनजी मेहक । निज काण क
 वजिरो, कल्या ने कर नदी जगिने जेहक ॥ २०
 ॥ ९ ॥ हिं अहना सुख हम उद्धरे, बहं वन :
 ने न नो अवनाशक । कर्म करणी करी काहं
 वेना हो जामी सुखि मज्जाक ॥ सुख नाहं
 निज सुख ना, पवनजी सुखी ने वने जगि
 हेहक । आ नो ने न न कृष्णजी, न न नदी उद्धरे
 मोह विहोहक ॥ २० ॥ १० ॥ हिं पवनजी न
 नदि जिनके आ न न में नदी अहना वनका ।
 न न नदि वने ने जगती, विल मेहो नदी न
 ठिकारक सुख जगती न न करे, नो हिं वने
 कर्म उद्धरे । जो वने नो नने वन उद्धरे
 वने ने जगती न न सुख उद्धरे ॥ २० ॥ ११ ॥

दिपय

उपदेशिक ढाला—

- ४० तमारे सुखमाजा नित्त त्पार०
 - ४१ त् जाग रे सुमाना तारे काल घरा आना०
 - ४२ चारे रधानकरा जान ए०
 - ४३ मरर लसजा रे, कनक ने कामणा०
 - ४४ जीवा त्तो भालो रे प्राणा इम०
 - ४५ भव जावा आदि जिनेश्वर पित्त
 - ४६ पखवाहे को ढाल
 - ४७ अनाधो मुनिका ढाल
 - ४८ आउतो तूटा को साधो को नही रे . .
 - ४९ भगवत स्तुति . .
 - ५० पूज्य आ ओ १००८ आ जवाहरलालजी महाराज के गुणाका ढाल—महारा पूज परमेश्वर स्वामी०
 - ५१ पञ्चमे ओरे को स्तवन
 - ५२ पूज्य आ ओ जवाहिरलालजी महाराज के गुणा को स्तवन—प्यारे प्रभु का ध्यान लगातो सदा
 - ५३ पूज्य गुण पुष्पाञ्जली .
-

आशीष केतुमती मानक ॥ लृण उतारै रे बैनड़ी,
 रूप देख मन हरपित थायक । जाचक बोले विरुदा-
 वली, डणविध पवनजी परणवा जायक ॥ स०
 ॥ १५ ॥ सेना मिणगारी चतुरङ्गिणी, गाजेजी
 अम्बर बाजैजी तूरक । स्वजन सगा मिलिया वणा,
 जान चाले जाणे गङ्गा नों पूरक ॥ वर विद्याधर
 दीपतो, शोभ रत्नो निणरो वदन सनूरक । चिहुं
 दिश साथे सेवक वणा हाथ जोडी रत्ना ऊभा
 हजूरक ॥ स० ॥ १६ ॥ महिन्दपुरी नेड़ा आविया,
 आई बधाई राजी हुवो रायक । दीधी यधामणी
 तेहने हरपित हुई अञ्जना तणी मायक ॥ आरती
 नों महोच्छव करे, महिन्द राजा मन हरप न
 मायक । स्वजन सगा मिलिया वणा, सेना छेई
 राजा माहमोजी जायक ॥ स० ॥ १७ ॥ महिन्द
 राजा माहमो आवियो, ढोल दमामा ने बुरे निशा-
 णक । राजा हो राणी सहू मिल्या, व्यापियो,
 निमर ने आंथम्यो भाणक ॥ सुमरो सामेल
 आवियो, पवनजी देखने आनन्द थायक । धवल

मङ्गल गावे गोरङ्गी, लोक अञ्जना नों वर जोयवा
जायक ॥ स० ॥ १८ ॥ महिन्द राजा मोटा राजा
भणी, अति वणो दियो आडर मनमानक । उच्छ-
रद्द मन मांहे अति वणो, भाव भगति मूं मिलियो
राजानक ॥ जान उतारी रे आण ने, आपिया
भोजन विविध पकवानक । ऊपर सिखरण सांचवे,
खादिम स्वादिम दिया वणा मिष्टानक ॥ स० ॥
१९ ॥ हिवे पवनजी तोरण आविया, तो ही
अञ्जना ऊपर वणो रे अभावक । नाम सुण्या ही
राजी नहीं, मूल नहीं मन तेहनी चावक ॥ धवल
मङ्गल गावे गोरङ्गी, पूरण सासु करे बहु भांतक ।
पिण मन में न भावे पवन ने, घे तो परणे रे
अञ्जना बालवा दाहक ॥ स० ॥ २० ॥ रूपा तणो
रे मण्डप रच्यो, सोवन तणी मांडी तिहां वेहक ।
सोवन पाट मोत्यां जड्यो, अञ्जना ने पवनजी बैठा
छै तेहक ॥ हथलेवे हाथ मेल्यो तिहां, नयण
निहालेछै अञ्जना नारक । पिण पवन ने मूल गमे
नहीं, द्वेष जागे पहिली बात विचारक ॥ स० ॥

२१ ॥ द्विवे पवनजी परण ने उतल्या, कीथी पहरा-
वणी अञ्जना नो तातक । गयवर आपिया अति
वणा, ताजा तुरङ्ग दीथा विख्यातक ॥ कनक रत्न
बहु आपिया, आपी छै रूपा तणी बहु कोड़क ।
वसन्तमाला दामी आदि दे, पांच सै दामियां
सरीखी जोड़क ॥ स० ॥ २२ ॥ द्विवे परणी ने
रतनपुरी मंचल्या, माहमो आयो तिहां प्रह्लाद
रायक । अञ्जना मन हरपित धई. मासु सुसरा ना
पूजिया पायक ॥ पांच सौ गांव राजा दिया,
आप्या छै आभरण रतन बहु मोलक । आया छै
बीन्द ने बीन्दणी, आया छै तिहां वाजते ढोलक
॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

दिवे कितोक काल गयां पीछे, आयो भेटणो
राय । तिहां पवन रो द्वेष परगट हवे, ते सुणज्यो
चित्त लाय ॥

॥ डाल ॥

पीहर थी आवो रे मुंनडी वस्त्र आभरण
 आपिया तासक । बसन्तमाला ने देई करी, अञ्जना
 मेलिया पवन रे पासक ॥ मुंनडी पवन खाधी
 नरो वस्त्र गहणा न पहरिया अङ्गक । अञ्जना स्
 द्वेष आणने, वस्त्र गहणा दिया मानङ्गक ॥ स०
 ॥ २४ ॥ बसन्तमाला बिलखी यई, आय कही
 अञ्जना कने जानक । स्वामी रो आपां ऊपरे, हेत न
 दोसे होई तिलमानक ॥ अञ्जना आंख्यां आंतू
 भरे, मै सु चकी छै भगति अनेकक । ये नर दीसे
 छै निरमला, आपणे दोसे छै कर्म विशेषक ॥ स०
 ॥ २५ ॥ हिवे अञ्जना मैठी रे मालिये, पवनजो
 तुरी खिलावण जायक । आवता जावतां निरखनी,
 निम निम मन मे हरषित धायक ॥ पवनजी कोपे
 रे परजले, निजर दीठां मूल न सुहायक । नारी
 निहाले छै मो भणो, गोखे आडि दीनी भीत
 चिणायक ॥ स० ॥ २६ ॥ पांच सौ गांव फोते

किया, माता पिता कहे सांभलो पृतक । अञ्जना
 सती रे सुलखणी, बहू ने संपिये निज घर सृतक ॥
 मोटा रे कुल तणी ऊपनी, राजा हो महिन्द तणी
 वहै लाजक । अञ्जना सं आदर कीजिये, डम कहे
 केतुमती ने राय प्रह्लादक ॥ स० ॥ २७ ॥ वापरो
 आणो पाछो मेलियो, आणे आयो बले बड़ो
 वीरक । अञ्जना कहै नवी आविये, मेल्या आभरण
 अद्भुत चीरक ॥ स्वामी रे मन मान्या नहीं, पीहर
 आय ने सं करुं बातक । डम कही बंधव मोकल्यो,
 दुःख धरे घणो मायने तातक ॥ स० ॥ २८ ॥ डम
 थारे बरस बीच में गया, ए कथा ऊपरे एतोई
 सम्यन्धक । हिवे रावण ने वरुण कटकी थई, मांढो-
 मांढि ऊपनो अति द्वेषक ॥ हय गय रथ सजिया
 वणा, पाला बग्वनर शोभे शरीरक । शूरां ने सुभद
 जिणगागिया, चालियो कटक बाजी रण भेरक ॥
 स० ॥ २९ ॥ एक तेड़ो रतनपुरी आवियो, प्रह्लाद
 गय करे जाया ने साजक । पवनजी हाथ जोड़ी
 कहे, एनो छै पिताजी डम तणो काजक ॥ तुम घर

रैठा लीला तरो पुत्र जाया नो एत पमाणक । इम
 करिने आपुपगाल संचर्या तार मे अनुप ने लीनो
 है पाणक ॥ स० ॥ ३० ॥ पवनजी चाले रे कटक
 मे मन माहे चिन्तवे अशना नारक । दूर यकी
 पाय लागसा, भाव कुभाव देगां एक वारक ॥
 घसन्तमाला माहरी नैनरी, दही नो कचोली न
 भरी ने आणक । सुकन रहा मनावल्यां, मारग
 माहे उभो रहो आणक ॥ स० ॥ ३१ ॥ सुकन
 मिसे पिउ देवत्या नमग करी ने हं लागसू
 पायक । लोक सहु इम जाणतो, दही नो कचोली
 देवती नायक ॥ कटक जाना पिउ बांदत्या, जाण
 से अशना आदरी पवन कुमारक । जिहां लगे
 स्वामी आवे नहो तिहां लगे मनमे कलं रे सन्तो-
 षक ॥ स० ॥ ३२ ॥ हिवे गयन्द वैसी दल सचखा,
 मात पिता ने नमाविगो शीशक । सज्जन सहु रे
 सन्तोषिया, अशना ऊपर अति घणी रीसक ॥ दूर
 धकी दृष्टि परी, चतुर चितारा नो जोवो चितारा-
 नक । पुतली लिखी रन्ना सारली एह चितारा ने

देवो इनामक ॥ स० ॥ ३३ ॥ मन्त्री कहे नहीं
 पतली, भीति ओटे ऊँची अञ्जना नारक । मांभल
 पवन कोप्यो वणो । काँई मिली मोने मारग मझा-
 रक ॥ दूर टेली आधी करी, आशा अलुधी मेली
 आयो जातक । वसन्तमाला मोँड़े कड़का, मुख न
 देखावज्यो तुम नणो नाथक ॥ स० ॥ ३४ ॥ अंजना
 कहे दासी भणी, पोते छै म्हारे अति वणा पापक ।
 गेहली ए गाल न बोलिये, कटक जाता काँई
 दीधो सरापक । आशा मोटी मन मांढरे, काँई
 कुसांवण काढियो प्हक । देई ओलंभा दासी भणी,
 बाँह झाली ले गई वर मांढक ॥ स० ॥ ३५ ॥
 द्विवे अञ्जना कहे सुण सुन्दरी, मोने दुःख मांढे
 दुःख उपनो आजक । पाणी मांढे करी पातली,
 सामरे पीढरे गई मांढरी लाजक ॥ चारित्र लेवो
 मोने मिरै, करणी करी सासुं आतम काजक ।
 नाम जपुं जगदीश नों, तेह सँ पामिये अविचल
 राजक ॥ स० ॥ ३६ ॥ द्विवे नगर थकी दल मंचखो,
 माग में दूर कियो रे मलाणक । चकवो चकवी

तिहां टलबले, व्यापियो तिमिर ने आंध्रम्यो
भाणरु ॥ पवनजी मन्त्री ने डम कहे, अंजना नों
मूल न लीजिये नामरु । पुरुष पराया सुं मन करे,
चक्रवा चक्रवी नी परे मूकी छै नाररु ॥ स० ॥ ३७ ॥
मन्त्री कहे सुणो कुंवरजी, तुमे एवड़ो काई आणो
मन मे भरमरु । मोटकी सती छै अंजना, अहो
निशि सेवती जिन तणो धर्मरु । पुरुष परायो वंछे
नहीं, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेषरु ॥ आ
शील सरोवर भूलती, गुण किया शिव गामी जाण
विशेषरु ॥ स० ॥ ३८ ॥

॥ देह ॥

वचन सुणी मन्त्री तणो, कोमल थयुं निज चित्त ।
पवनजी मन्त्री ने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥ १ ॥
खोटो ए कारज में कखो, सन्तापी निज नार ।
वचन वरां से दुहवी, करवो कवण बिचार ॥ २ ॥
मो मन मे प्यारी बसे, जाणूं मिलिये जाय ।
लोके लाज रहे नहीं, मन मन में मुर्झाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेहिज्ज ॥

हिंवे पवनजी कहे सुणो मन्त्रवी, हं कटक
जाऊं छं नारी ने सन्नापक । पाछो जाऊं तो प्रजा
हंसे, महेला मांहे लाजे मांहेरो वापक ॥ मन्त्री कहे
छाना जावस्यां, तेड़ी सेनापति कहे नूं रुखवालक ।
अमे यात्रा करी ने पाछा आवस्यां, तिहां लग
कटक नी कीजे रुखवालक ॥ स० ॥ ३९ ॥ हिंवे
प्रछन्नपणै दोनूं आविया, आवी ने अंजना नों
उघाड्यो किंवाडक । वसन्नमाला तव उठने, उता-
वली बोले छै गाली दो चारक ॥ कहे शूरो पुन्य
गयो कटक में, कोण रे लम्पट आयो इण ठामक ।
प्रभाते हं राजा ने चिनवी, छाड़ाय देसूं हं तेहना
गामक ॥ स० ॥ ४० ॥ प्रहस्त मन्त्री डम उचरो,
उहां आयो छै प्रह्लाद नो नन्दक । अंजना तणो छै
जिर धणी, वंश विद्याधर दीपक चंदक ॥ वसन्न-
माला आवी ओलव्यो, नयण निहाली ने पामी
आनन्दक । किंवाड ग्योली ने मांहि लिया, वसन्न
माला वनावियो नरिन्दक ॥ स० ॥ ४१ ॥

निवेदन ।

मानाजी की उत्कट इच्छा थी कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय जो आत्मार्थी जनोके व्याख्याय और ज्ञानवृद्धिमें सहायक हों। उन्हीं की सद्प्रेरणा से यह प्रस्तुत पुस्तक आप लोगों की सेवा में उपस्थित की गयी है। सग्रह कैसा हुआ है ? इसके निर्णायक आप लोग हैं। पुस्तक प्रकाशित करना मेरा प्रथम प्रयास है। ऐसी अवस्था में अनेकों त्रुटिमें रह जानी सम्भव है। आशा है उदार सज्जनचन्द्र सुधार कर पढ़ेंगे एवं मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे, ताकि द्वितीयावृत्तिमें सशोधन कर दी जाय।

भवदीय—

कोठारी चान्दमल ।

॥ दोहा ॥

अंजना सती निण अवसरे, वंठी सामायिक
मांय । कर्म धर्म संभालती, रही धर्म लव ल्याय ॥
वसन्तमाला निण अवसरे, हाथ जोड़ी कहै आम ।
सती रे सामायिक तिहां लगे, राजा करो विश्राम
॥ १ ॥

॥ दाल तेहिज देशि ॥

हिवे अंजना सामायिक पूरी करी, हाथ जोड़ी
लागे पिउ ने पायक । पवनजी कहै तूं मोटी सती,
लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक ॥ वचन बरां से मै
दुहवी, मै तने कीधो अभाव अगाधक । हाथ जोड़ी
करूं विनती खमज्यो सती म्हारो अपराधक ॥
स० ॥ ४२ ॥ अंजना पाय नमी कहै, एहवा बोल
बोलो कांई स्वामक । जेहवी पग तणी मोजड़ी,
तेहवी पुरुष ने स्त्री जाणक ॥ हाथ जोड़ी ने आण
उभी रही, मधुर सुहामणा बोलती वैणक । कहै
प्राप्ति विण किम पामिये, जाणे पत्थर गाली ने

कीधो छै मैणक ॥ स० ॥ ४३ ॥ तीन दिवस रमा
 निहां पवनजी, निहां भाव भगति निण कीर्ण
 विशेषक । वाय ढोले बींभने करी, पटरस भोजन
 आपिया अनेकक ॥ हाव भाव करे छै अंजना.
 प्रीतम सुं वणी सांचवी रीतक । पवनजी आनठ
 पाम्या वणा. अंजना सुं धरी अति वणी प्रीतक ॥
 स० ॥ ४४ ॥ हिवे पवनजी पाछा निकले, अंजना
 बोली छै जोड़ीजी हाथक । आशा रहे कटाव
 मांहरें, लोक माने किम मांहरी बातक ॥ निण सुं
 मान पिता ने जणावज्यो, बाहना आभरण आप्या
 अहनाणक । शङ्का पड़े तो देखावज्यो, मान पिता-
 दिक सहू लेसी जाणक ॥ स० ॥ ४५ ॥ हिवे
 वसन्तमाला ने तेडी निहां, पवनजी देखै मनमानक ।
 मांहरें अंजना राणी मारां गिरे, प्रत्यक्ष चिन्नामण
 ने समानक ॥ तं कग्जे जनन वणा तेहना, जिम
 दांत ने जीभ भेला रहे जेहक । जिम तं अंजना ने
 भेली ग्हे, किम दीजे वणी भोलावणी तेहक ॥ स०
 ॥ ४६ ॥ वसन्तमाला ने माणक मोती दिया.

पीजार् धन दियो रे विनोपक । तणी मन्तोपी है
 वचन सं, वसन्तमाला हई हरष विनोपक ॥
 प्रहस्त मन्त्री ने इम कहै, जतन तीज्यो कुंवरजी ना
 तेहक । कुगले खेमे देगा पभारज्यो स्ते बाट जोवां
 जाणे उमज्यो मेहक ॥ स० ॥ ४७ ॥ सीम देवे
 अजना चालनां, रण माते आवे प्रणा पुष्प दुष्टक ।
 सौ पुत्र आवे है वरुण ना तेहने आगल रखे
 फेरवो पृष्ठक ॥ दुरजन कटक है वरुण नो लोहना
 घाण जाणे मुके अङ्गारक । निहा क्षत्री तणी रीन
 राखज्यो मरण भली पिण नही भली हारक ॥
 स० ॥ ४८ ॥ हिवे पोल धकी रे पाछी बली, नैणा
 मे दूटी है जल तणी धारक । मैं कटुक बचन कछो
 कंध ने, मुंह दाकी ने रोवै निण वारक ॥ वसन्त-
 माला आय भीरज देवे, हिवे आयो छै सामायिक
 कालक । देव गुरु धर्म हिये धरो, ब्रत पञ्चक्खाण
 धे लेवो संभालक ॥ स० ॥ ४९ ॥ हिवे अंजना
 सती निण अवसरे, रुही रीन पाले ब्रत रसालक ।
 कर्म धर्म संभालनी, सुखे गमावे छै इण विष

कालक ॥ ध्यान धरे देवगुरु नणो मंसार नी जाणें
 छै काचीजी मायक । बोल सज्जाय गुणे थोकड
 इण परे अंजना ना दिन जायक ॥ स० ॥ ४० ॥
 हिवे उदर आधान जाणी करि, अंजना मन मां
 तरप अपारक । धन खरचे करे धुपटा, लोकीक
 दान देवें शुभकारक ॥ भावना भावे उलट मने.
 पात्र सुपात्र देवे मुक्ति ने लेहक । उदरक मन मां
 अनि वणो, दान देती न गिणे खेत कुखेनक ॥
 स० ॥ ४१ ॥ हिवे गणी राजा भणी विनवे.
 मांभलो विनती मांझी आपक । अंजना करे धन
 उडावणां, इण मं धुरलगे पवन न कीधो मिला-
 पक ॥ तोटी मन मांहे मान राखे वणो, कटक
 जानां पाडी गहनी मामक । आप कहो तो ह एहने.
 वरजवा काजे जाऊं निण ठामक ॥ स० ॥ ४२ ॥
 गजा पिण डीची छै आगन्या, हिवे केतुमती चाली
 मोटे मण्डाणक । साथे मटेनियां लीधी वणी. मन
 मांहे मान बहू आणक ॥ आगे वयाउडा मेलिया.
 अंजना नृपणें तरपित थायक । भाव भगति करी

वचन काने सुण्या. केतुमती राणी बोले छै तेहक ।
 पृथ्व लग तोने परहरी, मुक्त पुत्र ने तुक्त किमो
 मनेहक ॥ आज लगे अलगावणी, तूं आभरण
 चौरी ने निरमल थायक । विणध्यो रे दूध कांजी
 थकी, द्विवे मामग मूं परि पीहर जायक ॥ स०
 ॥ ५७ ॥ सासुग वचन काने सुण्या, अंजना रे
 मन उपनो दाहक । पुत्र तुमारो पाछो बले, निहां
 लगे मुक्तने राखो घर मांहिक ॥ सासरा में सासुजी
 तुम नणो कहो तो पेंठ ग्वाह ने काहूं दिन रातक ।
 चरण कमल मूं गिर रही, हूं कलङ्क लेई किम पीहर
 जायक ॥ स० ॥ ५८ ॥ केतुमती राणी क्रोधे चढ़ी,
 पग रुगी क्रोध मूं डेलियो शीशक । अन्न मोड़ी ने
 उभी थई थड हड धृजी ने अति बणी रीमक ॥
 अलगी रहें मुक्त आंख थी, जिहां लगे म्हाग नगर
 नी सीमक । निहां लगे अंजना दृहां रहे, जिहां लगे
 मुक्त ने अन्न पाणी नणो नेमक ॥ स० ॥ ५९ ॥
 यमन्तमाना ने तेही करी, बन्धन बांधने टेरी छै
 तेहक । ते चोगा आभरण म्हाग पुत्र ना, चोग

देगात् के होडस देतक ॥ तेरे गरी रे टेंगी गरी,
 बाजे है नाहणा रोवती तेहक । वसन्तमाला रम
 सुग्न भणे, चोर तो पवनजी सति तेहक ॥ स० ॥
 ६० ॥ हिवे कालो रे रथ अणाविगो, कालाई तुरंग
 जोतरा है डोयक । काला ही वस पहराविया,
 काली हो भूरसी ठीधी है तेहक ॥ काली हो
 मस्तक रागही अंजना ने वसन्तमाला बैसाणो
 ताहक । अंजना चाली पीहर भणी, दुःख घणो धरती
 मन मांयक ॥ स० ॥ ६१ ॥ हिवे चालियो रथ
 उतावलो, आयो है बाप तणी भूम तेहक । दूर थी
 मेहल देखिया, सारथी रथ पाछो बाल्यो तेहक ॥
 जुहार करी अंजना भणी, सारथी चित्त मांहे
 चिन्तवे आमक । दुष्ट अकारज मैं कियो, मैं बन
 मांहे अंजना मेली इण ठामक ॥ स० ॥ ६२ ॥ हिवे
 सांझ पड़ी दिन आंधम्यो, रयण बिहाणी घोर
 अन्धकारक । हाथो हाथ सूझे नहीं, इण बेला मुझ
 ने कुण आधारक ॥ नाम जप जगदीश नों, इण
 विध काहे दुःख भारी रातक । शुद्ध सामायिक

परहण अङ्क ॥ अहनाण दीसे छै वाग्का नयन
 भरे जाणे मोन्यां ना वृन्दक । मुख कमलाणो छै
 बुगे, जाणै गद्दु ने अन्तरे दव गयो चन्दक ॥ सः
 ॥ ७० ॥ हम देवी माना धरणी हली सचेत छै
 रोवे बांगां जी पाइक । हं क्यों नहीं रही रे बांझणी,
 हण कलङ्क आण्यो म्हाग कुल मभारक ॥ हं मगा
 मम्बन्धी में किम फिमं, लेई कटारी ने वेदमं मांही
 कुम्बक । जिन कुखे अंजना उपनी, दीधो छै दुःख
 में दुःख विशेषक ॥ स० ॥ ७१ ॥ गणी ने रोवनी
 देवने, दाम्यां मिल आई अंजना ने पामक । आठ
 विहुणी उभी किमे, माय छोड़ी चाई तुम नणी
 आठक ॥ मामु ने मुमग लजाविया, लजावियो
 पीहर मांय मोमानक । तं वंश विगोवण उपनी,
 त्रिवे पापणी तं मंढो मति देवानक ॥ स० ॥ ७२ ॥
 यमन्तमान्ना बलनी कहे, एहवी अचुंकी थे बोले
 छे वायक । पवन कुंवर वरे आवसी, प्रह कीजे
 निरणो मन मांयक ॥ आ मनी तो मंजम ले मही,
 गले छै गर्भ नणो ए फाठक । ए कलंक आया

काया नती भरे पवनजी आयवारी राखे है आगक
 ॥ स० ॥ ७३ ॥ इम कती दोन पाणी निकली,
 भार् भोजायां तणे घर जायक । बन्धव मांहे बैसी
 रया अंजना आंगणे उभी है आयक ॥ आय
 भोजायां मिली तिहां, मन बिना तिणा आपी है
 बाहक । आंगुली लेई हांतां भरी, आयवा न दीधी
 तिण ने घर मांयक ॥ स० ॥ ७४ ॥ इम अंजना
 घर घर छिण्डी घणी, किणहि न दीधी आयवा घर
 मांहेक । दीन बन्नन मुन बोलती, नयण भरे मुख
 रोवती तेहक ॥ भूग्न नृषा करी आकुली, अन्न
 पाणी आपे कुण नामक । उभी है दीन दयामणी,
 नांखे निसासा उभी तिण ठामक ॥ स० ॥ ७५ ॥
 हिवे मिलने भोजायां ते इम कहें, बाई धे आपरो
 आपो संभालक । धरसूं जी डाला क्यं नी हुवा,
 एह कखो जिसो कर्म चण्डालक ॥ अमे तो
 अबला स्यूं करा, आंगणे उभा रहो न लिगारक ।
 हम घर आया राय जाणसी, तुम तणा वीर ने
 काढसी बारक ॥ स० ॥ ७६ ॥ बंधवा किण ही

न पृच्छियो. स्वजन किण द्वी न पृच्छी रे नागक ।
 जिण द्वीष्टी छे अञ्जना सती, तिहां प्रोद्धिन प्रथार
 मृदिया द्वारक ॥ लोकांगी आमंग किन हुवे.
 अञ्जना ने नेही राखे घर मांगक । आदर भाव
 किनाई नही. एववा कर्म उडय हुआ आयक ॥
 म० ॥ ७७ ॥ अञ्जना ने देवे आवती लोक
 आडा जड देवे किंवाडक । घरमें कोई आवन
 देवे नहीं. वचन बोले लोक विविध प्रकारक ॥
 अञ्जना दुख वेदे वणो, जागे बढी छे खड्ग नी
 धारक । दुःख मांहे दुःख माले वणो, अमरुत घरे
 मन मांदि अवारक ॥ ७८ ॥ द्विजे अञ्जना नृपा रे
 रत्नबले, जल लेई आयो ब्राह्मण नीरक । गण
 कुंवरी पाणी पियो, शीतल उत्तम निरमल नीरक ॥
 चलती अञ्जणा कहे नेहने, नगर मांहे तो नहीं
 पीउं पाणक । पोल बाहिर जल पीवमं. उहां तो
 छे मांदरा वाप नी आणक ॥ म० ॥ ७९ ॥ नगर
 बाहिर जल वावरे, अञ्जना वमन्नमाना ने कहे छे
 आमक । गहन वन मोटी उजाड़ में. जंचा तो